

लघु सिद्धचक्र विधान

- कृति - लघु सिद्धचक्र विधान
- कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
- संस्करण - प्रथम-2020 • प्रतियाँ : 1000
- संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
- सहयोग - आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती
क्षुल्लक 105 श्री विसोमसागरजी, क्षुल्लका 105 श्री वात्सल्य भारती
- संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था दीदी,
(वाट्सअप नं. 9910739220) सपना दीदी, आरती दीदी
- सम्पर्क सूत्र - 9829127533, 8700876822
- प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जी सेरी,
पी-958, गली नं. 3, शांति नगर, जयपुर मो. 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र
C/O श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान • मो.: 09416882301
3. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
4. जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली
मो. 9818115971
- मूल्य - 51/- रु. मात्र
अर्थ सौजन्य

.....

रचयिता

प.पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

यंत्र स्थापना

यंत्र पूजन

दोहा- भेद ज्ञान को प्राप्त कर, किए आत्म का ध्यान ।

हुए सिद्ध परमात्मा, करते हम आह्वान ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्र यन्त्र सम्बन्धी परम देवाय सिद्धचक्राधिपते ! अत्र अवतर-
अवतर संगौष्ठ आह्वाननं । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम
सन्निहितौभव भव-भव वषठ सन्निधिकरणं ।

दोहा

कलश भराया नीर से, देते हम त्रय धार ।

दिग् वर्णादिक् पूजते, शांती के आधार ॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण्डं सिद्धचक्र यंत्र सम्बन्धी परम देवाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन से अर्चा करें, मिट जाए भव रोग ।

दिग् वर्णादिक् पूजते, शांती के आधार ॥2॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्र यन्त्र सम्बन्धी परमदेवाय सिद्धचक्राधिपते नमः संसारताप विनाशाय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षय अक्षत हम यहाँ, लाए, खुशबूदार ।

दिग् वर्णादिक् पूजते, शांती के आधार ॥3॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्र यन्त्र सम्बन्धी परमदेवाय सिद्धचक्राधिपते नमः अक्षयपद प्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित लाए पुष्प यह, काम रोग हो नाश ।

दिग् वर्णादिक् पूजते, शांती के आधार ॥4॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्र यन्त्र सम्बन्धी परमदेवाय सिद्धचक्राधिपते नमः कामबाण विध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

चढ़ा रहे नैवेद्य यह, क्षुधा रोग नश जाय ।

दिग् वर्णादिक् पूजते, शांती के आधार ॥5॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्र यन्त्र सम्बन्धी परमदेवाय सिद्धचक्राधिपते नमः संसारताप विनाशाय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप जलाते हम यहाँ, होय मोह का नाश ।
दिग् वर्णादिक् पूजते, शांती के आधार ॥6॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्र यन्त्र सम्बन्धी परमदेवाय सिद्धचक्राधिपते नमः
मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

खेते हैं हम अनि में, सुरभित यह शुभ धूप ।
दिग् वर्णादिक् पूजते, शांती के आधार ॥7॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्र यन्त्र सम्बन्धी परमदेवाय सिद्धचक्राधिपते नमः अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल से पूजा हम करें, पाने शिवपुर वास ।
दिग् वर्णादिक् पूजते, शांती के आधार ॥8॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्र यन्त्र सम्बन्धी परमदेवाय सिद्धचक्राधिपते नमः मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टद्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे भगवान ।
दिग् वर्णादिक् पूजते, शांती के आधार ॥9॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्र यन्त्र सम्बन्धी परमदेवाय सिद्धचक्राधिपते नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्यावली

दोहा- सर्व दिशा विदिशा गत, श्री जिन का गुणगान ।
भाव रहित करते यहाँ, पुष्पाञ्जलि कर आन ॥
अथ यन्त्रोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

(दोहा)

हस्त दीर्घ स्वर ले, सन्ध्यक्षर अनुसार ।
तथा विसर्जनाय का करें, पूर्व दिशा आभार ॥1॥

ॐ ह्रीं अ आ इ ई ऊ ऋ लृ लृ ए ऐ ओ औं अं अः अनाहत पराक्रमाय
सिद्धाधिपतये पूर्व दिशि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

व्यंजन पाँच 'क' वर्ग के, आग्नेय में जान ।
पूजे ध्याएँ हम सदा, पाने सम्यक् ज्ञान ॥2॥

ॐ ह्रीं क ख ग घ ङ अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये आग्नेय दिशि अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

अक्षर सर्व 'च' वर्ग के, दक्षिण दिश की ओर ।
 पूजे ध्याएँ भाव से, होके भाव विभोर ॥३॥
 ॐ ह्रीं च छ ज झ ज अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये दक्षिण दिशि अर्घ्यं निर्वस्वाहा ।
 है 'ट' वर्ग के पाँच शुभ, अक्षर महिमावान ।
 पूजे नैऋत्य के कोण में, ध्यान से हो कल्याण ॥४॥
 ॐ ह्रीं ट ठ ड ढ ण अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये नैऋत्य दिशि अर्घ्यं निर्वस्वाहा ।
 अक्षर सर्व 'त' वर्ग के, पश्चिम दिश में सोय ।
 पूजे ध्याएँ भाव से, ज्ञान वृद्धिगंत होय ॥५॥
 ॐ ह्रीं त थ द ध न अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये पश्चिम दिशि अर्घ्यं निर्वस्वाहा ।
 अक्षर सर्व 'प' वर्ग की, दिशा वायव्य महान ।
 ध्याने से भविजीव का, हो जाए कल्याण ॥५॥
 ॐ ह्रीं प फ ब भ मं अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये वायव्य दिशि अर्घ्यं निर्वस्वाहा ।
 वर्णं य र ल व सभी, है अन्तस्थ विशेष ।
 उत्तर दिश ध्याएँ विशद, भाव सहित अवशेष ॥७॥
 ॐ ह्रीं य र ल व अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये उत्तर दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ऊष्माण श ष स ह रहे, अक्षर सर्वप्रधान ।
 पूजे ध्याएँ भाव से, जिनकी दिश ईशान ॥८॥
 ॐ ह्रीं श ष स ह अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये ईशान दिशि अर्घ्यं निर्वस्वाहा ।
 स्वर व्यंजन सब पूज्य है, वर्ण मातृ का रूप ।
 द्रव्य भाव श्रुत प्राप्त कर, धाएँ निज स्वरूप ॥९॥
 ॐ ह्रीं द्रव्यभाव रूप श्रुतज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- शब्द ब्रह्म को पूजकर करना निज उद्घार ।
 जयमाला गाते यहाँ, पाने भवोदधि पार ॥
 (चाल छन्द)
 स्वर अकारादि नौ गाए, अ इ उ ऋ कहलाए ।
 लृ ए ऐ ओ औ जानो, हस्त दीर्घ प्लुत पहिचानो ॥
 यह सत्ताइस हो जाते, सब स्वर संज्ञा को पाते ।

हैं पंच वर्ग के आदि, अन्तस्थ य र ल वादि ॥
 श ष स ह ऊष्मक गाये, चउ अयोगवाह कहलाए ।
 सब चौंसठ अक्षर मानो, जो जैनागम से जानो ॥
 इनके द्वि आदि संयोगी, कई भेद कहे जिन योगी ।
 एकट्ठी श्रुत हो जाते, सब द्वादशांग में आते ॥
 आतम परमात्म दोई, के ज्ञान में कारण होई ।
 श्रुत बोध जनावन हारे, ज्ञानी जन यह उच्चारे ॥
 आश्रय जो इनका पावें, वह सारे कार्य बनावें ।
 मन की सब कहते भाई, जाने पर की प्रभुताई ॥
 इनको जो मन से ध्यावें, वे जीव सुखी हो जावें ।
 ज्ञानी जन ज्ञान उपावें, मूरख भी ज्ञान बढ़ावें ॥
 बिन स्वर व्यंजन के कोई, व्यवहार चले न सोई ।
 इनका उपपाद न होई क्षरणा इनका न कोई ॥
 अक्षर इसलिए कहाए, जो काल अनादि गाए ।
 ज्यों सिद्ध अनादि गाए, त्यों वर्ण सिद्ध कहलाए ॥
 सिद्धों सम पूजे जाते, नवकार मंत्र में आते ।
 शिव कारण पैंतिस जानो, सोलह छह पंच बखानो ॥
 दो एक आदि कई गाये, सब मंत्र रूप बतलाए ।
 गणधर आदि सब गाते, जिनवाणी में भी आते ॥
 सब में तुमरी प्रभुताई, शिव मार्ग चलाते भाई ।

दोहा- शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाओ शिव का द्वार ।
 शब्दों से पूजा रची, जग में मंगलकार ॥
 आलम्बन नाना कहे, मुक्ति हेतु महान ।
 हो पदस्थ शुभ ध्यान से, मुक्ति पद की खान ॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वस्वाहा ।
 दोहा- शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाना है शिवधाम ।
 'विशद' भाव से हम यहाँ, करते विशद प्रणाम ॥
 इत्याशीर्वदः

सिद्धचक्र समुच्चय पूजा

स्थापना

शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, ज्ञायक अनुपम परम उदार ।
नित्य निरञ्जन अतिशय ज्ञानी, निर्विकार अनुपम अविकार ॥
अष्टकर्म का नाश किए प्रभु, प्रगट किये गुण आठ महान ।
ऐसे पर सिद्ध परमात्म, का हम करते हैं आह्वान ॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानं ।
अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(शम्भू छन्द)

जल तन की प्यास बुझाता है, चेतन की प्यास न बुझ पाए ।
है विशद ज्ञान की प्यास बुझे, वह ज्ञान प्रकट अब हो जाए ॥
है सिद्ध सनातन अविकारी, हम नित प्रति जिनका ध्यान करें ।
हम सिद्ध सुपद को पा जाएँ, अतः विशद गुणगान करें ॥1॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्री सम्मत, दंसण, वीर्य, सुहुमं,
अववग्नं अगुरु लघु अव्वाहं अष्टगुण संयुक्तेभ्यो नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
संसार ताप में जले सदा, घेरे रहती हैं चिन्ताएँ ।
अब पूज रहे हम बंध बना, उनसे अब हम मुक्ति पाएँ ॥
है सिद्ध सनातन अविकारी, हम नित प्रति जिनका ध्यान करें ।
हम सिद्ध सुपद को पा जाएँ, अतः विशद गुणगान करें ॥2॥
ॐ ह्रीं अष्टगुण श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः संसारताप विनाशाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
मन को भाती है उज्ज्वलता, पर कर्म किए हमने काले ।
जिन पूजा आत्म ध्यल करें, दूटे सब कर्मों के जाले ॥
है सिद्ध सनातन अविकारी, हम नित प्रति जिनका ध्यान करें ।
हम सिद्ध सुपद को पा जाएँ, अतः विशद गुणगान करें ॥3॥
ॐ ह्रीं अष्टगुण श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मदहोश करें पावन मन को, चेतन जाग्रत ना होती ।
पृष्ठों की गंध नाशिका को, सुख दे कर्मों को खोती ॥
है सिद्ध सनातन अविकारी, हम नित प्रति जिनका ध्यान करें ।
हम सिद्ध सुपद को पा जाएँ, अतः विशद गुणगान करें ॥4॥
ॐ ह्रीं अष्टगुण श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
खाने पीने की चाह सदा, जीवों के मन में रहती हैं ।
जिन पूजा करके तृप्ती हो, माँ जिनवाणी यह कहती है ॥
है सिद्ध सनातन अविकारी, हम नित प्रति जिनका ध्यान करें ।
हम सिद्ध सुपद को पा जाएँ, अतः विशद गुणगान करें ॥5॥
ॐ ह्रीं अष्टगुण श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः क्षधारोग विनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
उजयारे रवि शशि बिजली के, ये सब ही तम को हरते हैं ।
भवि दीप जला पूजा करके, चैतन्य प्रकाशित करते हैं ॥
है सिद्ध सनातन अविकारी, हम नित प्रति जिनका ध्यान करें ।
हम सिद्ध सुपद को पा जाएँ, अतः विशद गुणगान करें ॥6॥
ॐ ह्रीं अष्टगुण श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
जड़कर्म के हितकारी, कर्मों का जोर चलाते हैं ।
चेतन जाग्रत जब हो जाएँ तो, कर्मों से बच जाते हैं ॥
है सिद्ध सनातन अविकारी, हम नित प्रति जिनका ध्यान करें ।
हम सिद्ध सुपद को पा जाएँ, अतः विशद गुणगान करें ॥7॥
ॐ ह्रीं अष्टगुण श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
हम पूजा करते चाह लिए, निःस्वार्थ भक्ति ना होती है ।
हे मुक्ति पद की चाह विशद, जो सर्व दुखों को खोती है ॥
है सिद्ध सनातन अविकारी, हम नित प्रति जिनका ध्यान करें ।
हम सिद्ध सुपद को पा जाएँ, अतः विशद गुणगान करें ॥8॥
ॐ ह्रीं अष्टगुण श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

~~~~~

है अष्टकर्म सब दुखदायी, उनसे सम्बन्ध बनाये हैं ।  
 अब मुक्ति पाने को उनसे, यह अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं ॥  
 है सिद्ध सनातन अविकारी, हम नित प्रति जिनका ध्यान करें ।  
 हम सिद्ध सुपद को पा जाएँ, अतः विशद गुणगान करें ॥9॥  
 ॐ ह्रीं अष्टगुण श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

### जयमाला

दोहा- जिनकी महिमा है अगम, गरिमा का ना पार ।  
 जयमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार ॥

### भुजंग प्रयात

परम सिद्ध पूजें महा सौख्यकारी, विशद ज्ञानधारी हैं करम रिपु संहारी ।  
 परम साम्यधारी जजे सम प्रदाता, परम दर्शकारी है शिव पद प्रदाता ॥1॥  
 सुमति पद प्रदायी तव चरणों में चन्दन, परम सौख्यकारी भजें दुख निकंदन ।  
 परम वीर्यधारी है पावन जिनेश्वर ! परम पूज्य त्रैलोक्यपति है सुरेश्वर ॥2॥  
 सुगुण अव्यावाधी हुए आप स्वामी, अगुरु लघु गुणी आप हो मोक्षगामी ।  
 हे सूक्ष्मत्व गुणमय गुणान्तधारी, नमूँ धर्मधर हे धरमपथा प्रचारी ॥3॥  
 परम शान्तिधर हे जिनशांति प्रदायी, हे अवग्रह गुणधर अहा शान्तिदायी ।  
 गुणीशील धर हे परम ब्रह्मचारी !, जगजीव को आप हो शांतिकारी ॥4॥  
 अनाथों के हे देव ! सुनाथं, तुम्हें पूजते जीव कर जोड़ हाथं ।  
 रहो आप आदर्श तुम्हें नित्य ध्याएँ, चलें राह पर आपकी मोक्ष पाएँ ॥5॥

### (धत्ता छन्द)

जय जय अविकारी, शिवभर्तरी, परम पूज्य जिन सिद्ध भला ।  
 हम पूजें ध्याएँ तव गुण गाएँ, पाएँ केवल ज्ञान कला ॥  
 ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 दोहा- कुमति विनाशक हे प्रभो ! पाए शिव सुख कंद ।  
 भ्रमर बने गुण पुष्प की, पाएँ हम मकरंद ॥

// इत्याशीर्वदि //

### अथ प्रथम पूजा

#### स्थापना

काल अनादि भ्रमण किया जग, निज संसार बढ़ाया है ।  
 संज्ञाओं में ग्रसित हुए हम, निज को जानना पाया है ॥  
 संज्ञाओं से निवृत्त होकर, आठों कर्म नशाएँ हैं ।  
 सिद्ध अनन्तानंत हुए हैं, आह्वानन को आए हैं ॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिनः अत्र अवतर-अवतर संवैषट आह्वाननं । अत्र तिष्ठ-  
 तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

### ॥ चौबीसी पूजन की तर्ज ॥

प्रासूक करके शुभ नीर, चरण चढ़ाते हैं ।  
 शिव पद पाएँ भगवान, महिमा गाते हैं ॥  
 है सिद्ध शुद्ध अविकार पावन अविनाशो ।  
 हम पूज रहे जिन पाद, होने शिव वासी ॥1॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 चन्दन के शर में गार, चढ़ा रहे स्वामी ।  
 अर्चा करके हे नाथ, होवे शिवगामी ॥  
 है सिद्ध शुद्ध अविकार, पावन अविनाशी ।  
 हम पूज रहे जिन पाद, होने शिव वासी ॥2॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 अक्षत के लेकर थाल, पूजा करना है ।  
 चौरासी का यह चक्र, हमको हरना है ॥  
 है सिद्ध शुद्ध अविकार, पावन अविनाशी ।  
 हम पूज रहे जिन पाद, होने शिव वासी ॥3॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।  
 अर्चा को लाए फूल, शिव पदवी पाने ।  
 अब पाएँ भव का कूल, जिससे अन्जाने ॥

है सिद्ध शुद्ध अविकार, पावन अविनाशी ।  
 हम पूज रहे जिन पाद, होने शिव वासी ॥4॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः कामबाणविधवंसनाय पूष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 हम चढ़ा रहे नैवेद्य, क्षुधा भव की हरने ।  
 यह लाए भर के थाल, जिन पूजा करने ॥  
 है सिद्ध शुद्ध अविकार, पावन अविनाशी ।  
 हम पूज रहे जिन पाद, होने शिव वासी ॥5॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 हो मोह तिमिर का नाश, दीप जलाते हैं ।  
 हो जाए ज्ञान का प्रकाश, पद शिर नाते हैं ॥  
 है सिद्ध शुद्ध अविकार, पावन अविनाशी ।  
 हम पूज रहे जिन पाद, होने शिव वासी ॥6॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः महामोधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 हम जला रहे हैं धूप, कर्मों की नाशी ।  
 पा जाए निज स्वरूप, हो शिवपुर वासी ॥  
 है सिद्ध शुद्ध अविकार, पावन अविनाशी ।  
 हम पूज रहे जिन पाद, होने शिव वासी ॥7॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अष्टकमदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 फल चढ़ा रहे भगवान, मुक्ति फल पाएँ ।  
 पाकर के शिव साम्राज्य, शिवपुर को जाएँ ॥  
 है सिद्ध शुद्ध अविकार, पावन अविनाशी ।  
 हम पूज रहे जिन पाद, होने शिव वासी ॥8॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 हम विशद भाव के साथ, अर्द्धं चढ़ाते हैं ।  
 यह अर्द्धं चढ़ाके आज, प्रभु को ध्याते हैं ॥  
 है सिद्ध शुद्ध अविकार, पावन अविनाशी ।  
 हम पूज रहे जिन पाद, होने शिव वासी ॥9॥  
 ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अनर्द्धपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

**प्रथम वलय**  
 दोहा- संज्ञाओं के जोर से, भ्रमण किया संसार ।  
 पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने भवदधि पार ॥  
(अथ मण्डलस्योपरि प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)  
(टप्पाचाल)  
 संज्ञा है आहार अनादि, जीवों के भाई ।  
 संयम धर के सिद्ध हुए जिन, तव मुक्ति पाई ॥  
 पूजते सिद्ध सुपद भाई ।  
 तीन लोक में सिद्ध प्रभु की, फैली प्रभुताई ॥  
 पूजते सिद्ध सुपद भाई ॥1॥  
 ॐ ह्रीं आहार संज्ञा रहित श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 भय संज्ञाभय की उत्पादक, इस जग में गाई ।  
 भय को कर भयभीत प्रभु जी, सिद्ध दिशा पाई ॥  
 पूजते सिद्ध सुपद भाई ।  
 तीन लोक में सिद्ध प्रभु की, फैली प्रभुताई ॥  
 पूजते सिद्ध सुपद भाई ॥2॥  
 ॐ ह्रीं भय संज्ञा रहित श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 मैथुन संज्ञा जगजीवों को, है अति दुखदायी ।  
 सुमति कुमति कर देय जीव की, मोहक है भाई ॥  
 पूजते सिद्ध सुपद भाई ।  
 तीन लोक में सिद्ध प्रभु की, फैली प्रभुताई ॥  
 पूजते सिद्ध सुपद भाई ॥3॥  
 ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा रहित श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 नवग्रह से भी परिग्रह संज्ञा, है दुखकर भाई ।  
 अपरिगृही होकर के प्रभु ने, मुक्तिश्री पाई ॥  
 पूजते सिद्ध सुपद भाई ।

तीन लोक में सिद्ध प्रभु की, फैली प्रभुताई ॥  
पूजते सिद्ध सुपद भाई ॥4॥

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा रहित श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
मैथुन भय आहार परिग्रह, चारों यह भाई ।  
चतुर्गती में भ्रमण कराने, में कारण गाई ॥  
पूजते सिद्ध सुपद भाई ।

तीन लोक में सिद्ध प्रभु की, फैली प्रभुताई ॥  
पूजते सिद्ध सुपद भाई ॥5॥

ॐ ह्रीं चतुः संज्ञा रहित श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्थ निर्वपामीति स्वाहा ।  
जाप्य- ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ।

### जयमाला

दोहा- महिमामयी महान है, सिद्ध शिला के सिद्ध ।  
जयमाला गाते परम, पाने सुपद प्रसिद्ध ॥  
(वीर छन्द)

हे सिद्ध प्रभु जिन अविकारी, महिमा भू मण्डल पर छाई ।  
सर्वज्ञ हिंतकर वीतराग, पर परिणत किंचित न भाई ॥  
तुम हो उपकारी अखिल विश्व, क्या महिमा हम गा पाएँगे ।  
भक्तिवश गुणमाला वर्णन, श्रद्धा के सुमन चढ़ायेंगे ॥1॥  
दीनों के नाथ कहाते तुम, भटकों को राह दिखाते हो ।  
तव चरण शरण जो आ जाए, उसको सुख शांति दिलाते हो ॥  
हे सिद्ध शिला के ईश प्रभो ! सिद्धेश्वर पावन कहलाए ।  
आठों कर्मों को नाश पूर्ण, सिद्धालय में शिवसुख पाए ॥2॥  
पाकर के भेद ज्ञान तुमने, पावन श्रद्धान जगाया है ।  
जो भेद ज्ञान का हेतु विशद, वह सम्यक ज्ञान जगाया है ॥  
पहिचान हिताहित भावों को, तुमने शुभ भाव बनाया है ।  
तज अशुभ भाव की गंध पूर्ण, निज का स्वभाव प्रगटाया है ॥3॥

फिर सम्यक् चारित को पाकर, सद मोक्ष मार्ग अपनाया है ।  
उत्तम तप को धारण करके, कर्मों का भार भगाया है ॥  
प्रभु केवल ज्ञान प्रकट करके, अर्हत् पदवी को पाया है ।  
छियालीस मूल गुण के धारी, हो मोक्ष मार्ग अपनाया है ॥4॥  
प्रभु अर्चा में अतिशयभारी, सब आधि व्याधि नश जाते हैं ।  
श्रद्धा भक्ति से जो ध्याते, मनवांछित फल वे पाते हैं ॥  
हे स्वामिन् तुम अन्तर्यामी, मेरी भी व्यथा विनाश जावे ।  
भव भोगों की प्रभु चाह नहीं, निज परिणति रूप सहज आवे ॥5॥

दोहा- भोजन भय मैथुन तथा, रहे परिग्रह वान ।  
संज्ञाए यह नाश कर, पाए पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं चतुः संज्ञा रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्थ निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- नाथ आप हो लोक में, अतिशय महिमावान ।  
अर्ज पेश करते चरण करो प्रभु ! कल्याण ॥  
// इत्याशीर्वद ॥

### अथ द्वितीय पूजा

#### स्थापना

द्रव्य कर्म के आठ भेद हैं, आठ अंगमय रहा शरीर ।  
आठों अंगों में बंधन, देते हैं इस जग को पीर ॥  
रत्नत्रय को धारण करके, करते आठों कर्म विनाश ।  
सिद्धों का आह्वानन करते, सिद्ध शिला पर जिसका वास ॥  
ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं ।  
अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।  
(चाल छन्द)

निर्मल गंगा जल लाए, त्रय रोग नशाने आए ।  
हम जिन सिद्धों को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥1॥  
ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा ।

चन्दन हम यहाँ चढ़ाए, भव ताप नशाने आए ।  
 हम जिन सिद्धों को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥२॥  
 ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा ।  
 अक्षय अक्षत ये लाए, अक्षय पद पाने आए ।  
 हम जिन सिद्धों को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥३॥  
 ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा ।  
 ये पुष्प मनोहर लाए, मम् काम रोग नश जाए ।  
 हम जिन सिद्धों को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥४॥  
 ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा ।  
 नैवेद्य सरस ये लाए, हम क्षुधा नशाने आए ।  
 हम जिन सिद्धों को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥५॥  
 ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः क्षुधारोग विनाशनाय निर्व.स्वाहा ।  
 यह जगमग दीप जलाए, मम मोहनाश हो जाए ।  
 हम जिन सिद्धों को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥६॥  
 ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा ।  
 यह धूप जलाने लाए, मम कर्म नाश हो जाए ।  
 हम जिन सिद्धों को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥७॥  
 ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिनः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.स्वाहा ।  
 फल पूजा के यह लाए, मुक्ति फल पाने आए ।  
 हम जिन सिद्धों को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥८॥  
 ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व.स्वाहा ।  
 यह अर्घ्य बनाकर लाए, शिव पदवी पाने लाए ।  
 हम जिन सिद्धों को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥९॥  
 ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

### (अष्टकर्म रहित सिद्ध परमेष्ठी के अर्घ्य)

ज्ञानावरणी कर्म ज्ञान को, आवर्णित कर हरता ज्ञान ।  
 अज्ञानी हो जीव लोक में, भ्रमण करें होके अज्ञान ॥

किए कर्म का नाश प्रभु भी, सिद्ध सदन पाए भगवान ।  
 जिनकी अर्चा करते हैं हम, पाने पावन शिव सोपान ॥१॥  
 ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 कर्म दर्शनावरणी दर्शन, गुण आवर्णित करें विशेष ।  
 जिस के कारण भ्रमण जीव कर, चतुर्गती भटके अवशेष ॥  
 किए कर्म का नाश प्रभु जी, सिद्ध सदन पाए भगवान ।  
 जिनकी अर्चना करते हैं हम, पाने पावन शिव सोपान ॥२॥  
 ॐ ह्रीं दर्शनावली कर्मरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 वेदनीय सुख दुख वेदन, में कारण माया हे भ्रात ।  
 राग-द्वेष जिसके कारण हो, गुण चेतन के होवें घात ॥  
 किए कर्म का नाश प्रभु भी, सिद्ध सदन पाए भगवान ।  
 जिनकी अर्चा करते हैं हम, पाने पावन शिव सोपान ॥३॥  
 ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 मोहकर्म मोहित करता है, जग जीवों को बारम्बार ।  
 भूल हिताहित निज को चेतन, भ्रमण करें सारा संसार ॥  
 किए कर्म का नाश प्रभु भी, सिद्ध सदन पाए भगवान ।  
 जिनकी अर्चा करते हैं हम, पाने पावन शिव सोपान ॥४॥  
 ॐ ह्रीं मोहनीय कर्मरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 आयु कर्म चारों गति में ले, जाके रोके हो लाचार ।  
 जीव कष्ट में रहें निरन्तर, ढोये जो कर्मों का भार ॥  
 किए कर्म का नाश प्रभु भी, सिद्ध सदन पाए भगवान ।  
 जिनकी अर्चा करते हैं हम, पाने पावन शिव सोपान ॥५॥  
 ॐ ह्रीं आयु कर्मरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 नाम कर्म रचना करता है, करें देह का जो निर्माण ।  
 पुण्य पाप के फल से पाए, जीव शुभाशुभ महिमावान ॥

किए कर्म का नाश प्रभु भी, सिद्ध सदन पाए भगवान् ।  
 जिनकी अर्चा करते हैं हम, पाने पावन शिव सोपान ॥6॥  
 ॐ ह्रीं नाम कर्मरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 गोत्र कर्म जीवों को जग में, उच्च नीच पद करे प्रदान ।  
 यश अपयश सम्मान हीनता, जिससे पाए प्राणी मान ॥  
 किए कर्म का नाश प्रभु भी, सिद्ध सदन पाए भगवान् ।  
 जिनकी अर्चा करते हैं हम, पाने पावन शिव सोपान ॥7॥  
 ॐ ह्रीं गोत्र कर्मरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 अन्तराय है कर्म निराला, विघ्न करें जो बारम्बार ।  
 करें शुभाशुभ कार्य जीव को, सतत् सताए अपरम्पार ॥  
 किए कर्म का नाश प्रभु भी, सिद्ध सदन पाए भगवान् ।  
 जिनकी अर्चा करते हैं हम, पाने पावन शिव सोपान ॥8॥  
 ॐ ह्रीं अन्तराय कर्मरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 ज्ञानावरण आदि कर्मों ने, सदा बढ़ाया है संसार ।  
 नाश करें मानव रत्नत्रय, धारी होकर के अनगार ॥  
 किए कर्म का नाश प्रभु भी, सिद्ध सदन पाए भगवान् ।  
 जिनकी अर्चा करते हैं हम, पाने पावन शिव सोपान ॥5॥  
 ॐ ह्रीं ज्ञानावरणादिक अष्टकर्मरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्थ्य निर्व.स्वाहा ।  
**जाप्य-** ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ।

### जयमाला

**दोहा-** कर्म नशाए आपने, पाया ज्ञान शरीर ।  
 निरावरण विज्ञानमय, हुए आप अशरीर ॥  
 (तर्ज- अहो जगत गुरुदेव...)  
 सिद्ध अनन्तानन्त तिहुं जग मंगलकारी ।  
 रहित कर्म जिनराज देव परम उपकारी ॥टेक॥

पूर्व भवों में आप रत्नत्रय निधि पाई ।  
 धर्म तीर्थ करतार प्रकृति पुण्य बंधाई ॥  
 यह जग राज समाज, माने तुम दुखकारी ।  
 हो विरक्त शिव हेतु, मुनिवर दीक्षा धारी ॥1॥  
 कर्म किए चकचूर, निज बल से हे स्वामी ।  
 तीनों लोक त्रिकाल, जितेन्द्रिय हो के नामी ॥  
 क्षायक श्रेणि चढ़ आप, परमात्म पद पाए ।  
 कर्म धातिया नाश, केवल ज्ञान जगाए ॥12॥  
 झल के लोकालोक, युगपत तुमको स्वामी ।  
 दिए दिव्य उपदेश, जग को अन्तर्यामी ॥  
 नशे अठारह दोष, गुण निज प्रगटाए ।  
 आयुध अम्बर नाहि, सौम्य दशा शुभ पाए ॥13॥  
 पर लक्षी सब भाव, दुखके कारण गाए ।  
 रत्नत्रय सुख रूप, जगत में यह बतलाए ।  
 जगत विभव निस्सार, हमको अब प्रभु लागे ।  
 मिटा मोह दुखकार, तुम चरणों के आगे ॥14॥  
 तुम हो दीन दयाल, हे प्रभु करुणा धारी ।  
 लोकालोक त्रिकाल, ज्ञायक को अविकारी ।  
 हम आये तव द्वार, भक्ति के भाव जगाए ।  
 तव पद पाए नाथ, आए आश लगाए ॥15॥

**दोहा-** दर्शन ज्ञान स्वभाव मय, सुख अनन्त के कोष ।  
 अर्चा करके आपकी, हो जीवन निर्दोष ॥  
 ॐ ह्रीं ज्ञानावरणादिक अष्टकर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

**दोहा-** नेता मुक्ति मार्ग के, जग के तारण हार ।  
 कर्म कलंक विनाशिए, त्रिभुवन पति ज्ञातार ॥  
 // इत्याशीर्वदि //

## तृतीय पूजा

### स्थापना

जग के जीवों ने प्रमाद वश, खोया है अपना सद्ज्ञान ।  
 अज्ञानी हो कर्म बन्ध के, किए कार्य निज का भान ॥  
 तज प्रमाद संयम धारण कर, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 आह्वानन् करते हम उर में, जिन का सिद्ध शिला पर वास ॥  
 ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् ।  
 अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(रेखता छन्द)

नीर यह क्षीर सालाए, रोग त्रय नाश को आए ।  
 तव चरण पूजते स्वामी, हे जिनवर अन्तर्यामी ॥1॥  
 ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा ।  
 चढ़ाने गंध यह लाए, भवातप पूर्ण नश जाए ।  
 तव चरण पूजते स्वामी, हे जिनवर अन्तर्यामी ॥2॥  
 ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा ।  
 श्रेष्ठ अक्षत धुवा लाए, चरण की भक्ति को आए ।  
 तव चरण पूजते स्वामी, हे जिनवर अन्तर्यामी ॥3॥  
 ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा ।  
 पुष्प पूजा को यह लाए, काम रुज पूर्ण नश जाए ।  
 तव चरण पूजते स्वामी, हे जिनवर अन्तर्यामी ॥4॥  
 ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः कामबाण विघ्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा ।  
 सुचरु ताजे बना लाए, क्षुधा रुज नाश को आए ।  
 तव चरण पूजते स्वामी, हे जिनवर अन्तर्यामी ॥5॥  
 ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा ।  
 रलमय दीप प्रजलाए, मोह तम नाश हो जाए ।  
 तव चरण पूजते स्वामी, हे जिनवर अन्तर्यामी ॥6॥  
 ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः मोहन्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा ।

दशांगी धूप यह लाए, मुक्ति कर्मों से मिल जाए ।

तव चरण पूजते स्वामी, हे जिनवर अन्तर्यामी ॥7॥

ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.स्वाहा ।

चढ़ाने श्री फल लाए, मोक्ष हमको भी मिल जाए ।

तव चरण पूजते स्वामी, हे जिनवर अन्तर्यामी ॥8॥

ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व.स्वाहा ।

चढ़ाने अर्द्ध यह लाए, अनर्द्ध पद प्राप्त हो जाए ।

तव चरण पूजते स्वामी, हे जिनवर अन्तर्यामी ॥9॥

ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्द्धपदप्राप्तये अर्द्धं निर्व.स्वाहा ।

## तृतीय वलय

दोहा- करके जीव प्रमाद, कर्म बन्ध करता सदा ।

रखे हमेशा याद, कैसे बचें प्रमाद से ॥

(अथ तृतीय वलयोस्परि पुष्पांजलि शिपेत्)

(गीता छंद)

क्रोध उदय में आने से हो, प्राणी जग में अंध समान ।

सोच समझ ना पाए कुछ भी, रहे हिताहित का ना ज्ञान ॥

धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।

यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥1॥

ॐ ह्रीं क्रोध रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

मानी होकर मान से प्राणी, करता और पर अधिकार ।

नीचा माने सदा और को, गर्व स्वयं पर करे अपार ॥

धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।

यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥2॥

ॐ ह्रीं मान प्रमाद रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

मायाचारी से छल छद्म, करके कार्य करे निज सिद्ध ।

वे संसार भ्रमण में कारण, कर्मों से होते अविरुद्ध ॥

धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥३॥  
 ॐ ह्रीं मायाचारी प्रमाद रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 लोभित होकर लोभ से लोभी, धन धान्यादिक संग्रहवान ।  
 जीवन से भी अधिक प्रिय धन, मान के संग्रह करे प्रधान ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥४॥  
 ॐ ह्रीं लोभ रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 भोजन में रुचिवान कथाएँ, भोजन की करते दिन रात ।  
 क्या खाया क्या खाना आगे, करे सदा खाने की बात ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥५॥  
 ॐ ह्रीं कथा प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 चोर कथा करके जीवन का, समय गंवाते जग के जीव ।  
 करे स्वयं का घात जीव वे, कर्म बन्ध भी करें अतीव ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥६॥  
 ॐ ह्रीं चोर प्रमाद कथारहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 राज समाज देश दुनिया की, चर्चा में होके तल्लीन ।  
 धर्म कर्म को भूल स्वयं ही, कर्म बन्ध में हो रहे प्रवीण ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥७॥  
 ॐ ह्रीं राज कथारहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 स्त्री की चर्चा चर्या में, होते प्राणी आनन्दकार ।  
 व्यर्थ कर्म का बन्ध करे जो, सदा बढ़ाए निज संसार ॥

धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥८॥  
 ॐ ह्रीं स्त्री प्रमाद कथारहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 स्पर्शन इन्द्रिय का रागी, सदा विषय की रखता चाह ।  
 उसको पाने की रखता है, सदा देखता रहता राह ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥९॥  
 ॐ ह्रीं स्पर्शेन्द्रिय रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 रसना के रस लोभ से लोभित हो, चाह बढ़ाए अपरम्पार ।  
 विषय भावना से होते हैं, पाने को प्राणी लाचार ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥१०॥  
 ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 के न्द्रिय के विषयाग्राही, रहते हैं उसमें ही लीन ।  
 होते हैं आशक्त विषय में, जिसके कारण होते दीन ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥११॥  
 ॐ ह्रीं ग्राणेन्द्रिय रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 चक्षु इन्द्रिय के विषयाग्राही, विषय चाहते बारम्बार ।  
 उसमें रत हो विषय चाह कर, कष्ट भोगते अपरम्पार ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥१२॥  
 ॐ ह्रीं चक्षुइन्द्रिय रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।  
 कर्णेन्द्रिय की रही लालसा, सुनने मनहर शब्द विशेष ।  
 जिससे मन होता है चंचल, है जिनेन्द्र का यह उपदेश ॥

धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥13॥  
 ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 निद्रा कर्म उदय में आते, खो देते हैं होश हवास ।  
 कुछ भी समझ नहीं आता फिर, करना क्या न करना खास ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥14॥  
 ॐ ह्रीं निद्राकर्म रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 हो स्नेह के वश में प्राणी, फिक्र उसी की करे विशेष ।  
 कार्य उचित या अनुचित कोई, करता उस हेतु अवशेष ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥15॥  
 ॐ ह्रीं स्नेह प्रमाद रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 हो जाए यदि दोष किसी से, अरति करे उससे नादान ।  
 कोई पराया नहीं ना अपना, है प्राणी का यह अज्ञान ॥  
 धर्म भावना धारण करके, किए प्रभु जी कर्म विनाश ।  
 यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास ॥16॥  
 ॐ ह्रीं अरति प्रमाद रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा  
 जाप्य- ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ।

### जयमाला

दोहा- नित्य निरंजन सिद्ध जिन, अविनाशी अविकार ।  
 जयमाला गाते विशद, नत हो बारम्बार ॥

(गीता छंद)

हे सिद्ध प्रभो ! वश विनय यही है मेरी-2 ।  
 अब जीवन भर हम शरण रहें प्रभु तेरी-2॥ टेक ॥

तव सिद्ध शुद्ध छवि अन्तर्मन को भाती ।  
 लख उर उपवन की कलि-कलि, खिल-खिल जाती ॥1॥  
 अति महा मनोहर तव गुण की गरिमा ये ।  
 तव ध्यान किए समकित होता महिमा ये ॥  
 तव सिद्ध शिला पर वास, रहा हे जिनवर ।  
 है लोक शिखर पर अर्द्ध चन्द्र सी सुन्दर ॥2॥  
 है सिद्ध अनन्तान्त साथ में मनहर ।  
 जिन सुखानन्त में ही, रत रहें निरन्तर ॥  
 है वास आपका रहा परम सिद्धालय ॥  
 है सुद्ध बुद्ध चैतन्य, प्रभु का आलय ॥3॥  
 जो स्व पर भेद विज्ञान, निरन्तर करते ।  
 वे प्राणी भव सागर से, पार उत्तरते ॥  
 शुभ भाव बनाओ, भव की रुचि को त्यागो ।  
 रुचि शुद्धभाव की रखो, स्वहित में लागो ॥4॥  
 सद् देव शास्त्र गुरु की, जो शरण में आते ।  
 वे पुण्य भाव तज, नहीं पाप में जाते ।  
 वैराग्य भाव घर फिर संयम अपनाते ॥  
 कर कर्म निर्जरा पूर्ण, सिद्ध हो जाते ॥5॥

दोहा- स्वयं आत्म पुरुषार्थ कर, हुए आप जगदीश ।  
 आशिष पाएँ हे प्रभो ! झुका रहे पद शीश ॥

ॐ ह्रीं प्रमादरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- अविनाशी अविकार हो, तीन लोक जयवंत ।  
 विशद भाव से तव चरण, नमन अनन्तान्त ॥  
 // इत्याशीर्वदि //

## चतुर्थ पूजा

### स्थापना

पच्चीस दोष रहित भय सातों, होते हैं सम्यक्त्वी जीव ।  
 रत्नत्रय के द्वारा शिव के, हेतु पुण्य जो करें अतीव ॥  
 मोक्ष मार्ग के राही बनकर, प्राप्त करें शुभ शिव सोपान ।  
 परम मोक्ष पद के धारी का, भाव सहित करते आह्वान ॥

ॐ ह्रीं पंचविंशति दोष सप्त भय रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन् । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

### (पाइता छन्द)

जल हम यह प्रासुक लाए, शिव सुख पाने को आए ।  
 हम सिद्ध प्रभु को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥1॥  
 ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा ।  
 भव ताप नशने आए, शुभ गंध चढाने लाए ।  
 हम सिद्ध प्रभु को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥2॥  
 ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा ।  
 अक्षय पद हम भी पाए, अक्षत यह चरण चढाए ।  
 हम सिद्ध प्रभु को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥3॥  
 ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा ।  
 हम काम रोग विनशाए, यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ ।  
 हम सिद्ध प्रभु को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥4॥  
 ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने कामबाणविघ्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा ।  
 हम क्षुधा से मुक्ति पाएँ, शुभ चरूं से पूज रखाएँ ।  
 हम सिद्ध प्रभु को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥5॥  
 ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा ।

हम मोह से मुक्ति पाएँ, प्रजलित शुभ दीप जलाएँ ।

हम सिद्ध प्रभु को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा ।

कर्मों से मुक्ति पाएँ, अग्नि में धूप जलाएँ ।

हम सिद्ध प्रभु को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.स्वाहा ।

हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरणों सरस चढाएँ ।

हम सिद्ध प्रभु को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व.स्वाहा ।

हम पद अनर्थ्य प्रगटाएँ, पद पावन अर्थ्य चढाएँ ।

हम सिद्ध प्रभु को ध्याएँ पद सादर शीश झुकाएँ ॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने अनर्थ्यपदप्राप्तये अर्थ्य निर्व.स्वाहा ।

### चतुर्थ वलयः

**दोहा-** सम्यक् दृष्टि जीव यह, दोष करे परिहार ।  
 पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाए जो शिव द्वार ॥  
 (अथ चतुर्थ वलयोस्परि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

**पच्चीस दोषरहित सम्यक् दर्शन के अर्थ्य**

(छन्द : जोगीरासा)

देव शास्त्र गुरु जैन धर्म में, शंका मन में आवे ।

दोष करें सम्यक् दर्शन में, भव वन में भटकावे ॥

हो निशंक जिन धर्म वचन में, सददृष्टी कहलावे ।

सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ॥1॥

ॐ ह्रीं निःशंकित गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मवशी जो अंत सहित है, बीज पाप का गाया ।

भव सुख की चाहत करना ही, कांक्षा दोष कहाया ॥

यह सुख वांछा तजने वाला, सदृष्टी कहलावे ।  
 सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ॥२॥  
 ॐ ह्रीं निःकांक्षित गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 है स्वभाव से देह अपावन, रत्नत्रय से पावन ।  
 त्याग जुगुप्सा गुण में प्रीति, मुनि तन है मन भावन ॥  
 ग्लानी को तजने वाला ही, सदृष्टी कहलावे ।  
 सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ॥३॥  
 ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सा गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 कुपथ पंथ पंथी की स्तुति, और प्रशंसा करना ।  
 भव दुख का कारण है भाई, दर्शन दोष समझना ॥  
 करें मूढ़ की नहीं प्रशंसा, सदृष्टी कहलावे ।  
 सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ॥४॥  
 ॐ ह्रीं अमूढ़दृष्टि गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 स्वयं शुद्ध है मोक्ष का मारग, मोही दोष लगावे ।  
 धर्म की निन्दा होय जहाँ यह, दर्शन दोष कहावे ॥  
 अवगुण ढाके दोषी जन के, सदृष्टी कहलावे ।  
 सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ॥५॥  
 ॐ ह्रीं उपगूहन गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 सम्यक् दर्शन या चारित से, चलित कोई हो जावे ।  
 अज्ञानी भव भ्रमण करे वह, दर्शन दोष लगावे ॥  
 धर्म भाव से उनके मन में, पुनः धर्म उपजावे ।  
 सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ॥६॥  
 ॐ ह्रीं स्थितिकरण गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 धर्म और साधर्मी जन में, प्रीति नहीं जो धरते ।  
 सम्यक् दर्शन में वह प्राणी, दोष अनेकों करते ॥

वात्सल्य का भाव धरे तो, सदृष्टी कहलावे ।  
 सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ॥७॥  
 ॐ ह्रीं वात्सल्य गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 मिथ्या अरु अज्ञान तिमिर जो, फैला सारे जग में ।  
 समकित में वह दोष लगावे, चले न मुक्ती मग में ॥  
 जैन धर्म को करे प्रकाशित, सदृष्टी कहलावे ।  
 सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ॥८॥  
 ॐ ह्रीं प्रभावना गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

### मद वर्णन

पिता भूप बन जाए यदि तो, उसका मद जो धारे ।  
 सम्यक् दर्शन अहंकार के, सारे दोष निवारे ॥  
 जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी ।  
 विशद भाव से अर्द्धं चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ॥९॥  
 ॐ ह्रीं पितृभूपमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 मामा नृप बन जाय यदि तो, उसका मद जो धारे ।  
 सम्यक् दर्शन अहंकार के, सारे दोष निवारे ॥  
 जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी ।  
 विशद भाव से अर्द्धं चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ॥१०॥  
 ॐ ह्रीं मातुलमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 रूप नहीं जग में स्थिर है, उसका मद जो धारे ।  
 सम्यक् दर्शन अहंकार के, सारे दोष निवारे ॥  
 जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी ।  
 विशद भाव से अर्द्धं चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ॥११॥  
 ॐ ह्रीं रूपमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 ज्ञान का मद दुर्गति का कारण, उसका मद क्यों धारे ।  
 सम्यक् दर्शन अहंकार के, सारे दोष निवारे ॥

जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी ।  
 विशद भाव से अर्द्ध चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ॥12॥  
 ॐ ह्रीं ज्ञानमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 धन दौलत सब नाशवान है, उसका मद क्यों धारे ।  
 सम्यक् दृष्टी प्राणी अपने, सारे दोष निवारे ॥  
 जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी ।  
 विशद भाव से अर्द्ध चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ॥13॥  
 ॐ ह्रीं धनमद मलदोषरहित सम्यक्दर्शनाय अर्द्ध निर्व. स्वाहा।  
 वीर्य जवानी का कायल है, बल मद वृद्ध न पावे ।  
 सम्यक् दृष्टी प्राणी अपने, सारे दोष नशावे ॥  
 जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी ।  
 विशद भाव से अर्द्ध चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ॥14॥  
 ॐ ह्रीं शक्तिमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 तप का मद करने से भाई, तप का फल क्यों पावे ।  
 सम्यक् दृष्टी प्राणी अपने, सारे दोष मिटावे ॥  
 जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी ।  
 विशद भाव से अर्द्ध चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ॥15॥  
 ॐ ह्रीं तपमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 क्षण भंगुर प्रभुता होती है, ज्ञानी मद क्यों धारे ।  
 सम्यक् दृष्टी प्राणी अपने, सारे दोष निवारे ॥  
 जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी ।  
 विशद भाव से अर्द्ध चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ॥16॥  
 ॐ ह्रीं प्रभुतामद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
**तीन मूढ़ता वर्णन\_ (वीर छन्द)**  
 नहवन करे सरिता सागर में, शिखर आदि से भी गिर जाय ।  
 ढेर करे पत्थर बालू के, अग्नी में जलकर मर जाय ॥

लोकमूढ़ता की क्रियाएँ, सम्यक् दृष्टी करें नहीं ।  
 इन दोषों से रहित सुनिर्मल, जैन धर्म कहलाए सही ॥17॥  
 ॐ ह्रीं लोकमूढ़ता मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 राग द्वेष से मलिन देव की, भक्ती पूजा जो करते ।  
 समय-समय पर वर की आशा, अपने मन में जो धरते ॥  
 लोकमूढ़ता की क्रियाएँ, सम्यक् दृष्टी करें नहीं ।  
 इन दोषों से रहित सुनिर्मल, जैन धर्म कहलाए सही ॥18॥  
 ॐ ह्रीं देवमूढ़ता मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 हिंसादिक आरम्भ परिग्रह, पास में अपने जो धरते ।  
 भ्रमण करावें जग जीवों को, स्वयं आप ही वह करते ॥  
 लोकमूढ़ता की क्रियाएँ, सम्यक् दृष्टी करें नहीं ।  
 इन दोषों से रहित सुनिर्मल, जैन धर्म कहलाए सही ॥19॥  
 ॐ ह्रीं पाखण्ड मूढ़ता मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

**षट् अनायतन वर्णन**

लक्षण नहीं देव के गुण ना, फिर भी देव कहे जाते ।  
 रागी द्वेषी भी होते हैं, दोष अठारह भी पाते ॥  
 देव नहीं वह हैं कुदेव जो, इनका ही गुणगान करें ।  
 नमन् करें जो प्राणी इनको, दूषित वह श्रद्धान करें ॥20॥  
 ॐ ह्रीं कुदेव अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 जो एकान्त से दूषित है अरु, कपिलादी से रचित रहा ।  
 हिंसादिक में धर्म बताए, मिथ्या आगम उसे कहा ॥  
 शास्त्र नहीं वह है कुशास्त्र जो, इनका ही गुणगान करें ।  
 नमन् करें जो प्राणी इनको, दूषित वह श्रद्धान करें ॥21॥  
 ॐ ह्रीं कुशास्त्र अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।  
 जो आरम्भ परिग्रह धारें, इन्द्रिय वश में नहीं करें ।  
 भस्म लपेटे रहते तन में, जटा जूट निज शीश धरें ॥

गुरु नहीं वह कुगुरु भाई, इनका जो गुणगान करें ।  
नमन् करें जो प्राणी इनको, दूषित वह श्रद्धान करें ॥22॥

ॐ ह्रीं कुगुरु अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

राग युक्त मोही कुदेव है, भार्या जिनके साथ रहे ।  
हाथों में जो शस्त्र लिए है, गंगा जिनके माथ बहे ॥

इनके रहे उपासक जो भी, इनका ही गुणगान करें ।  
इनमें श्रद्धा करने वाले, दूषित निज श्रद्धान करें ॥23॥

ॐ ह्रीं कुदेव उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

वाणी जो सर्वज्ञ कथित ना, मिथ्याज्ञानी रचित कहे ।  
जो एकांतवाद से दूषित, मिथ्या आगम वही रहे ॥

इनके रहे उपासक जो भी, इनका ही गुणगान करें ।  
इनमें श्रद्धा करने वाले, दूषित निज श्रद्धान करें ॥24॥

ॐ ह्रीं कुशास्त्र उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

राग भरा जिनके अन्तर में, अम्बर तन में धार रहे ।  
मिथ्या भेष बनाए फिरते, मिथ्या दृष्टी गुरु कहे ॥

इनके रहे उपासक जो भी, इनका ही गुणगान करें ।  
इनमें श्रद्धा करने वाले, दूषित निज श्रद्धान करें ॥25॥

ॐ ह्रीं कुगुरु उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

### सप्त भय रहित जिन के अर्घ्य

रहकर के इस लोक में जीवों, को भय के कई हेतु ।  
भय से हो भयभीत जीव यदि, श्रद्धा के ना फूल खिले ॥

सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, पाते पावन शिव सोपान ।  
कर्म नाशकर अपने सारे, पा लेते हैं पद निर्वाण ॥26॥

ॐ ह्रीं कुगुरु उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

राग द्वेष के वश हो प्राणी, करें निरन्तर खोटे कर्म ।  
पर भव भय से भयकारी हो, फिर भी ना धारे जिनधर्म ॥

सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, पाते पावन शिव सोपान ।  
कर्म नाशकर अपने सारे, पा लेते हैं पद निर्वाण ॥27॥

ॐ ह्रीं कुगुरु उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

आयु कर्म के क्षय होते ही, मरण जीव का हो निश्चय ।  
फिर भी करे मरण भय प्राणी, पाए न कर्मों पर जय ॥

सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, पाते पावन शिव सोपान ।  
कर्म नाशकर अपने सारे, पा लेते हैं पद निर्वाण ॥28॥

ॐ ह्रीं कुगुरु उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

कर्मोदय से रोगादिक के, उदय से दुख पाते हैं जीव ।  
भय से हो भयभीत कष्ट के, अज्ञानी कर मोह अतीव ॥

सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, पाते पावन शिव सोपान ।  
कर्म नाशकर अपने सारे, पा लेते हैं पद निर्वाण ॥29॥

ॐ ह्रीं कुगुरु उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

भय से हो भयभीत चाहते, छुपने हेतु गुप्त स्थान ।  
प्राप्त न होने पर घबड़ाते, भय अगुप्ति धारी अज्ञान ॥

सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, पाते पावन शिव सोपान ।  
कर्म नाशकर अपने सारे, पा लेते हैं पद निर्वाण ॥30॥

ॐ ह्रीं कुगुरु उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

हो भय शील जीव कोई जो, रक्षा के कई करें विचार ।  
अनरक्षा भय के धारी सब, दुःख पाते हैं बारम्बार ॥

सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, पाते पावन शिव सोपान ।  
कर्म नाशकर अपने सारे, पा लेते हैं पद निर्वाण ॥31॥

ॐ ह्रीं कुगुरु उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

अकस्मात् भय से भयकारी, होते हैं कई जग के जीव ।  
दुखी होय चोके जो भय से, व्याकुल होते बेतर तीव्र ॥

सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, पाते पावन शिव सोपान ।  
कर्म नाशकर अपने सारे, पा लेते हैं पद निर्वाण ॥32॥

ॐ ह्रीं कुगुरु उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

~~~~~  
सोरठा- दोष कहे पच्चीस, सम्यक् दर्शन में विशद ।
होते ना भयभीत, सम्यक् दृष्टि जो रहे ॥

ॐ ह्रीं कुगुरु उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वस्वाहा ।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- परम सिद्ध परमात्मा, को मन से जो ध्याय ।
जीवन उसका धन्य हो, निज स्वरूप को पाय ॥

(हरिमीता छन्द)

चैतन्य में हो मग्न जो, चैतन्य दर्शाते अहो ।
निर्दोष जिन सर्वज्ञ प्रभुवर, जगत साक्षी हो विभो ॥
पावन प्रणेता मोक्ष का, शिवमार्ग दर्शर्ता अहा ।
कल्याण इच्छुक भव्य जन को, मोक्ष पथ साधन रहा ॥1॥
शिवमार्ग पाया आपने, भवि जीव पाते पाएँगे ।
स्वाराधना से आप सम हो, शिव महल में जाएँगे ।
पर भाव सब निस्सार तजके, आत्म का दर्शन करें ।
निज भाव की महिमा जगे, निज ज्ञान में ही अनुसरें ॥2॥
हे सिद्धजन ! अद्भुत अलौकिक, ध्यान मुद्रा आपकी ।
प्रत्यक्ष दिखती आत्म प्रभुता, शील महिमा जागती ॥
तव भक्ति वश वाचाल हो, गुण गान करते हैं प्रभो ।
पर से सहज निरपेक्ष होकर, वन्दना करते विभो ॥3॥
है ज्ञान देही कर्म विरहित, अष्टगुण धारी महा कहे ।
जो द्रव्य भाव विकार त्यागी, निज स्वयं में रम रहे ॥

दोहा- पूजें ध्याए भाव से, करें प्रभु का ध्यान ।
अल्पकाल में जीव वे, पावें पद निर्वाण ॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण्डं श्री सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
दोहा- अहो विदेही नाथ के, गुण गाते मनहार ।
देह रहित शुद्धात्मा, ध्याएँ बारम्बार ॥
// इत्याशीर्वादी //

पंचम पूजा

स्थापना

भव्य जीव सम्यक् श्रद्धा धर, पाते सम्यक् ज्ञान चरित्र ।

जिसके द्वारा कर्म निर्जरा, करके हो अरहंत पवित्र ॥

त्रेसठ कर्म प्रकृतियों का वे, कर देते हैं पूर्ण विनाश ।

आह्वानन करते जिनका हम, पाने सिद्ध सुपद में वास ॥

ॐ ह्रीं तरेसठ कर्मप्रकृति दोष रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन् । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(चौपर्द्द छन्द)

नीर क्षीर सम स्वच्छ भराए, पूजा करने को हम लाए ।

भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥1॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्रोधाग्नि पर हम जय पाएँ चरणों चन्दन यहाँ चढ़ाए ।

भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥2॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्चल चित्त स्थिर हो जाए, अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए ।

भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥3॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

तजने भव सुख की आशाएँ, चरणों में यह पुष्प चढ़ाए ॥

भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥4॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

रसना ने कभी तृप्ति ना पाई, अब मेरे मन पूजा भाई
 भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥५॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधारेगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।
 मोह तिमिर में धोखे खाए, ज्ञान जगाने दीपक लाए ।

भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥६॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित सिद्ध परमेष्ठिने महोमोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।
 कर्मों ने क्या जाल बिछाए, उनसे बचने धूप जलाएँ ।

भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥७॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अच्छकर्मदहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।
 फल खाने की जग नादानी, ताजे मोक्ष फल पाए प्राणी ।

भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥८॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व.स्वाहा।
 राग द्वेष से मन को मोड़े, चेतन को निज पद से जोड़े ।

भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥९॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पंचम विलय

दोहा- कर्म प्रकृतिया नासते, त्रेसठ जिन भगवान ।
 पुष्पाञ्जलि कर पूजते, जिन पद यहाँ प्रधान ॥

(अथ पंचम वलयोस्परि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(63 कर्म प्रकृतियाँ विनाशी जिन के अर्घ्य)
 (छन्द जोगीरासा)

मतिज्ञान पर पढ़े आवरण, के जिनराज विनाशी ।
 विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, लोकालोक प्रकाशी ॥१॥

ॐ ह्रीं मतिज्ञान कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 जब रति उदय में आवे, जग से नर प्रीति जगावे ।

प्रभु रती कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥२॥

ॐ ह्रीं रतिज्ञान कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब अरति उदय में आवे, अप्रीतिभाव जगावे ।
 प्रभु अरति कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥३॥

ॐ ह्रीं अरति ज्ञान कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 कोइ इष्टानिष्ट दिखावे, मन में तब शोक मनावे ।

प्रभु शोक कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥४॥

ॐ ह्रीं शोक चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 कोइ चीज दिखे भयकारी, भय होय उदय में भारी ।

भय कर्म नाश कर भाई, प्रभु अर्हत् पदवी पाई ॥५॥

ॐ ह्रीं भय चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 स्व-पर गुण दोष दिखावे, मन में ग्लानी उपजावे ।

प्रभु कर्म जुगुप्सा नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥६॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सा चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 जो व्याकुल होवे भारी, रमने को खोजें नारी ।

प्रभु पुरुष वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥७॥

ॐ ह्रीं पुरुष वेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 पुरुषों में रमती भारी, उसके वेदोदय नारी ।

प्रभु स्त्री वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥८॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 नर-नारी की अभिलाषा, रमने की रखते आशा ।

प्रभु वेद नपुंसक नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥९॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आयु कर्म (चौपाई छन्द)

दिव्य भोग स्वर्गों के पाये, फिर भी तृप्त नहीं हो पाए ।
 नाश करें देवायु प्राणी, बनते क्षण में केवलज्ञानी ॥१०॥

ॐ ह्रीं देव आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशूगति में हम भटकाए, वध बन्धन आदिक दुख पाए।
 तिर्यचायु के आप विनाशी, पद पाए प्रभु जी अविनाशी॥11॥

ॐ ह्रीं तिर्यश्च आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 नरकायु में दुःख सहे हैं, शेष कोई भी नहीं रहे हैं।
 नरकायु के हुए विनाशी, पद पाए जिनवर अविनाशी॥12॥

ॐ ह्रीं नरक आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म (शम्भू छन्द)

कर्मोदय से नाम कर्म के, नाना भेष बनाए हैं।
 नरक गती में जाकर भगवन्, दुःख अनेकों पाए हैं ॥
 नरक गती जो नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
 बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यक् ज्ञान प्रकाश किया॥13॥

ॐ ह्रीं नरकगति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 छेदन भेदन वध बन्धन कई, भूख प्यास के दुःख सहे।
 भार वहन की मायाचारी, बँधते खोटे कर्म रहे ॥
 पशूगति जो नामकर्म है, उसका तुमने नाश किया।
 बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यक् ज्ञान प्रकाश किया॥14॥

ॐ ह्रीं तिर्यच गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 मरण करें नर पश् लोक के, नरक गती जब जाते हैं।
 विग्रह गति में पूर्व देह की, आकृति प्राणी पाते हैं॥
 यही नरक गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभू विनाश।
 बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश॥15॥

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 चतुर्गती के जीव मरण कर, पशु गति को जब पाते हैं।
 विग्रह गति में पूर्व देह सम, आकृति में ही जाते हैं॥
 यह तिर्यच गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभू विनाश।
 बनकर केवल ज्ञानी भगवन्, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश॥16॥

ॐ ह्रीं तिर्यचगत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कर्मोदय से जग के प्राणी, एकेन्द्रिय तन पाते हैं।
 नामकर्म स्थावर पाके, दुःख अनेक उठाते हैं ॥
 श्री जिनेन्द्र ने उक्त कर्म का, पूर्ण रूप से नाश किया।
 बनकर केवल ज्ञानी प्रभु ने, केवल ज्ञान प्रकाश किया॥17॥

ॐ ह्रीं स्थावर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

एक इन्द्री जीव जग में, प्राप्त जो करते सही।
 एक इन्द्री जाति उनकी, जैन आगम में कही॥
 एक इन्द्री जाति है यह, कर्म दुखदायी महा।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥18॥

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 लोक में दो इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
 जाति दो इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही ॥
 कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥19॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 लोक में तिय इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
 जाति तिय इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही॥
 कर्म है यह नाम जाती, तीव्र दुखदायी महा।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥20॥

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 इन्द्रियाँ हैं चार जिनके, चार इन्द्री वह कहे।
 चार इन्द्री जीव जग में, घोर दुखमय जो रहे ॥
 कर्म है यह नाम जाती, तीव्र दुखदायी महा।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥21॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

उष्ण किरणे सूर्य सम हैं, मूल में जो शीत है।
 कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत है॥
 कर्म है यह नाम आतप, तीव्र दुखदायी महा।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥22॥

ॐ ह्रीं आतप नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रमा सम शीत किरणे, मूल में भी शीत है।
 कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत है॥
 कर्म यह उद्योत भाई, तीव्र दुखदायी महा।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥23॥

ॐ ह्रीं उद्योत नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

जीव एक तन पाने वाला, एक रहे जिसका स्वामी।
 नामकर्म प्रत्येक कहा यह, कहते हैं अन्तर्यामी॥
 कर्म नाश यह किया प्रभु ने, तीन लोक में हुए महान्।
 अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भाव सहित करते गुणगान॥24॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक देह को पाने वाले, हैं अनेक जिसके स्वामी।
 नामकर्म साधारण है यह, कहते जिन अन्तर्यामी॥
 कर्म नाश यह किया प्रभु ने, तीन लोक में हुए महान्।
 अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भाव सहित करते गुणगान॥25॥

ॐ ह्रीं साधारण नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दाता देना चाहते, दे न पावे दान।
 अन्तराय यह दान है, नाश किए भगवान॥26॥

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेना चाहें लाभ जो, ले न पावे दान।
 अन्तराय यह लाभ है, नाश किए भगवान॥27॥

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग भोगना चाहते, भोग सके न भोग।
 अन्तराय यह भोग है, मैटे प्रभु यह रोग॥28॥

ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 चाह रहे उपभोग कई, मिले नहीं उपभोग।
 अन्तराय उपभोग यह, मैटे जिन यह रोग॥29॥

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 कर्मोदय से वीर्य की, प्राणी करते हान।
 यही वीर्य अन्तराय है, नाश किए भगवान॥30॥

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 राग द्वेष अरु मोह विकारी, भावों से संसारी जीव।
 भाव कर्म का आस्व करके, कर्म बन्ध भी करें अतीव॥
 भाव कर्म का नाश किए जिन, तीन लोक में हुए महान्।
 अष्ट द्रव्य से पूजा करके, भाव सहित करते गुणगान॥31॥

ॐ ह्रीं भाव कर्म विनाशनाय श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 कर्मों का पतझड़ हो जाए, विशद धर्म की आए बहार।
 द्रव्य कर्म तिरेसठ प्रकृतियाँ, भाव कर्म का हो संहार॥
 अनन्त चतुष्टय पाने वाले, त्रिभुवन पति बनते अविराम।
 तीर्थकर जिन शांतिनाथ पद, मेरा बारम्बार प्रणाम॥32॥

ॐ ह्रीं परम शांति प्रदायक श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा- मोह जयी इन्द्रिय जयी, कर्म जयी भगवान।
 भाव विशुद्धि हेतु हम, करते तव जयगान॥

(चामर छन्द)

प्रभु भेद ज्ञानी हो संयम जगाया।
 किए नाश धाती विशद ज्ञान पाया॥ टेक॥
 तुम्हीं शुद्ध आत्म का ज्ञायक बताया।
 सभी द्रव्य तत्त्वों में अनुपम बताया॥

यही रूप मेरा मुझे श्रेष्ठ भाया ।
 महानन्द मैंने स्वयं में ही पाया ॥
 भटकते जगत में बहुत काल बीता ।
 रहा आज तक मोह मदिरा को पीता ॥
 रहा दूढ़ता सौख्य विषयों में स्वामी ।
 मिली वेदना नित हुआ अक्ष कामी ॥
 परम भाग्य से आप को देव पाया, किए नाश ॥1॥
 महिमा कहाँ तक कहें तुम्हारी ।
 हुए दर्शकर आज सम्यक्त्व धारी ॥
 परम भाव हमको प्रभु जी दिखाया ।
 मैं स्वयं सिद्ध शक्ति से हूँ जाना पाया ॥
 मैं चिन्मात्र ज्ञायक हूँ अनुभव में आया, किए नाश ॥2॥
 अनादि से हमने सहे दुःख भारी ।
 खटकती है रागादि परिणति विकारी ॥
 है विश्वास अब शीघ्र ही यह नशेगी ।
 विशद चेतना बुद्धि निज में बसेगी ॥
 करें दुर्विकलबों का जिनवर सफाया, किए नाश ॥3॥
 है सर्वांग सुखमय स्वयं सिद्ध निर्मल ।
 है शक्ति अनन्तमयी एक अविचल ॥
 है जग में सुमनीय शास्वत चिदात्म ।
 विन्मूर्ति चिन्मूर्ति शास्वत है आत्म ॥
 प्रभु आपकी वाणी से जान पाया, किए नाश..... ॥4॥
सोरठा- महिमा अगम अपार, सिद्धों की है लोक में ।
 वन्दन बारम्बार, करते हैं हम भाव से ॥
 ॐ ह्रीं कर्मप्रकृति दोषरहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने जयमाला पूर्णचर्य निर्वपामीति स्वाहा ।
सोरठा- करते हम गुणगान, तीन योग से आज हम ।
 पाने पद निर्वाण, महिमा गाते आपकी ॥
 // इत्याशीर्वादः//

षष्ठम् पूजा

स्थापना

योग परिषह विरहित होकर, दोष अठारह रहित विशेष ।
 कर्म प्रकृतिया नाश पचासी, सिद्ध सुपद प्रगटाएँ जिनेश ॥
 काल अनन्तान्त सौख्य में, रमण करें श्री जिन भगवान ।
 जिनकी अर्चा करने को हम, भाव सहित करते आह्वान ॥
 ॐ ह्रीं परीषह योग कर्म रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः ! अत्र अवतर-अवतर
 संगौषट् आह्वानन् । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितौ भव-
 भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(मोतिया दाम छन्द)

कलश में भरके लाए नीर, नाश हो जन्मादिक की पीर ।
 प्रभु हैं सिद्ध शुद्ध अविकार, पूजते जिनपद बारम्बार ॥1॥
 ॐ ह्रीं परीषह योगकर्म रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय
 जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 घिसा चन्दन लाए गोशीर, प्राप्त हो भव सागर का तीर ।
 प्रभु हैं सिद्ध शुद्ध अविकार, पूजते जिनपद बारम्बार ॥2॥
 ॐ ह्रीं परीषह योगकर्म रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः संसारतापविनाशनाय चंदनं
 निर्वपामीति स्वाहा ।

चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, प्राप्त अक्षय हो सुपद प्रधान ।
 प्रभु हैं सिद्ध शुद्ध अविकार, पूजते जिनपद बारम्बार ॥3॥
 ॐ ह्रीं परीषह योगकर्म रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्
 निर्वपामीति स्वाहा ।
 पुष्प यह चढ़ा रहे भगवान, काम रुज की हो जाए हान ।
 प्रभु हैं सिद्ध शुद्ध अविकार, पूजते जिनपद बारम्बार ॥4॥
 ॐ ह्रीं परीषह योगकर्म रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं
 निर्वपामीति स्वाहा ।

चरु हम चढ़ा रहे रसदार, क्षुधा रुज से पा जाए पार ।
प्रभु हैं सिद्ध शुद्ध अविकार, पूजते जिनपद बारम्बार ॥५॥

ॐ ह्रीं परीषह योगकर्म रहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिनः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।
लिया यह घृत का दीप प्रजाल, मोह का नाश जंजाल ।
प्रभु हैं सिद्ध शुद्ध अविकार, पूजते जिनपद बारम्बार ॥६॥

ॐ ह्रीं परीषह योगकर्म रहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिनः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं
निर्वपामीति स्वाहा ।

जलाए अग्नी में हम धूप, कर्म नश पाए सुपद अनूप ।
प्रभु हैं सिद्ध शुद्ध अविकार, पूजते जिनपद बारम्बार ॥७॥

ॐ ह्रीं परीषह योगकर्म रहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिनः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।
चढ़ाते फल ताजे रसदार, प्राप्त हो मोक्ष महल का द्वार ।
प्रभु हैं सिद्ध शुद्ध अविकार, पूजते जिनपद बारम्बार ॥८॥

ॐ ह्रीं परीषह योगकर्म रहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिनः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व.स्वाहा।
बनाया अष्ट द्रव्य का अर्द्ध, चढ़ाते पाने सुपद अनर्द्ध ।
प्रभु हैं सिद्ध शुद्ध अविकार, पूजते जिनपद बारम्बार ॥९॥

ॐ ह्रीं परीषह योगकर्म रहित श्रीसिद्ध परमेष्ठिनः अनर्द्धपदप्राप्तये अर्द्ध
निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठम् वलय

दोहा- योग परीषह जय करें, रहित अठारह दोष ।
शेष कर्म सब नाश कर, हो जाते निर्दोष ॥
(अथ षष्ठम् वलयोस्परि पुष्यांजलि क्षिपेत्)

अठारह दोष से रहित जिन (चौपाई)

के वलज्ञानी होने वाले, क्षुधा वेदना खोने वाले ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥२३॥
ॐ ह्रीं क्षुधादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥२४॥

ॐ ह्रीं तृष्णादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
जन्म दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥२५॥

ॐ ह्रीं जन्मदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
जरा दोष की होती हानी, बन जाते जो केवल ज्ञानी ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥२६॥

ॐ ह्रीं जरादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
विस्मय दोष रहे न भाई, केवलज्ञानी के दुखदायी ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥२७॥

ॐ ह्रीं विस्मयदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
अरति दोष उनके भी खोवे, केवल ज्ञानी जो भी होवे ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥२८॥

ॐ ह्रीं अरतिदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
खेद दोष के होते त्यागी, केवल ज्ञानी बहु बड़भागी ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥२९॥

ॐ ह्रीं खेददोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
रोग देह में कभी न आवे, जो भी केवल ज्ञान जगावे ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३०॥

ॐ ह्रीं रोग रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
मन में शोक कभी न लाते, जो नर केवल ज्ञान जगाते ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३१॥

ॐ ह्रीं शोकदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
मद उनके कैसे रह पावे, जो भी केवल ज्ञान जगावे ।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३२॥

ॐ ह्रीं मददोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 मोह दोष के हैं वे नाशी, जो हैं केवलज्ञान प्रकाशी ।
 दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३३ ॥

ॐ ह्रीं मोहदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 भय का क्षय उनके हो जावे, केवल ज्ञान मुनि प्रगटावे ।
 दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३४ ॥

ॐ ह्रीं भयदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 निन्द्रा दोष त्यागते स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी ।
 दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३५ ॥

ॐ ह्रीं निन्द्रादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 चिंता उनके हृदय न आवे, जो तीर्थकर पदवी पावे ।
 दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३६ ॥

ॐ ह्रीं चिंतादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 स्वेद रहे न तन में कोई, जिनने भव से मुक्ति पाई ।
 दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३७ ॥

ॐ ह्रीं स्वेददोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 राग-दोष उनका नश जाए, मुनिवर केवलज्ञान जगाए ।
 दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३८ ॥

ॐ ह्रीं रागदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 मन में द्वेष कभी न लावें, विशद ज्ञान जो मुनि प्रगटावें ।
 दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥३९ ॥

ॐ ह्रीं द्वेषदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 मरण दोष के होते नाशी, केवल ज्ञानी शिवपुर वासी ।
 दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ॥४० ॥

ॐ ह्रीं मरण दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

22 परिषहजय एवं 10 धर्मयुत जिन (छन्द जागीरासा)

क्षुधा परीषह जय पाते हैं, मुनी वृन्द होके अविकार ।
 ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, करें साधना मुनि अनगार ॥१ ॥

ॐ ह्रीं क्षुधा परीषहजययुत श्री सुपाश्वर्नाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 तृष्णा परीषह जय करते हैं, वीतराग साधू अनगार ।
 ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, जग में होते मंगलकार ॥२ ॥

ॐ ह्रीं तृष्णा परीषहजययुत श्री सुपाश्वर्नाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 मुश्किल शीत परीषह जय है, वह भी सहते संत महान् ।
 सम्यक् चारित पाने वाले, होते संयम के स्थान ॥३ ॥

ॐ ह्रीं शीत परीषहजययुत श्री सुपाश्वर्नाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 गर्भी की लपटों को सहते, निष्पृह साधू हो अविकार ।
 उष्ण परीषह जय के धारी, जग में गाए मंगलकार ॥४ ॥

ॐ ह्रीं उष्ण परीषहजययुत श्री सुपाश्वर्नाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 दंशमशक परिषह जय करते, समता धारी संत प्रधान ।
 कठिन साधना करने वाले, तीन लोक में रहे महान् ॥५ ॥

ॐ ह्रीं दंशमशक परीषहजययुत श्री सुपाश्वर्नाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 अन्तर बाह्य लाज का कारण, नग्न परीषह सहते हैं ।
 ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, समता भाव से रहते हैं ॥६ ॥

ॐ ह्रीं नग्न परीषहजययुत श्री सुपाश्वर्नाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 अरति परीषह जय के धारी, होते हैं साधू निर्ग्रन्थ ।
 विशद साधना करने वाले, करते हैं कर्मों का अन्त ॥७ ॥

ॐ ह्रीं अरति परीषहजययुत श्री सुपाश्वर्नाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 हाव-भाव लखकर स्त्री के, समता से रहते अनगार ।
 स्त्री परिषह जय करते हैं, वीतराग साधू मनहार ॥८ ॥

ॐ ह्रीं स्त्री परीषहजययुत श्री सुपाश्वर्नाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

चर्या परिषह जय धारी मुनि, पैदल करते सदा विहार ।
 यत्नाचार धरें चर्या में, जिनकी चर्या अपरम्पार ॥9॥

ॐ ह्रीं चर्या परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 ज्ञान ध्यान आदी को बैठें, विविक्त आसन के आधार ।
 निषद्या परीषह जय करते हैं, जैन मुनी होके अविकार ॥10॥

ॐ ह्रीं निषद्या परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 क्षिति शयन एकाशन में मुनि, करते हैं समता को धार ।
 शैय्या परिषह जय करते हैं, ज्ञानी ध्यानी ऋषि अनगार ॥11॥

ॐ ह्रीं शैय्या परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 कटु वचन बोले यदि कोई, फिर भी न करते हैं रोष ।
 जैन मुनीश्वर समता वाले, परिषह जय धारी आक्रोश ॥12॥

ॐ ह्रीं आक्रोश परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(चाल-छन्द)

वध करे यदि कोइ प्राणी, न बोलें मुनि कटु वाणी ।
 मुनि बध परिषह जय धारी, हैं जग में मंगलकारी ॥13॥

ॐ ह्रीं वध परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 जिन मुनी याचना धारी, परीषह जय करते भारी ।
 इनकी है महिमा न्यारी, होते हैं मंगलकारी ॥14॥

ॐ ह्रीं याचना परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 ना लाभ प्राप्त कर पावें, मन में समता उपजावें ।
 मुनि अलाभ परीषह वाले, इस जग में रहे निराले ॥15॥

ॐ ह्रीं अलाभ परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 तन में कोई रोग सतावे, मुनि शांत भाव को पावे ।
 जय रोग परीषह धारी, होते जग मंगलकारी ॥16॥

ॐ ह्रीं रोग परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

तृण शूल आदि चुभ जावे, फिर भी मन समता आवे ।
 तृणस्पर्श जयी कहलावें, परिषह में न घबड़ावें ॥17॥

ॐ ह्रीं तृणस्पर्श परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 तन मल से लिप्त हो जावे, मन में आकुलता आवे ।
 मुनि मल परीषह जय धारी, जग में रहते अविकारी ॥18॥

ॐ ह्रीं मल परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 सत्कार पुरस्कार जानो, परीषह जय धारी मानो ।
 हैं मुनिवरजी शुभकारी, इस जग में मंगलकारी ॥19॥

ॐ ह्रीं सत्कार पुरस्कार परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 मुनिवर शुभ प्रज्ञा पावें, प्रज्ञा में न हष्टवें ।
 मुनि प्रज्ञा परिषह धारी, जय पाते हैं अविकारी ॥20॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञा परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 अज्ञान परीषह गाया, मुनिवर ने जय शुभ पाया ।
 न खेद हृदय में लावें, मन में समता उपजावें ॥21॥

ॐ ह्रीं अज्ञान परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 मुनिराज अदर्शन धारी, होते उसके जयकारी ।
 मुनिवर परिषह जय पावें, मन में समता उपजावें ॥22॥

ॐ ह्रीं दर्शन परीषहजययुत श्री सुपाश्वनाथ जिनेन्द्राय अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अर्द्ध्य)

(आर्या छन्द)

मतिज्ञान पर पर्दा डाले, कर्म घातिया जानो ।
 मति ज्ञानावरणी यह भाई, कर्म इसे पहिचानो ॥

इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादी पाए ।
 नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्द्ध्य चढ़ाने लाए ॥1॥

ॐ ह्रीं मति ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 पड़े आवरण श्रुत ज्ञान पर, सम्यक् ज्ञान न होवे।
 स्वयं हिताहित की बुद्धि को, प्राणी जग में खोवे॥
 इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादी पाए।
 नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रुत ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 पड़े आवरण अवधि ज्ञान पर, ज्ञान प्रकट न होवे।
 अवधि ज्ञान की शक्ति प्राणी, स्वयं आपकी खोवे॥
 इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादी पाए।
 नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए ॥१३॥

ॐ ह्रीं अवधि ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 ज्ञान मनःपर्यय हे भाई ! प्रकट नहीं हो पावे।
 कर्मावरण के कारण मन में, मन की बात न आवे॥
 इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादी पाए।
 नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए ॥१४॥

ॐ ह्रीं मनःपर्यय ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 लोकालोक प्रकाशि केवल, ज्ञान प्रकट न होवे।
 केवल ज्ञानावरण कर्म यह, उसकी शक्ति खोवे॥
 इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादी पाए।
 नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए ॥१५॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 ज्ञानावरणी कर्म का भाई, रत्नत्रय है नाशी।
 ज्ञान शरीरी बनकर प्राणी, बनते शिवपुर वासी॥
 इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादी पाए।
 नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए ॥१६॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(दर्शनावरणी कर्म विनाशक अर्घ्य)

(शम्भू छन्द)

चक्षु दर्शन हो आँखों से, आगम यह बतलाता है।
 चक्षु दर्शनावरण कर्म से, सही देख न पाता है॥
 कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
 अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं॥१॥

ॐ ह्रीं चक्षु दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 स्पर्शनादि अन्य इन्द्रियों, से वस्तु का हो आभास।
 यही अचक्षु दर्शन जानो, कर्मावरण करे वह नाश॥
 कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
 अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं॥२॥

ॐ ह्रीं अचक्षु दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 अवधि ज्ञान के पूर्व वस्तु का, होवे जो सामान्याभास।
 कहा अवधि दर्शन आगम में, कर्मावरण करे जो नाश॥
 कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
 अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं॥३॥

ॐ ह्रीं अवधि दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 केवल ज्ञान के साथ चराचर, वस्तु का सामान्याभास।
 जानो केवल दर्शन भाई, कर्मावरण करे जो हास॥
 कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
 अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं॥४॥

ॐ ह्रीं केवल दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 निद्रा कर्मावरण जीव को, कर देता निद्रा में लीन।
 वस्तु तब वह देख न पावे, हो जाता है ज्ञान विहीन॥
 कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
 अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं॥५॥

ॐ ह्रीं निद्रा दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा-निद्रा कर्मोदय से, गहरी नींद में सोवे जीव।
प्राणी वस्तु देख न पावें, कर्मास्व तब करें अतीव॥
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्ध्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं॥6॥

ॐ ह्रीं निद्रा-निद्रा दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

प्रचला कर्मोदय से प्राणी, ऊँधें अरु झपकी लेवें।
घेरे रहती नींद सदा ही, चित् में चित् नहीं देवें॥
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्ध्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं॥7॥

ॐ ह्रीं प्रचला दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

प्रचला-प्रचला कर्मोदय से, नींद घेरती बहती लार।
बेहोशी सी हालत रहती, दाँत घिसे नर बारम्बार॥
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्ध्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं॥8॥

ॐ ह्रीं प्रचला-प्रचला दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्ध्य निर्व. स्वाहा।

सोते-सोते काम करे कई, नहीं होश में रहता जीव।
सोकर उठता है जब मानव, करता है आश्चर्य अतीव॥
स्त्यानगृद्धि कर्म दर्शनावरणी से कई दुख पाए।
कर्मों से मुक्ती पाने प्रभु, तव चरणों में सिरनाए॥9॥

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

(वेदनीय कर्म विनाशक अर्ध्य)

(ताटक छन्द)

कर्म असाता वेदनीय का, जब तक उदय में रहता है।
व्यसनादिक भोगों में फँसकर, प्राणी कई दुख सहता है॥
हे प्रभो ! आप सारे जग में, कर्मों के नाशी कहलाए।
अतएव प्रभो हम चरणों में, यह अर्ध्य चढ़ाने को लाए॥1॥

ॐ ह्रीं सातावेदनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय साता कर्मोदय, पुण्य के फल से आता है।
धन-वैभव सम्मान कुशलता, प्राणी सब कुछ पाता है॥
हे प्रभो ! आपको साता अरु, कोई भी वैभव न भाए।
अतएव प्रभो हम चरणों में, यह अर्ध्य चढ़ाने को लाए॥2॥

ॐ ह्रीं असातावेदनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- पाए अव्याबाध गुण, वेदनीय को नाश।

निज वैभव को प्राप्त कर, शिवपुर किए निवास॥3॥

ॐ ह्रीं सर्व वेदनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि पूर्णार्थ्य निर्व.स्वाहा।

(मोहनीय कर्म विनाशक अर्ध्य)

(चाल छन्द)

मिथ्यात्व उदय में आवे, सम्यक्त्व नहीं हो पावे।
न श्रद्धा उर में जागे, विपरीत धर्म से भागे॥
जिन सिद्धों के गुण गाएँ, उर में श्रद्धान् जगाएँ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ ! सहारा॥1॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्ध्य निर्व.स्वाहा।

सम्यक्त्व पूर्ण न होवे, मिथ्या शक्ति भी खोवे।
गुड़ दही मिला हो जैसे, इसकी परिणति हो वैसे॥
जिन सिद्धों के गुण गाएँ, उर में श्रद्धान् जगाएँ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ ! सहारा॥2॥

ॐ ह्रीं सम्यक् मिथ्यात्व दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व पूर्ण खो जावे, सम्यक्त्व उदय में आवे।
कुछ रहे पलिनता भाई, सम्यक् प्रकृति बतलाई॥
जिन सिद्धों के गुण गाएँ, उर में श्रद्धान् जगाएँ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ ! सहारा॥3॥

ॐ ह्रीं सम्यक् प्रकृति दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छन्द)

क्रोध अनन्तानुबन्धी का, किया आपने पूर्ण विनाश।
मोहनीय कर्मों से पाया, पूर्ण रूप तुमने अवकाश॥
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार।
नाथ ! आपके चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार॥4॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः
अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

मान अनन्तानुबन्धी का, पूर्ण रूप से करके नाश।
मार्दव धर्म प्राप्त कर प्रभु ने, कीन्हा सम्यग् ज्ञान प्रकाश॥
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार।
नाथ ! आपके चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार॥5॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः
अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

माया अनन्तानुबन्धी का, नाश हुए जो सर्व महान।
आर्जव धर्म प्राप्त कर प्रभु ने, पाया निर्मल सम्यग् ज्ञान॥
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार।
नाथ ! आपके चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार॥6॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः
अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अनन्तानुबन्धी का, जिनको रहा न नाम निशान।
उत्तम शौच धर्म के धारी, पाए निर्मल सम्यग् ज्ञान॥
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार।
नाथ आपके ! चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार॥7॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः
अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

(सारंग)

क्रोध अप्रत्याख्यान, अणुव्रत का घाती कहा।
नाश किए भगवान, पूज्य हुए हैं लोक में॥8॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः
अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

मान अप्रत्याख्यान, को नाशा है आपने।
अतः हुए भगवान, महिमा जिनकी अगम है॥9॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

मायाप्रत्याख्यान, छल प्रपंच जागृत करे।
जग में हुए महान्, पूर्ण रूप से शांत कर॥10॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अप्रत्याख्यान, न होने दे देशव्रत।
कर कषाय की हान, पाए जिन श्री सिद्ध पद॥11॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

प्रत्याख्यान क्रोध जो होवे, महाव्रतों की क्षमता खोवे।

उसका नाश किए जिन स्वामी, हुए आप तब अन्तर्यामी॥12॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान मान के होते, महाव्रतों की शक्ति खोते।

मद की दम को प्रभु नशाए, अर्हत् सिद्ध सुपद को पाए॥13॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

माया प्रत्याख्यान उदय हो, महाव्रतों की शान्ति क्षय हो।
माया की छाया तक नाशी, ज्ञानी आप हुए अविनाशी॥14॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान लोभ आ जावे, प्राणी संयम न धर पावे।
प्रत्याख्यान लोभ परिहारी, हुए आप जिन मंगलकारी॥15॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सौररा छन्द)

यथाख्यात न होय, क्रोध संज्वलन उदय से।
पूर्ण रूप यह खोय, श्री सिद्ध पदवी लहे॥16॥

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान संज्वलन होय, यथाख्यात न प्राप्त हो।
इसको प्राणी खोय, केवलज्ञानी जिन बने॥17॥

ॐ ह्रीं संज्वलन मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात न पाय, माया संज्वलन उदय में।
जिनवर इसे नशाय, सिद्ध बने इस लोक में॥18॥

ॐ ह्रीं संज्वलन माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ संज्वलन पाय, यथाख्यात न हो कभी।
श्री सिद्धपद पाए, लोभ संज्वलन नाशकर॥19॥

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

जब हास्य उदय में आवे, हँस-हँस प्राणी खिल जावे।
प्रभु हास्य कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥20॥

ॐ ह्रीं हास्य चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब रति उदय में आवे, जग से नर प्रीति जगावे।
प्रभु रति कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥21॥

ॐ ह्रीं रति चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब अरति उदय में आवे, अप्रीतिभाव जगावे।
प्रभु अरति कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥22॥

ॐ ह्रीं अरति चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कोइ इष्टानिष्ट दिखावे, मन में तब शोक मनावे।
प्रभु शोक कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥23॥

ॐ ह्रीं शोक चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कोइ चीज दिखे भयकारी, भय होय उदय में भारी।
भय कर्म नाश कर भाई, प्रभु अर्हत् पदवी पाई॥24॥

ॐ ह्रीं भय चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

स्व-पर गुण दोष दिखावें, मन में ग्लानी उपजावें।
प्रभु कर्म जुगुप्सा नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥25॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सा चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जो व्याकुल होवे भारी, रमने को खोजे नारी।
प्रभु पुरुष वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥26॥

ॐ ह्रीं पुरुष वेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पुरुषों में रमती भारी, उसके वेदोदय नारी।
प्रभु स्त्री वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥27॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नर-नारी की अभिलाषा, रमने की रखते आशा।
प्रभु वेद नपुंसक नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥28॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

है मोहनीय दुखकारी, प्रभु नाश हुए अविकारी।
प्रभु मोह कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥29॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आयु कर्म विनाशक अर्द्ध) (चाल छन्द)

स्वर्गों का वैभव पाया, भोगों में समय गँवाया।
 आयु हो जावे पूरी, पर आशा रही अधूरी॥
 प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
 यह कर्म हमारा स्वामी, मैटो हे अन्तर्यामी !॥1॥

ॐ ह्रीं देव आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

हो दीन हीन दुःख पाया, रोगों ने बहुत सताया।
 संयोग वियोग से भारी, मानुष गति रही दुखारी॥
 प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
 यह कर्म हमारा स्वामी, मैटो हे अन्तर्यामी !॥2॥

ॐ ह्रीं मनुष्य आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधा तृष्णा दुखदायी, बध बन्धन आदिक भाई।
 बनके तिर्यज्ज्च सहे हैं, होके परतन्त्र रहे हैं॥
 प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
 यह कर्म हमारा स्वामी, मैटो हे अन्तर्यामी !॥3॥

ॐ ह्रीं तिर्यज्ज्च आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

नरकों की कथा है न्यारी, बहु दुःख सहे हैं भारी।
 बहु कर्म किए दुख पाए, भव-भव में सहते आए॥
 प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
 यह कर्म हमारा स्वामी, मैटो हे अन्तर्यामी !॥4॥

ॐ ह्रीं नरक आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु गति भटकाए, नरकों के दुःख उठाए।
 बध-बन्धन आदिक भारी, पाकर के रहे दुखारी॥
 प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
 यह कर्म हमारा स्वामी, मैटो हे अन्तर्यामी !॥5॥

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

(नाम कर्म विनाशक अर्द्ध)

(शम्भू छन्द)

कर्मोदय से नाम कर्म के, नाना भेष बनाए हैं।
 नरक गति में जाकर भगवन्, दुःख अनेकों पाए हैं॥
 नरक गति जो नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
 बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया॥1॥

ॐ ह्रीं नरक गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

छेदन भेदन बध बन्धन कई, भूख-प्यास के दुःख सहे।
 भार वहन की मायाचारी, बँधते खोटे कर्म रहे॥
 पशु गति जो नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
 बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया॥2॥

ॐ ह्रीं तिर्यज्ज्च गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चेन्द्रिय के विषयों का सुख, पाया हमने बारम्बार।
 सुख-दुख पाकर रहे भटकते, नहीं मिला हमको भव पार॥
 मनुज गति है नाम कर्म शुभ, उसका तुमने नाश किया।
 बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया॥3॥

ॐ ह्रीं मनुष्य गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य सुखों को पाकर भी हम, तृप्त नहीं हो पाए हैं।
 देवायु जब पूर्ण हुई तो, बार-बार पछताए हैं॥
 देवगति शुभ नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
 बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया॥4॥

ॐ ह्रीं देव गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

एक इन्द्री जीव जग में, प्राप्त जो करते सही।
 एक इन्द्री जाति उनकी, जैन आगम में कही॥

एक इन्द्री जाति है यह, कर्म दुखदायी महा ।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥5॥
 ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 लोक में दो इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही ।
 जाति दो इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही ॥
 कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा ।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥6॥
 ॐ ह्रीं द्वि-इन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 लोक में त्रय इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही ।
 जाति तिय इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही ॥
 कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा ।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥7॥
 ॐ ह्रीं त्रि-इन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 इन्द्रियाँ हैं चार जिनके, चार इन्द्री वह कहे ।
 चार इन्द्री जीव जग में, घोर दुखमय जो रहे ॥
 कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा ।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥8॥
 ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 लोक में सब इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं कभी ।
 जीव संज्ञी अरु असंज्ञी, वह कहे जाते सभी ॥
 कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा ।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥9॥
 ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

(चौपाई)

जो स्थूल देह को पावे, वह औदारिक तन कहलावे ।
 परमौदारिक जिनवर पाते, अन्त में छोड़ उसे भी जाते ॥10॥
 ॐ ह्रीं औदारिक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

अणिमादिक ऋद्धी के धारी, रूप बनाते अतिशयकारी ।
 वैक्रियक तन प्राणी पाते, जिनवर को वह भी न भाते ॥11॥
 ॐ ह्रीं वैक्रियक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 मुनि के सिर से प्रगटित होवे, जिनपद छूके शंका खोवे ।
 आहारक यह देह कहावे, जिनवर को यह भी न भावे ॥12॥
 ॐ ह्रीं आहारक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 तन में जो कान्ती प्रगटावे, वह शरीर तैजस कहलावे ।
 भेद शुभाशुभ इसके गाये, जिनवर को यह भी न भाये ॥13॥
 ॐ ह्रीं तैजस शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 आठों कर्म जहाँ मिल जावे, ये ही कार्माण देह बनावे ।
 उसका नाश किए जिन स्वामी, बने प्रभु जी अन्तर्यामी ॥14॥
 ॐ ह्रीं कार्माण शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

(चाल-टप्पा)

हाथ-पैर दो कमर पीठ अरु, हृदय शीश जानो ।
 आठ अंग यह लघु उपांग कई, तन में पहिचानो ॥
 सभी यह आगम से जानो ।
 आंगोपांग औदारिक तन से, रहित सिद्ध मानो सभी.. ॥15॥
 ॐ ह्रीं औदारिक आंगोपांग नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 वृहद देह के हिस्से को ही, अंग सभी जानो ।
 कर्मोदय से मिले जीव को, ऐसा तुम मानो ॥
 सभी यह आगम से जानो ।
 आंगोपांग वैक्रियक तन से, रहित सिद्ध मानो सभी.. ॥16॥
 ॐ ह्रीं वैक्रियक आंगोपांग नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 नाक कान उँगली आदी को, तुम उपांग जानो ।
 कर्मोदय से शुभम् जीव को, मिलें सभी मानो ॥
 सभी यह आगम से जानो ।
 आंगोपांग आहारक तन से, रहित सिद्ध मानो सभी.. ॥17॥
 ॐ ह्रीं आहारक आंगोपांग नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

शिल्पकार सम तन की रचना, करता यह जानो।
नाम कर्म निर्माण कहा यह, भाई पहिचानो॥
सभी यह आगम से जानो।
दुखकारी इस नाम कर्म से, रहित सिद्ध मानो सभी.. ॥18॥

ॐ ह्रीं निर्माण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(पद्मरि छन्द)

हो जोड़ ईट गारा समान, बन्धन औदारिक वही जान।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥19॥

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वैक्रियक तन में कई भेष, है नाम कर्म बन्धन विशेष।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥20॥

ॐ ह्रीं वैक्रियक शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आहारक बन्धन है महान्, न होता है जो दृश्यमान।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥21॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तन में होवे जो कांतिमान, शुभ अशुभ रूप तैजस महान्।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥22॥

ॐ ह्रीं तैजस शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अब नामकर्म कार्माण जान, बन्धन कर्मों का यही मान।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥23॥

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा

करे छिद्र बिन देह को, नाम कर्म संघात।
औदारिक तन का किए, सिद्ध प्रभू भी घात॥24॥

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नरक स्वर्ग में कर्म हो, वैक्रियक संघात।
सिद्ध प्रभू जी कर दिए, इसका क्षण में घात॥25॥

ॐ ह्रीं वैक्रियक शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आहारक शुभ देह में, आहारक संघात।
सिद्ध प्रभु जी कर दिए, नाम कर्म का घात॥26॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तैजस कांती देह में, देवे अपरम्पार।
नाम कर्म तैजस प्रभू, नाश हुए भव पार॥27॥

ॐ ह्रीं तैजस शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देह कार्माण को करे, छिद्र रहित संघात।
अष्ट कर्म का कर दिए, सिद्ध प्रभु जी घात॥28॥

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(छन्द : मोतियादाम)

बने कर्मोदय से आकार, देह का भाई विविध प्रकार।
रहे सुन्दर जो श्रेष्ठ महान्, कहा वह सम चतुष्कसंस्थान॥

हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहें निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥29॥

ॐ ह्रीं समचतुर्स्र संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देह नीचे की पतली जान, रहे ऊपर स्थूल महान्।
कहा न्यग्रोध यही संस्थान, रहा जो बसगद पेड़ समान॥

हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहें निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥30॥

ॐ ह्रीं न्यग्रोध परिमंडल संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देह ऊपर की पतली जान, बने नीचे स्थूल महान्।
कहा ऐसा स्वाती संस्थान, किया आगम में यही बखान॥

हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहें निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥31॥

ॐ ह्रीं स्वाती संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पीठ में हो ऊँचा स्थान, बना कूबड़ हो बड़ा महान्।
कहा कुञ्जक ये ही संस्थान, किया आगम में यही बखान॥

~~~~~

हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहें निज आतम में लवलीन।  
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥32॥

ॐ ह्रीं कुब्जक संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।  
प्राप बोना हो जिसे शरीर, रखे फिर भी मन में वह धीर।  
कहाए वह बामन संस्थान, किया आगम में यही बखान॥

हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहें निज आतम में लवलीन।  
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥33॥

ॐ ह्रीं बामन संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।  
रहे टेड़ा-मेड़ा आकार, देह का भाई विविध प्रकार।  
इसे कहते हुण्डक संस्थान, किया आगम में यही बखान॥

हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहें निज आतम में लवलीन।  
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥34॥

ॐ ह्रीं हुण्डक संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(वीर छंद)

हड्डी की मजबूती को ही, कहते हैं जिनवर संहनन।  
वज्रमयी हड्डी कीलें हों, वज्र मयी होवे वेस्टन॥

वज्र वृषभ नाराच संहनन, पाकर हुए प्रभु अर्हन्।  
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥35॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।  
हाड़ कील तो वज्रमयी हों, नहीं वज्र का हो वेस्टन।  
मोक्ष नहीं जाते यह पाकर, वज्र नाराच कहा संहनन॥

संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।  
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥36॥

ॐ ह्रीं वज्रनाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।  
हाड़ देह के वज्रमयी हों, कील वज्र की न वेस्टन।  
नाम कर्म की बलिहारी है, यह नाराच कहा संहनन॥

~~~~~

संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥37॥

ॐ ह्रीं नाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
हाड़ अर्द्ध कीलित हों तन के, अर्द्ध नाराच कहा संहनन।
कर्मोदय से नाम कर्म के, पाते प्राणी ऐसा तन॥

संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥38॥

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
रहें हड्डियाँ कीलित तन में, कीलक कहलाए संहनन।
कीलक नाम कर्म से प्राणी, पाते हरदम ऐसा तन॥

संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥39॥

ॐ ह्रीं कीलक संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बँधी हुई हो नशें हड्डियाँ, कहलाता है ऐसा तन।
कहा सृपाटिक असंप्राप्ता, प्राणी का ऐसा संहनन॥

संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥40॥

ॐ ह्रीं असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(सखी छन्द)

है नाम कर्म दुखदायी, स्पर्श शीत हो भाई।
प्रभु सिद्ध कर्म के नाशी, चिदूपी ज्ञान प्रकाशी॥41॥

ॐ ह्रीं शीत स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्पर्श उष्ण भी जानो, यह भी दुखदायी मानो।
सिद्धों ने कर्म विनाशे, फिर आतम ज्ञान प्रकाशे॥42॥

ॐ ह्रीं उष्ण स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श लघू पहिचानो, आस्रव का हेतु मानो।
हैं सिद्ध प्रभू अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी॥43॥

ॐ ह्रीं लघु स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श कहा है भारी, है कर्मों की बलिहारी।
जिन सिद्धों को हम ध्याएँ, उनके ही गुण को पाएँ॥44॥

ॐ ह्रीं गुरु स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श कठिन हो भाई, यह नाम कर्म दुखदायी।
होते हैं सिद्ध विनाशी, फिर बनते हैं अविनाशी॥45॥

ॐ ह्रीं कठिन स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श नरम सुखदायी, लगता लोगों को भाई।
सिद्धों ने कर्म विनाशे, फिर आतम ज्ञान प्रकाशे॥46॥

ॐ ह्रीं नरम स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श रुक्ष भी गाया, जो नाम कर्म कहलाया।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, चिद्रूप अमल अविनाशी॥47॥

ॐ ह्रीं रुक्ष स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

चिककड़ स्पर्श बखाना, यह जैनागम से माना।
सिद्धों ने कर्म विनाशे, निज आतम ज्ञान प्रकाशे॥48॥

ॐ ह्रीं स्निग्ध स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा छन्द)

पावें खट्टा स्वाद, नाम कर्म के उदय से।
नाश कर्म के बाद, बन जाते हैं सिद्ध जिन॥49॥

ॐ ह्रीं अम्ल रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पावें मीठा स्वाद, नाम कर्म के उदय से।
रखना भाई याद, नाश किए मुक्ती मिले॥50॥

ॐ ह्रीं मिष्ठ रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

कटुक प्राप्त हो स्वाद, उदय कर्म यदि नाम हो।
होता है आहलाद, सिद्धों को अतिशय विशद॥51॥

ॐ ह्रीं कटुक रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाद कषायला प्राप्त, नाम कर्म के उदय से।
बने नाश कर आप्त, पार हुए संसार से॥52॥

ॐ ह्रीं कषायला रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

तिक्त स्वाद के साथ, प्राणी जीवें लोक में।
बनें लोक के नाथ, नाम कर्म को नाश कर॥53॥

ॐ ह्रीं तिक्त रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पावे जीव सुगन्ध, नाम कर्म के उदय से।
माने कुछ आनन्द, सिद्ध हीन उससे रहे॥54॥

ॐ ह्रीं सुगन्ध नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पाते हैं दुर्गन्ध, कर्मोदय से नाम के।
नाश किए प्रभु गंध, सिद्ध बने परमात्मा॥55॥

ॐ ह्रीं दुर्गन्ध नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-टप्पा)

कर्मोदय से नाम कर्म के, श्याम रंग भाई।
इस जग के सब प्राणी पाते, जो है दुखदायी।
कहा है आगम में भाई।

सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई॥56॥

ॐ ह्रीं श्याम वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

नीले रंग में रागादि है, अतिशय दुखदाई।
कर्मोदय से नाम कर्म के, मिलता है भाई॥

कहा है आगम में भाई।

सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई॥57॥

ॐ ह्रीं नील वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गति के जीव मरण कर, मानव गति जब पाते हैं।
पूर्व देह सम विग्रह गति की, आकृति में ही जाते हैं॥
यह मनुष्य गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश॥63॥

ॐ ह्रीं मनुष्य गत्यानुपूर्वी नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वस्वाहा।
मरण करें नर पशू लोक में, देव गती जब पाते हैं।
पूर्व देह सम विग्रह गति के, आकृति में ही जाते हैं॥
यह कही देव गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश॥64॥

ॐ ह्रीं देव गत्यानुपूर्वी नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्जः : नित देव मेरी...)

आक तूल सम नहीं हल्का, लोह सम भारी नहीं।
वह अगुरुलघु है कर्म भाई, जीव तन पावें कहीं॥
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥65॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघु नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
निज धात निज के अंग से हो, कर्म वह उपधात है।
अरिहन्त भी यह नाश करते, सिद्ध की क्या बात है॥
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥66॥

ॐ ह्रीं उपधात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
हो धात पर का शस्त्र से या, अग्नि से विष से जहाँ।
परधात जानो कर्म यह तुम, चैन न मिलता वहाँ॥
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥67॥

ॐ ह्रीं परधात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

उष्ण किरणे सूर्य सम हैं, मूल में जो शीत हैं।
 कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का भीत है॥

कर्म है यह नाम आतप, तीव्र दुखदायी महा।
 नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥68॥

ॐ ह्रीं आतप नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रमा सम शीत किरणे, मूल में भी शीत हैं।
 कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का भीत है॥

कर्म है यह नाम आतप, तीव्र दुखदायी महा।
 नाश कर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥69॥

ॐ ह्रीं उद्योत नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

उच्छ्वास अरु निःस्वास मिलता, कर्म के फल से अहा।
 घन घात कर्मों का अनादी, से स्वयं हमने सहा॥

अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
 हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥70॥

ॐ ह्रीं उच्छ्वास नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

गमन हो आकाश में शुभ, गती शुभ विहायस् कही।
 उदय से प्राणी जगत के, प्राप्त करते हैं सही॥

अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
 हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥71॥

ॐ ह्रीं प्रशस्त विहायोगति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

गमन प्राणी टेड़ा-मेड़ा, कर्म के कारण सभी।
 अशुभ विहायोगती जानो, कर्म बन्धन हो तभी॥

अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
 हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥72॥

ॐ ह्रीं अप्रशस्त विहायोगति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू-छन्द)

जीव एक तन पाने वाला, एक रहे जिसका स्वामी।
 नामकर्म प्रत्येक कहा यह, कहते हैं अन्तर्यामी॥

कर्म नाश यह किया प्रभू ने, तीन लोक में हुए महान्।
 अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भावसहित करते गुणगान॥73॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 एक देह को पाने वाले, हैं अनेक जिसके स्वामी।
 नामकर्म साधारण है यह, कहते जिन अन्तर्यामी॥

कर्म नाश यह किया प्रभु ने, तीन लोक में हुए महान्।
 अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भावसहित करते गुणगान॥74॥

ॐ ह्रीं साधारण नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वि इन्द्रिय आदि जीव आगम, में कहे हैं त्रस सभी।
 जो उदय से त्रस कर्म के फल, भोगते तन पा अभी॥

अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारण पर चलें॥75॥

ॐ ह्रीं त्रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जो पृथ्वी आदि देह पाते, लोक में प्राणी अहा।
 वह कर्मफल से रहे स्थिर, अतः स्थावर कहा॥

अब कर्म का हो नाश मेरा, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारण पर चलें॥76॥

ॐ ह्रीं स्थावर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव जो रोके रुके न, लोक में कोई कभी।
 वह नाम कर्म कहे गये हैं, सूक्ष्म आगम में सभी॥

अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारण पर चलें॥77॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्म नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव जो रोके रुके, स्थूल उनको जानिए।
 कर्मोदय से नाम होते, सभी यह पहिचानिए॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥78॥
 ॐ ह्रीं स्थूल नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जो पूर्णता की शक्ति पावें, देह में अपनी अहा।
 पर्याप्ति है यह कर्म भाई, जैन आगम में कहा॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥79॥
 ॐ ह्रीं पर्याप्ति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जो पूर्णता की शक्ति अपनी, देह में पाते नहीं।
 वे कर्मोदय से नाम के, अपर्याप्ति कहलाते वही॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥80॥
 ॐ ह्रीं अपर्याप्ति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

धातु अरु उपधातु जिसकी, देह में स्थिर रहे।
 वह नाम कर्म स्थिर कहा है, धात तन में कई सहे॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥81॥
 ॐ ह्रीं स्थिर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जिस देह में धातू तथा, उपधातु स्थिर न रहे।
 कष्ट अस्थिर नाम से कई, जीव तन में भी सहे॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥82॥
 ॐ ह्रीं अस्थिर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से देह में, अवयव बने सुन्दर सभी।
 शुभ कर्म भाई नाम है वह, पुण्य से मिलता कभी॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥83॥
 ॐ ह्रीं शुभ नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जिस देह के अवयव सभी, सुन्दर नहीं बनते कभी।
 वह कर्म जानो अशुभ भाई, लोक में अपना सभी॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥84॥
 ॐ ह्रीं अशुभ नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव का तन देख करके, प्रीति करते हैं सभी।
 वह कर्म भाई सुभग जानो, अप्रीति न धारें कभी॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥85॥
 ॐ ह्रीं सुभग नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

गुणगान से भी जीव जग के, प्रीति न धारें कभी।
 यह कर्म दुर्भग कहा भाई, सत्य यह मानो सभी॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥86॥
 ॐ ह्रीं दुर्भग नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी मधुर हो जीव की, वह कर्म सुस्वर जानिए।
 हो कर्मोदय से प्राप्त भाई, सत्य यह पहिचानिए॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥87॥
 ॐ ह्रीं सुस्वर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी मधुर न जीव की हो, कर्म दुस्वर है कहा।
 यह कर्मोदय से नाम के, प्राणी सदा पाता रहा॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥88॥

ॐ ह्रीं दुस्वर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो देह में शुभ कांति अनुपम, कर्म वह आदेय है।
 संसार धारी प्राणियों को, कहा जो उपादेय है॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥89॥

ॐ ह्रीं आदेय नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हों वर्ण नख मुख रुक्ष सारे, देह में कांति नहीं।
 अनादेय जानो कर्म यह तुम, श्रेष्ठ हो कोई नहीं॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥90॥

ॐ ह्रीं अनादेय नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणहीन का भी सुयश भारी, फैलता शुभ कर्म से।
 यह यशःकीर्ति कर्म जानो, प्राप्त होता धर्म से॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥91॥

ॐ ह्रीं यशःकीर्ति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणवान का भी सुयश भाई, लोक में होवे नहीं।
 अयशः कीर्ति कर्मोदय से, जन्म ले कोई कहीं॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥92॥

ॐ ह्रीं अयशःकीर्ति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवली के द्वय चरण में, जीव सम्यक्त्वी अहा।
 हो बन्ध तीर्थकर प्रकृति का, शास्त्र में ऐसा कहा॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥93॥

ॐ ह्रीं तीर्थकर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म है यह नाम भाई, बंध का आधार है।
 दुःख पाता जीव जग में, नहीं जिसका पार है॥
 अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
 हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥94॥

ॐ ह्रीं सर्व नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गोत्र कर्म विनाशक अर्घ्य)

(शम्भू छन्द)

स्व-पर निन्दा और प्रशंसा, करते जो जग के प्राणी।
 लघु वृत्ति से उच्च गोत्र हो, ऐसा कहती जिनवाणी॥
 गोत्र कर्म के नाश हेतु अब, सिद्धों को हम ध्याते हैं।
 विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर निन्दा अरु आत्म प्रशंसा, करते जो जग के प्राणी।
 नीच गोत्र का आस्व करते, ऐसा कहती जिनवाणी॥
 गोत्र कर्म के नाश हेतु अब, सिद्धों को हम ध्याते हैं।
 विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च नीच ये भेद गोत्र के, आगम में बतलाए हैं।
 झूला की भाँति हम झूले, बहुतक कष्ट उठाए हैं॥
 गोत्र कर्म के नाश हेतु अब, सिद्धों को हम ध्याते हैं।
 विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं उच्च-नीच गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अन्तराय कर्म विनाशक अर्थ)

दोहा

दाता देना चाहते, दे न पावें दान।

अन्तराय यह दान है, नाश किए भगवान्॥1॥

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

लेना चाहे लाभ जो, ले न पावें दान।

अन्तराय यह लाभ है, नाश किए भगवान्॥2॥

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग भोगना चाहते, भोग सकें न भोग।

अन्तराय यह भोग है, मैटे प्रभु यह रोग॥3॥

ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

चाह रहे उपभोग कई, मिले नहीं उपभोग।

अन्तराय उपभोग भी, मैटे जिन यह रोग॥4॥

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से वीर्य की, प्राणी करते हान।

यही वीर्य अन्तराय है, नाश किए भगवान्॥5॥

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पंच भेद बतलाए हैं, अन्तराय के खास।

आत्म शक्ति हो प्रकट, होवें कर्म विनाश॥6॥

ॐ ह्रीं सर्व अन्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

(सिद्धों के 8 मूलगुण)

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रभु ने पाया ज्ञान अनंत।

द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनंतानंत॥

भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ती की शुभ आश लिए।

कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥1॥

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशा, दर्शन पाए आप अनंत।

द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनंतानंत॥

भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ती की शुभ आस लिए।

कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥2॥

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय का नाश किए फिर, पाए अव्याबाध स्वरूप।

परम सिद्ध परमेष्ठी जिन के, पद में झुकते हैं शत् भूप॥

भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ती की शुभ आस लिए।

कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥3॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय मोहित करता है, उसका भी जो घात किए।

परम सिद्ध परमेष्ठी बनकर, सुख अनंत को प्राप्त किए॥

भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।

कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥4॥

ॐ ह्रीं अनंतसुखगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म के भेद चार हैं, उसका आप विनाश किए।

अवगाहन गुण पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए॥

भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ती की शुभ आस लिए।

कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥5॥

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म के भेद अनेकों, उनका प्रभु विनाश किए।

सूक्ष्मत्व सुगुण प्रगटाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए॥

भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ती की शुभ आस लिए।

कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥6॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्थं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म से जग के प्राणी, उच्च नीच पद पाते हैं।
 अगुरुलघु गुण गोत्र कर्म के, नाश किए प्रगटाते हैं॥
 भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ती की शुभ आस लिए।
 कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥7॥
 ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय कर्मों का कर्ता, विघ्न डालता कई प्रकार।
 वीर्यानन्त के धारी जिनको, वंदन मेरा बारम्बार॥
 भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ती की शुभ आस लिए।
 कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥8॥
 ॐ ह्रीं अनंतवीर्यत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- प्रभु नन्दन हम आपके, वन्दन करें त्रिकाल ।
 भाव सहित गाते यहाँ, प्रभु गुण की जयमाल ॥
 (ज्ञानोदय छन्द)

धन्य-धन्य प्रभु आप अलौकिक, देख रहे हो आतम राम ।
 ज्ञाता द्रष्टा अहो जिनेश्वर, परम ज्योति चित् आनन्द धाम ॥
 आभूषण रत्नत्रय पावन, जड़ आभूषण का क्या काम ।
 अविकारी निःशेष मोह से, वस्त्र शास्त्र का लेश ना नाम ॥1॥
 आप मुकुट हो तीन लोक के, स्वर्ण मुकुट से है क्या काम ।
 प्रभु त्रिलोक पति आप कहाते, फिर भी निज में है विश्राम ॥
 सदा निहारे जीव आपको, आप निहारे निज की ओर ।
 वीतरागता धन्य आपकी, प्रभुता का प्रभु ओर न छोर ॥2॥
 आप न कुछ देते भक्तों को, किन्तु आपसे लेते भक्त ।
 दर्शन कर उपदेश ग्रहण कर, बनें भ्रमर तव आशक्त ॥

संयम द्वारा स्वानुभूति कर, शिव पथ में लग जाते हैं ।
 अहो आप समता आश्रय से, निज प्रभुता प्रगटाते हैं ॥3॥
 भाते जो वैराग्य भावना, छोड़ परिग्रह वे जाते ।
 मुनि दीक्षा ले परम तपस्वी, निज स्वरूपता को पाते ॥
 घोर परीष्ठ उपसर्गों को, स्थिर होकर जो सहते ।
 ध्यान लीन होकर चेतन रस, में जो लीन सदा रहते ॥4॥
 क्षापक श्रेण्यारूप आप हो, कर्म घातिया नाश करे ।
 अल्प काल में ध्यान केबल से, केवल ज्ञान प्रकाश करें ॥
 दर्श आपका मंगलमय है, मंगल उत्तम शरण ललाम ।
 मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, चरण आपके विशद प्रणाम ॥5॥

सोरठा- ज्ञान माहि अवलोक, ज्ञान शरीरी देव को ।
 मिटे उपद्रव शोक, ज्ञानमयी आनन्द को ।
 ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जयमाला पूर्णर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिनवर चरण प्रसाद से, नाश होय सब कर्म ।
 स्वाभाविक प्रभुता जगे, होय जीव निष्कर्म ॥
 // इत्याशीर्वद //

सप्तम वलय

दोहा- पूज्य रहे नवदेवता, दोष रहित सर्वज्ञ ।
 पुष्पांजलि करते चरण, हे जिन तव पद अज्ञ ॥
 (अथ सप्तम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(मोतियादाम छन्द)

अकृत मनः सम्रम्भ क्रोध, मन गुप्तीधर के जगे बोध ।
 जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥1॥
 ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधसंरम्भमनोगुप्तये नमः अनर्धपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किए अकारित क्रोधनाश, गुप्तीधर मन में करें वास ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥2॥

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधसंरम्भनिर्विकल्पधर्मय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मन अनुमोदन कर क्रोध नाश, गुप्तीधर मन में करें वास ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥3॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसंरम्भसानंदधर्मय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अकृत मनः समारम्भ क्रोध, मन गुप्तिधर के होय रोध ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥4॥

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधसमारम्भपरमानंदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मनः अकारित कीन्हे क्रोध नाश, मन गुप्ती में ऋषि किए वास ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥5॥

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधसमारम्भपरमानंदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मन अनुमोदना ना रहा क्रोध, निज आत्म का ऋषि किए शोध ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥6॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसमारम्भपरमानंदसंतुष्टाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मनः अकृत कर आरम्भ त्याग, न रहा जगत से जिन्हें राग ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥7॥

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधारम्भस्वसंस्थानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मनः किए अकारित क्रोध नाश, जो किए दोष पूर्ण का नाश ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥8॥

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधारम्भबन्धसंस्थानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मन अनुमोदन कर क्रोध रोध, जो हृदय जगाए विशद बोध ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥9॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधारम्भसंस्थानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
ऋषि अकृत तज के पूर्ण मान, फिर बने गुणों की श्रेष्ठ खान ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥10॥

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसंरम्भसाधर्मय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो तजे अकारित मनः मान, वे संत जगाए विशद ज्ञान ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥11॥

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसंरम्भअनन्यशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
तज अनुमोदन ऋषि पूर्ण मान, फिर विशद जगाए स्वयं ध्यान ।
जिनराज किए जो पूर्ण त्याग, हम पूज रहे जो है विराग ॥12॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसंरम्भसुगुणभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अकृत मनोमान समारम्भ जानो, सुख आत्म गुणधर जिन सिद्ध मानो ।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥13॥

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसमारम्भसुखात्मगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अकारित मनोमान समारम्भ भाई, अनुपम अनन्य शरण सिद्धों ने पाई ।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥14॥

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसमारम्भअनन्यताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
नानुमोदित मान समारम्भ धारी, मनोनन्त वीर्यधर सिद्ध अविकारी ।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥15॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसमारम्भअनन्तवीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अकारित मनोमानारम्भ भाई, अनन्त सुख सिद्धों की पहिचान गाई ।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥16॥

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानारम्भअनन्तसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अकृत मनोमानारम्भ पाए, ज्ञानानन्त जिन सिद्ध स्वयं प्रगटाए ।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥17॥

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानारम्भअनन्तज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
नानुमोदित मनोमानारम्भी, गुणानन्त के सिद्ध प्रभु आलम्बी ।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥18॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानआरम्भअनन्तगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अकृत मनोमायासंरम्भ पाए, निज ब्रह्म स्वरूपी जिन सिद्ध गाए ।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥19॥

ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासंरम्भब्रह्मस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अकारित मनोमाया संरम्भ जानो, चेतना में रमण नित्य करते हैं मानो।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते॥20॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासंरम्भचैतन्यभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित मनोमाया संरम्भी, अनन्य स्वाभाव के सिद्ध अवलम्बी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते॥21॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायासंरम्भअनन्यस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत मनोमाया समारम्भ पाए, प्रभु स्वानुभूति रत जिन सिद्ध गाए।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते॥22॥
ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारंभस्यानुभूतिरताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
अकारित मनोमाया समारम्भधारी, प्रभु साम्य धर्म के बने हैं पुजारी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते॥23॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासमारंभसाम्यधर्मय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित माया समारम्भी, सिद्ध प्रभु हैं स्वयं गुरु गुणालम्बी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते॥24॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायासमारंभगुरुवे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत मनोमाया आरम्भ जानो, परम शांत गुण भोगी सिद्ध को मानो।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते॥25॥
ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारंभपरमशांताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
अकारित मनोमाया आरम्भ योगी, निराकुल परम रस चैतन्य भोगी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते॥26॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोमायारंभनिराकुलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

नानुमोदित मनोमाया आरम्भधर, सुखानन्त पाने वाले अनुपम अजर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥27॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायारंभअनन्तसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत मान लोभ संरम्भी जानिए, दृगानन्तधारी जिन को पहिचानिए।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥28॥
ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसंरम्भअनन्तदृगात्मने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।

मनो अकारित लोभ संरम्भी जिन कहे, दृगानन्द अन्तर में जिनके नित बहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥29॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसंरम्भदृगानन्दभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित मनोलोभ संरम्भ धर, सिद्धभाव को पाने वाले हैं अमर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥30॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसंरम्भसिद्धभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत मनोलोभ समारम्भ सिद्ध हैं, चिन्मय चित् स्वाभावी जगत प्रसिद्ध हैं।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥31॥
ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसमारंभचिद्वाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
अकारित मान लोभ समारम्भी जानिए, निराकार जिन सिद्धों को पहिचानिए।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥32॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसमारंभनिराकाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित मनो लोभ समारम्भिया, रहे आप साकार यही निश्चय किया।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥33॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसमारंभसाकाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत मनोलोभ आरम्भ जिन कहे, चिदानन्द चिद्रूपी अविनाशी रहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥34॥
ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभचिदानंदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
मनो अकारित लोभारंभी जिन प्रभु, चिदानन्द चिन्मय स्वरूपी हे विभु।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥35॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभारंभचिन्मयस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित मनोलोभ आरम्भ धर, निज स्वरूप में लीन रहे हैं सिद्धवर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥36॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभारंभस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन क्रोध समरम्भी सिद्ध हैं, वाग्मुप्ति के धारी जगत प्रसिद्ध है।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्थ्य चढ़ाने लाए हैं॥37॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसंरभवाग्मुप्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित क्रोध संरम्भी जिन कहे, निज स्वरूप में लीन सिद्ध अनुपम रहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥38॥
ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसंरभस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित वचन क्रोध संरम्भया, प्राप्त स्वानुभव लघ्डि का जिनने किया।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥39॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसंरभस्वानुभवलब्धये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन क्रोध समारम्भ धर, स्वानुभूति कर प्राणी होते हैं अमर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥40॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसमारंभस्यानुभूतिस्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचन अकारित क्रोध समारम्भी कहे, नर साधारण धर्म प्राप्त करते रहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥41॥
ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसमारंभसाधारणधर्मय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित वचन क्रोध समारम्भ धर, परम शांत शिव पाते हैं जिन सिद्धवर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥42॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसमारंभपरमशांताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

वैर कटु वचनों से होवे, आरंभाकृत शांति खोवे।
क्षमा धर्म परमामृत धारी, तुष्टीय पाते हैं अविकारी॥43॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधारंभपरमामृततुष्टाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचनाकारित धारी प्राणी, क्रोधारम्भ रहित हो वाणी।
क्षमा धर्म समरसता धारी, शिव सुख पाते हैं अविकारी॥44॥
ॐ ह्रीं अकारितवचतक्रोधारंभसमरसाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित वचन सुनाएँ, क्रोधारम्भ नहीं जो पाएँ।
परम प्रीति धारी मनहारी, शिव सुख पाते हैं अविकारी॥45॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधारंभपरमप्रीतये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन मान संरम्भी, हीन परिग्रह या आरम्भी।
परम धर्म अविनश्वर धारी, शिव सुख पाते हैं अविकारी॥46॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसंरम्भअविनश्वरधर्मय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन मान संरम्भी जानो, स्वयं अकारित ही पहिचानो।
परमा धर्म अव्यक्त स्वरूपी, जिन अचिन्त्य अव्यय चिद्रूपी॥47॥
ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसंरम्भअव्यक्तस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचन मान संरम्भ नशाए, नानुमोदित जिन कहलाए।
दुर्लभ मार्दव धर्म स्वरूपी, जिन अचिन्त्य अक्षय चिद्रूपी॥48॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसंरम्भदुर्लभाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन मान के त्यागी, समारम्भ के न अनुरागी।
परम गम्य अविकारी गाए, प्राणी सिद्ध सुपद को पाए॥49॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसमारंभपरमगम्यनिराकाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचनाकारित मान नशाए, समारम्भ से रहित कहाए।
परम स्वभाव आपने पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया॥50॥
ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसमारंभपरमस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित वचन बताए, समारम्भ गत मान नशाए।
जो एकत्व सुगत कहलाए, अनुपम सिद्ध सुपद को पाए॥51॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसमारंभएकत्वसुगताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन मान आरम्भी, वचन कभी न कहते दम्भी।
धर्म राज स्वभावी गाए, परमात्म पद जिन प्रभु पाए॥52॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसमारंभपरमात्मधर्मराज धर्मस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचनाकारित मान विनाशी, हैं आरम्भ रहित अविनाशी।
जो शास्वत आनन्द जगाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए॥53॥
ॐ ह्रीं अकारितवचनमानारम्भशाश्वतानन्दाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित वचन निराले, मानारम्भ रहित गुण वाले।
अमृत पूरण आप कहाए, अनुपम निजानन्द सुख पाए॥54॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानारम्भअमृतपूरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन माया संरम्भी, रहित परिग्रह औ आरम्भी।
धर्मेकरूपा आप कहाए, गुण अनन्त तुमने प्रगटाए॥55॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासंरम्भअनन्तधर्मेकरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित माया धारी, समरम्भ रहित अविकारी ।
 अमृत चन्द्र कहे हैं स्वामी, मोक्ष पथ के है अनुगामी॥५६॥
 ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासंरभअमृतचन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।
 नानुमोदित वचन सुनाए, जो माया संरम्भी गाए ।
 अनेक मूर्ति कहलाए स्वामी, तीन काल के अन्तर्यामी॥५७॥
 ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासंरम्भअनेकमूर्तये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।
 वचनाकृत माया के धारी, कहे समारम्भी अविकारी ।
 नित्य निरंजन शांत स्वभावी, पूर्ण ज्ञान धारी अनगारी॥५८॥
 ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासमारंभनित्यनिरंजनस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल - टप्पा)

वचनाकारित माया समारम्भ, कहे गये भाई ।
 आत्मिक धर्म प्राप्त कीन्हें हैं, जिनवर सुखदायी॥
 सिद्ध जिन पूजो हो भाई ।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥५९॥
 ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासमारंभआत्मैकधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।
 परम सूक्ष्म जिन सिद्ध श्री की, महिमा शुभ गाई ।
 नानुमोदित वचन माया, समारंभ सहित भाई ॥
 सिद्ध जिन पूजो हो भाई ।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥६०॥
 ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासमारंभपरमसूक्ष्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।
 अकृत वचन माया आरम्भी, सिद्ध कहे भाई ।
 अनन्तावकाश रूप सिद्धों की, फैली प्रभुताई ॥
 सिद्ध जिन पूजो हो भाई ।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥६१॥
 ॐ ह्रीं अकृतमायारम्भअनन्तावकाशाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।
 वचनाकारित माया आरम्भी, जिनवर सुखदायी ।
 अमल गुणों के कोष प्रभु की, महिमा दिखलाई॥

सिद्ध जिन पूजो हो भाई ।

सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥६२॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायारंभअमलगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन माया, आरम्भ युक्त भाई ।

निज में निज से लीन हुए फिर, निराबाध सुख पाई ॥

सिद्ध जिन पूजो हो भाई ।

सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥६३॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायारम्भनिरवधिसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन लोभ संरम्भी, व्यापक धर्म पाई ।

सरल गति संतोषी अनुपम, होती सुख दायी ॥

सिद्ध जिन पूजो हो भाई ।

सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥६४॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसंरम्भव्यापकधमय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित लोभ संरम्भी, व्यापक गुण भाई ।

पाने वालों की इस जग में, फैली प्रभुताई ॥

सिद्ध जिन पूजो हो भाई ।

सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥६५॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसंरम्भव्यापकगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन लोभ, संरम्भ युक्त भाई ।

अचल धर्मधारी कहलाए, भविजन सुखदायी ॥

सिद्ध जिन पूजो हो भाई ।

सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥६६॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसंरभअचलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन लोभ समारम्भी, निरावलम्ब धारी ।

चिदानंद चैतन्य स्वरूपी, जग में शुभकारी ॥

सिद्ध जिन पूजो शुभकारी ।

सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥६७॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसमारंभनिरालंबाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित लोभ समारम्भ, संयुत अनगारी ।
 सिद्धशिला पर सिद्ध निराश्रय, गाये शुभकारी ॥
 सिद्ध जिन पूजो शुभकारी ।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी ॥६८ ॥
 ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसमारंभनिराश्रय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।
 नानुमोदित वचन लोभ युत्, समारम्भ धारी ।
 अक्षय सिद्ध अखण्ड अरुपी, पावन मनहारी ॥
 सिद्ध जिन पूजो शुभकारी ।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी ॥६९ ॥
 ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसमारंभअखण्डाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।
 अकृत वचन लोभ आरम्भी, जिन मंगलकारी ।
 परीत अवस्था धारी अनुपम, जन-जन मनहारी ॥
 सिद्ध जिन पूजो शुभकारी ।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी ॥७० ॥
 ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभारंभपरितावस्थाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।
 वचनाकारित लोभारम्भी, श्री जिन गुणधारी ।
 समयसार के सार रूप हैं, पावन अनगारी ॥
 सिद्ध जिन पूजो शुभकारी ।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी ॥७१ ॥
 ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभारम्भसमयसाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।
 नानुमोदित वचनारम्भी, लोभ कषाय धारी ।
 नित्य निरन्तर, सुखानन्तमय, दर्श ज्ञान कारी ॥
 सिद्ध जिन पूजो शुभकारी ।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी ॥७२ ॥
 ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभारम्भनिरंतराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।
 अकृत क्रोध काय समरम्भी, काय गुप्तिधारी ।
 अजर अमर पद पाने वाले, भविजन हितकारी ॥
 सिद्ध जिन पूजो शुभकारी ।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी ॥७३ ॥
 ॐ ह्रीं अकतकायकोधसंभकायगप्तये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

काय क्रोध संरम्भाकारित, अतिशय शुभकारी।
 ज्ञान शरीरी कर्मरहित जिन, शुद्ध काय धारी॥
 सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
 सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥74॥
 ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसरंभशुद्धकायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध्य-जोगीरासा)

नानुमोदित काय क्रोध युत, संरम्भ काय धर पाए।
 सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी, के गुण हमने गाए॥75॥
 ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधसमरंभअकायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।
 अकृत काय क्रोध समारम्भी, स्वान्वयगुण के धारी।
 स्वाभाविक गुण प्राप्त सिद्ध की, महिमा है न्यारी॥76॥
 ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसमरंभस्वान्वयगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।
 काय क्रोध समारम्भाकारित, है अनुपम गुण वाले।
 विशद भावरत सिद्ध श्री जिन, जग में रहे निराले॥77॥
 ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसमारम्भभावरतये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।
 नानुमोदित काय क्रोध युत, समारम्भ के धारी।
 सिद्ध स्वान्वय धर्म स्वभावी, अनुपम है गुण धारी॥78॥
 ॐ ह्रीं नानुमोदिकायक्रोधसमारंभसान्वयधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।
 अकृत काय क्रोधारम्भी, शुद्ध द्रव्य रत जानो।
 सिद्ध आठ गुण धारी पावन, शुद्ध स्वरूपी मानो॥79॥
 ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधारंभशुद्धद्रव्यरताय नमः अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।
 कायाकारित क्रोधारम्भी, सिद्ध प्रभु जी गाए।
 जो संसारच्छेदक जानो, सबके मन को भाए॥80॥
 ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधारंभसंसारच्छेदकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।
 कायारम्भ में क्रोधानुमोदन में न, हर्ष विषाद धारें।
 जैन धर्म अनुसार क्रिया कर, सर्व दोष परिहारें॥81॥
 ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधारंभजैनधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्द्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित संरम्भ कार्य कृत, तन से रचना त्यागें।
स्वस्वरूप के गोपन में ही, नित्य प्रति जो लागें॥82॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमानसंरंभस्वरूपगुप्तये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मानोदय संरम्भ विधि जो, नहीं देह से करते।
निज कृत कर्म करे नित ज्ञानी, सब विकार जो हरते॥83॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमानसंरंभनिजकृतये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मान सहित संरम्भ कार्य में, नहीं देह से धारें।
ध्यान योग से ध्येय भाव धर, निज के गुण में लागें॥84॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसंरम्भध्येयभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तन से मान युक्त होकर न, समारम्भ को पावें।
परमाराधन करने वाले, शुद्ध भावना भावें॥85॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमानसमारंभपरमाराधनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तन से मद युत समारम्भ न, कभी धारने वाले।
ज्ञानानन्द गुणी मतवाले, जग से रहे निराले॥86॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमानसमारम्भआनंदगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तन से समारम्भ की विधि में, हर्ष मान परिहारें।
स्वानन्दानन्दित हो करके, संयम रत्न सम्हारें॥87॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसमारम्भस्वानन्दिताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत काय मान आरम्भी, अनुपम हैं शुभकारी।
निजानन्द संतोषी प्राणी, जग में मंगलकारी॥88॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमानारम्भसंतोषाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कायारम्भ अकारित मानी, स्वस्वरूप रत गाये।
उनके गुण से प्रीत धार नर, तन मन से हर्षाए॥89॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमानारम्भस्वरूपरताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मानारम्भ अनंदित देही, विमल शुद्ध पर्यायी।
नानुमोदित मानारम्भी कहे, सिद्ध जिन भाई॥90॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानारम्भशुद्धपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत काय माया संरम्भी, अमृत गर्भ के धारी।
तन मन से जो शुद्ध कहाए, संत सहज शुभकारी॥91॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासंरम्भमृतगर्भाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माया युत संरम्भ देह से, कभी न करने वाले।
मुख्य धर्म चैतन्य स्वरूपी, जग में रहे निराले॥92॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमायासंरम्भचैतन्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माया युत संरम्भ देह से, नानुमोदित धारी।
वीतराग समरसी भाव मय, अनुपम हैं अविकारी॥93॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासंरम्भसमरसीभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
समारम्भ माया के धारी, अकृत तन विच्छेदी।
भवछेदक निज पर के हैं जो, तन चेतन के भेदी॥94॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासमारम्भभवछेदकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
समारम्भ तन की कुटिलाई, भये अकारित स्वामी।
नानुमोदित स्वतंत्र धर्म युत, सिद्ध कहे शिवगामी॥95॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमायासमारंभस्वातंत्रधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माया युत निज देह के द्वारा, करते न आरम्भ कभी।
नानुमोदित गुण के धारी, धर्मसमूही सिद्ध सभी॥96॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासमारम्भधर्मसमूहाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निज देहाकृत माया प्रधान, आरम्भ रहित गुण के निधान।
परमात्म सुख में रहें लीन, इन्द्रिय आदि से हैं विहीन॥97॥

ॐ ह्रीं अकृत कायमायारम्भ परमात्मसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आरम्भ काय माया विहीन, हैं सिद्ध अकारित सर्वहीन।
निष्ठातम स्वस्थित हैं जिनेश, चरणों में वन्दन है विशेष॥98॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमाराम्भनिष्ठात्मने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित माया विहीन, आरम्भ काय चैतन्य लीन।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥99॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायारम्भचेतनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्भव लोभ नहि काय वान, चित् परिणति युत गुण के निधान ।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान ॥100॥

ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसंरम्भपरमवित्परिणताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
संरम्भाकारित देह लोभ, स्व समय लीन हैं रहित क्षोभ ।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान ॥101॥

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसंरम्भस्वसमयरताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
संरम्भ लोभ तन हर्ष हीन, जिन व्यक्त धर्म स्वसमय लीन ।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान ॥102॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसंरम्भव्यक्तधर्मय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
जिन लोभाकृत तन समारम्भ, प्रभु सिद्ध रहित हैं पूर्ण दम्भ ।
हैं नित्य सुखी जिनवर महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान ॥103॥

ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसमारम्भनित्यसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
निज लोभाकारित काय वान, जिन समारम्भ की किए हान ।
जो रहित पूर्णतः हैं कषाय, कहलाते जिनवर अकषाय ॥104॥

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसमारम्भअकषाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
हैं समारम्भ तन लोभहीन, अनुमोदन से जो हैं विहीन ।
शुभ शौच गुणी जिनवर महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान ॥105॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसमारम्भशौचगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
लोभाकृत कायारम्भवान, जो चिद् आत्म का करे भान ।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान ॥106॥

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभारम्भचिदात्मने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
जो लोभाकारित कायारम्भ, जिन आधार विराजे निरालम्ब ।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान ॥107॥

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभारम्भनिरालम्बाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
नानुमोदित तन लोभारम्भ, निज आत्म निरत हैं हीन दम्भ ।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान ॥108॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभारम्भआत्मरतसिद्धाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

10 जन्म के अतिशय (छंद-चाल)

है जन्म का अतिशय भाई, तन 'स्वेद रहित' सुखदायी ।

हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥1॥

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आहार प्रभू जी पाते, किन्तु 'निहार' न जाते ।

हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥2॥

ॐ ह्रीं निहाररहित सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है 'श्वेत रक्त' शुभकारी, वात्सल्य की महिमा धारी ।

हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥3॥

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'समचतुष्क संस्थान' पावें, वह सुन्दरता प्रगटावें ।

हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥4॥

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'वज्रवृषभ संहनन' धारी, होते हैं जिन अविकारी ।

हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥5॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अतिशय स्वरूप' जिन पाते, हम जग में पूजे जाते ।

हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥6॥

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है 'तन सुगन्ध' सुखदायी, फैले जिसकी प्रभुताई ।

हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥7॥

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘इकसहस आठ’ शुभकारी, होते लक्षण के धारी ।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥८॥

ॐ ह्रीं एक हजार साठ लक्षण सहजातिशयधारक सर्वधातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जो ‘बल अतुल्य’ प्रगटाएँ, ना कभी पराजय पाएँ ।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥९॥

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक सर्वधातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘हितमितप्रिय जिन की वाणी’, है जग जन की कल्याणी ।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥१०॥

ॐ ह्रीं हित-मित-प्रिय-वचन सहजातिशयधारक सर्वधातिकर्म विनाशक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

दस ज्ञान के अतिशय (पाईता छंद)

होवे ‘सुभिक्षता’ भाई, सौ योजन में सुखदायी ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥११॥

ॐ ह्रीं गव्यूतिशत्चतुष्ट्य सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

हो ‘गगन गमन’ शुभकारी, इस जग में मंगलकारी ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥१२॥

ॐ ह्रीं आकाशगमन सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु के ‘मुख चार’ दिखावें, भवि प्राणी दर्शन पावें ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥१३॥

ॐ ह्रीं चतुरुर्ख सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

होते ‘अदया के त्यागी’, तीर्थकर जिन बड़भागी ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥१४॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘उपसर्ग’ नहीं हो पावें, जब केवल ज्ञान जगावें ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥१५॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘ना होते कवलाहारी’, केवल ज्ञानी अनगारी ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥१६॥

ॐ ह्रीं कवलाहार सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘प्रभु सब विद्याएँ पाएँ’, ईश्वर अतएव कहाएँ ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥१७॥

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘नखकेश वृद्धि ना पाते’, जब केवल ज्ञान जगाते ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥१८॥

ॐ ह्रीं नखकेशत्व सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अनिमिष दृग पावे’ स्वामी, प्रभु होते अन्तर्यमी ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥१९॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंदरहित सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

‘ना पड़ती जिन की छाया’, है केवल ज्ञान की माया ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥२०॥

ॐ ह्रीं छाया रहित सहजातिशय सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

देवोकृत अतिशय (चौपाई छंद)

‘अर्धमागधी भाषा’ जानो, अतिशय देवोकृत पहिचानो ।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देश विशद अतिशय दिखलाते॥२१॥

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

‘मैत्री भाव’ जगे सुखदायी, सब जीवों में मंगलदायी ।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देश विशद अतिशय दिखलाते॥२२॥

ॐ ह्रीं मैत्रीभाव देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘फल फलते सब ऋतु’ के भाई, प्रभु अतिशय पाते शिवदायी ।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देश विशद अतिशय दिखलाते॥२३॥

ॐ ह्रीं सर्वरुफलादि तरु परिणाम देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(पाइता छंद)

‘भू दर्पणवत्’ हो जावे, जहाँ प्रभु के पद पड़ जावें।
 प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥24॥

ॐ हीं आदर्शतम प्रतिमा रत्नमयी देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘वायू सुगन्ध’ सुखदायी, चलती है मंगलदायी ।
 प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥25॥

ॐ हीं सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जग में आनन्द’ समावे, आगमन प्रभु का पावें ।
 प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥26॥

ॐ हीं सर्वनन्दकरक देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

‘भूगत कंटक’ हो जाते, जिन के विहार में आते ।
 प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥27॥

ॐ हीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘हो गंधोदक की वृष्टी’, जाय हर्षमय सृष्टी ।
 प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥28॥

ॐ हीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पद तल में कमल’ रचाते, होवे विहार सुर आते ।
 प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥29॥

ॐ हीं चरणकमलवत रचित स्वर्ण कमल देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘हो गगन सुनिर्मल’ भाई, है देवों की प्रभुताई ।
 प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥30॥

ॐ हीं सर्वदिशा निर्मल देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सब ‘मेघ धूम खो जावे’, दिशा निर्मलता को पावे ।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥31॥

ॐ हीं शरदकालवन्निर्मलगग्न देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘आकाश में जयजय’ कारे, सुर आके बोले प्यारे ।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥32॥

ॐ हीं आकाशे जय-जयकार देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शुभ धर्म चक्र’ मनहारी, ले यक्ष चले शुभकारी ।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥33॥

ॐ हीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

वसु ‘मंगलद्रव्य’ सजावें, प्रभु की महिमा को गावें ।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥34॥

ॐ हीं अष्टमंगल द्रव्य देवोपुनीतातिशय धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

अष्ट प्रातिहार्य (सोरठा)

‘तरु अशोक’ सुखदाय, शोक निवारी जानिए ।

प्रातिहार्य कहलाय, समवशरण की सभा में॥35॥

ॐ हीं अशोक वृक्ष महाप्रातिहार्य सहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

शुभ ‘सिंहासन’ होय, रत्न जड़ित सुन्दर दिखे ।

अधर तिष्ठते सोय, उदयाचल सों छवि दिखे॥36॥

ॐ हीं सिंहासन वृक्ष महाप्रातिहार्य सहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

‘पुष्पवृष्टि’ शुभ होय, भाँति-भाँति के कुसुम से ।

महा भक्तिवश सोय, मिलकर करते देवगण॥37॥

ॐ हीं सुरपुष्पवृष्टि महाप्रातिहार्य सहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

‘दिव्य धवनि’ सुखकार, सुने पाप क्षय हो भला ।

पावें सौख्य पार, सुन नर पशु सब जगत के॥38॥

ॐ हीं अशोक वृक्ष महाप्रातिहार्य सहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

‘चौंसठ चॅवर’ दुरांय, प्रभु के आगे देवगण।
 भक्तिसहित गुण गाय, अतिशय महिमा प्रकट हो॥३९॥
 ॐ ह्रीं चामर महाप्रातिहार्य सहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 सप्त सु भव दर्शाय, ‘भामण्डल’ निज कांति से।
 महा ज्योति प्रगटाय, कोटि सूर्य फीके पड़ें॥४०॥
 ॐ ह्रीं भामण्डल महाप्रातिहार्य सहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 ‘देव दुंदुभि नाद’, करें देव भिलकर सुखद।
 करें नहीं उन्माद, समवशरण में जाय के॥४१॥
 ॐ ह्रीं देवदुंदुभि महाप्रातिहार्य सहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
 जड़ित सुनग ‘तिय छत्र’, तीन लोक के प्रभू की।
 दर्शाते सर्वत्र, महिमाशाली है कहा॥४२॥
 ॐ ह्रीं छत्रत्रय महाप्रातिहार्य सहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
अनन्त चतुष्टय (सखी छंद)
 हम ‘ज्ञानावरण’ नशाएँ, फिर केवल ज्ञान जगाएँ।
 हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥४३॥
 ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 हे ‘दर्शनावरण’ के नाशी, प्रभू केवल दर्श प्रकाशी।
 हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥४४॥
 ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 हम ‘मोहकर्म’ विनसाएँ, फिर सुख अनन्त प्रगटाएँ।
 हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥४५॥
 ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 अब ‘कर्मान्तराय’ नशाएँ, प्रभु बल अनन्त प्रगटाएँ।
 हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥४६॥
 ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्धों के आठ मूलगुण (चाल)
 प्रभु ‘ज्ञानावरणी कर्म’ नाश, फिर करें ज्ञानकेवल प्रकाश।
 अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥१॥
 ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ‘कर्म दर्शनावरण’ नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
 अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥२॥
 ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 जब करें ‘वेदनीय’ का विनाश, गुण अव्यावाध में करें वास।
 अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥३॥
 ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रभु ‘मोहकर्म’ से कहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
 अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥४॥
 ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 जिन ‘आयु कर्म’ का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
 अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥५॥
 ॐ ह्रीं आयु कर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रभु ‘नाम कर्म’ करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
 अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥६॥
 ॐ ह्रीं नाम कर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ना ‘गोत्रकर्म’ का रहा काम, गुण पाएँ अगुरुलघु रहा नाम।
 अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥७॥
 ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रभु ‘अन्तराय’ करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
 अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥८॥
 ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आचार्यों के ३६ मूलगुण के अर्घ्य
द्वादश तप के अर्घ (चाल छन्द)
 जो त्याग करें ‘आहारा’, उनने अनशन तप धारा।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥१॥
 ॐ ह्रीं अनशन तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप 'ऊनोदर' के धारी, होते हैं कम आहारी ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥२॥

ॐ ह्रीं ऊनोदर तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप 'व्रत परिसंख्यान' के धारी, संकल्प करें अनगारी ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥३॥

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'रस त्याग' सुतप के धारी, रस छोड़ें हो अविकारी ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥४॥

ॐ ह्रीं रस परित्याग तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप 'विविक्त शैय्यासन' धारी, हों अनाशक्त अनगारी ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥५॥

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्यासन तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप 'कायोत्सर्ग' के धारी, तजते ममत्व गुणधारी ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥६॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप 'प्रायश्चित' को पाते, वह अपने दोष नशाते ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥७॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनि 'विनय सुतप' के धारी, इस जग में मंगलकारी ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥८॥

ॐ ह्रीं विनय तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप 'वैय्यावृत्ति' धारें, वे संयम रत्न सम्हारें ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥९॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप 'स्वाध्याय' के धारी, चिन्तन करते अनगारी ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥१०॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'ट्युत्सर्ग' सुतप जो पावें, वे तन से नेह घटावें ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥११॥

ॐ ह्रीं ट्युत्सर्ग तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है 'ध्यान सुतप' के धारी, चिन्ता रोधी अवकारी ।
 हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥१२॥

ॐ ह्रीं ध्यान तपधारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दश धर्म के अर्घ (चाल छंद)

जो क्रोध कषाय नशाते, वे 'क्षमाधर्म' प्रगटाते ।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी॥१३॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जे मद को पूर्ण विनाशें, वे 'मार्दव धर्म' प्रकाशें ।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी॥१४॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो हैं माया के त्यागी, वे 'आर्जव' धर्मानुरागी ।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी॥१५॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो मन से लोभ हटावें, वे 'शौच धर्म' प्रगटावें ।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी॥१६॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है 'उत्तम सत्य' के धारी, ज्ञानी मुनिवर अनगारी ।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी॥१७॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो नहीं असंयम करते, वे 'संयम' में आरते ।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी॥१८॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'इच्छा निरोध' के धारी, तप धारी हों अनगारी ।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी॥१९॥

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो सर्व परिग्रह त्यागे, वे त्याग धर्म में लागे।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी ॥२०॥
 ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 जो पूर्ण राग विनशावे, आकिञ्चन धर्म जगावे।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी ॥२१॥
 ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 जो आश्रव भाव ना पावे, वे ब्रह्मचर्य प्रगटावे।
 आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी ॥२२॥
 ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म धारक श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार के अर्घ

(मोतियादाम छंद)

साधु जो पाएँ ‘दर्शनाचार’, कहाएँ परमेष्ठी आचार्य।
 चरणमेंजिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल ॥२३॥
 ॐ ह्रीं दर्शनाचार गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 पालते हैं जो ‘ज्ञानाचार’, विशद परमेष्ठी वे आचार्य।
 चरणमेंजिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल ॥२४॥
 ॐ ह्रीं ज्ञानाचार गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 धारते ऋषि ‘चारित्राचार’ धर्म का निशदिन करें प्रचार।
 चरणमेंजिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल ॥२५॥
 ॐ ह्रीं चारित्राचार गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 धारने वाले ‘वीर्याचार’, गुरु हैं जग में मंगलकार।
 चरणमेंजिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल ॥२६॥
 ॐ ह्रीं वीर्याचार गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 सुतप पाले जो ऋषि अनगार, कहाएँ वे पावन आचार्य।
 चरणमेंजिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल ॥२७॥
 ॐ ह्रीं तपाचार गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्ति के अर्घ (मोतियादाम छंद)
 संत जो हैं ‘मन गुप्ति’ वान, करें आचार्य जगत कल्याण।
 चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल ॥२८॥
 ॐ ह्रीं चारित्राचार प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 ‘वचन गुप्ति’ धारी ऋषिराज, करें आचार्य सफल सब काज।
 चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल ॥२९॥
 ॐ ह्रीं वचनगुप्ति प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 ‘काय गुप्ति’ धारी जिन संत, करें आचार्य कर्म का अंत।
 चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल ॥३०॥
 ॐ ह्रीं कायगुप्ति प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक के अर्घ (सखी छंद)

जो ‘समता’ हृदय जगाएँ, वे कर्म निर्जरा पाएँ।
 आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी ॥३१॥
 ॐ ह्रीं समता आवश्यक गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 ‘वन्दन’ आवश्यक धारी, होते बहु महिमा कारी।
 आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी ॥३२॥
 ॐ ह्रीं वन्दन आवश्यक गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 ‘स्तुति’ आवश्यक पावे, जिनवर की महिमा गावे।
 आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी ॥३३॥
 ॐ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 ‘स्वाध्याय’ आवश्यक धारी, हैं वीतराग अनगारी।
 आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी ॥३४॥
 ॐ ह्रीं स्वाध्याय आवश्यक गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 जो ‘प्रतिक्रमण’ करवावे, अपना कर्तव्य निभावे।
 आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी ॥३५॥
 ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि 'कायोत्सर्ग' लगावें, आचार्य सुपद को पावें।
आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी ॥३६ ॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यक गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उपाध्याय परमेष्ठी के 25 मूलगुण ग्यारह अंग के अर्घ (चौपाई छंद)

कथन करे आचार का भाई, 'आचारांग' कहा शिवदायी।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥१ ॥

ॐ ह्रीं आचारांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
'सूत्र कृतांग' सूत्र में जानो, कथन करे आगम का मानो।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥२ ॥

ॐ ह्रीं सूत्र कृतांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
स्थानों की चर्चा भाई, 'स्थानांग' में श्रेष्ठ बताई।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥३ ॥

ॐ ह्रीं स्थानांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
द्रव्यादिक का कथन बताया, 'समवायांग' शास्त्र में गाया।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥४ ॥

ॐ ह्रीं समवायांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
'व्याख्या प्रज्ञपती' शुभकारी, है विज्ञान मयी मनहारी।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥५ ॥

ॐ ह्रीं व्याख्या प्रज्ञपती अंगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
श्री जिन का वैभव दर्शाए, 'ज्ञातृधर्मकृतांग' कहाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥६ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञातृकथांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
श्रावक की चर्चा बतलाए, 'उपासकाध्यानांग' कहाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥७ ॥

ॐ ह्रीं उपासकाध्यानांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अतःकृत दशांग' कहलाए, उपसर्ग विजय की महिमा गाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥८ ॥

ॐ ह्रीं अंतःकृत दशांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
'अनुत्तरोपपादिक दशांग' कहो, कथन अनुत्तर का शुभ आए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥९ ॥

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपादकदशांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
प्रश्नोत्तर जिसमें बतलाए, 'प्रश्नव्याकरण' अंग कहाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥१० ॥

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
'विपाकसूत्र' शुभ अंग कहाए, पुण्य पाप का फल बतलाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे इस जग कल्याणी ॥११ ॥

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांग गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
चौदह पूर्व के अर्घ (चाल छंद)

'उत्पाद पूर्व' कहलाए, उत्पाद स्वरूप बताए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ॥१२ ॥

ॐ ह्रीं उत्पाद पूर्व गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
'अग्रायणीय पूर्व' कहो, स्व समय कथन बतलाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ॥१३ ॥

ॐ ह्रीं अग्रायणी पूर्व गुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
ज्ञानों का वर्णन कारी, है 'ज्ञान प्रवाद' शुभकारी।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ॥१४ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवाद पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
जो सत्यासत्य बताए, वह 'सत्य प्रवाद' कहाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ॥१५ ॥

ॐ ह्रीं सत्यप्रवाद पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
'आत्म प्रवाद' से जानो, शुभ आत्म द्रव्य पहिचानो।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ॥१६ ॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवाद पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो कर्म बन्ध को गाए, वह 'कर्म प्रवाद' कहाए।
 शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई॥19॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रवाद पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 है पापों का परिहारी, 'प्रत्याख्यान पूर्व' शुभकारी।
 शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई॥20॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 'विद्यानुवाद' में भाई, विद्या मंत्रों की गाई।
 शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई॥21॥

ॐ ह्रीं विद्यानुवाद पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 रवि चंद नक्षत्र कहाए, 'कल्याणवाद' कहलाए।
 शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई॥22॥

ॐ ह्रीं कल्याणनुवाद पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 शुभ 'प्राणावाद' में भाई, प्राणों की कथनी गाई।
 शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई॥23॥

ॐ ह्रीं प्राणावाद पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 शुभ काव्य शिल्प विद्याएँ, सब 'क्रियाविशाल' में आएँ।
 शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई॥24॥

ॐ ह्रीं क्रियाविशाल पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 शुभ 'लोकबिन्दु' कहलाए, व्यवहार अष्ट बतलाए।
 शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई॥25॥

ॐ ह्रीं लोकबिन्दुसार पूर्वगुणप्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 साधु के 28 मूलगुण (चौपाई छंद)

परम 'अहिंसा व्रत' के धारी, साधु होते हैं अनगारी।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥1॥

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रत सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 'सत्य महाव्रत' धारी गाए, पावन मोक्ष मार्ग अपनाए।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥2॥

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रत सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

'व्रताचौर्य' के धारी जानो, संयम पालन करते मानो।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥3॥

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रत सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 'ब्रह्मचर्य व्रत' धारी गाए, शिवमग चारी आप कहाए।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥4॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रत सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 'परिग्रह' चौबिस भेद बताए, जिससे विरहित साधू गाए।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥5॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 'ईर्या समिति' के धारी गाए, साधू रत्नत्रय को पाए।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥6॥

ॐ ह्रीं ईर्या समिति सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 'भाषा समिति' के धारी जानो, अविकारी साधू हों मानो।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥7॥

ॐ ह्रीं भाषा समिति सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 होते 'समिति ऐषणा' धारी, रत्नत्रय धारी अनगारी।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥8॥

ॐ ह्रीं ऐषणा समिति सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 'समिति आदान निक्षेपण' गाई, साधू पालन करते भाई।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥9॥

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समिति सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
 मुनि 'व्युत्सर्ग समिति' के धारी, भवि जीवों के करुणाकारी।
 सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते॥10॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतियादाम छंद)
 इन्द्रिय 'स्पर्शन' दुखकार, विजय करते जिस पे अनगार।
 चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥11॥

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विजयी सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

साधु हों 'रसना' के जयकार, साधना करते हो अविकार।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥१२॥

ॐ हीं रसना इन्द्रिय विजयी सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
'घ्राण इन्द्रिय' के मुनि जय जवान, करें निज पर का जो कल्याण।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥१३॥

ॐ हीं घ्राणेन्द्रिय विजयी सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
'चक्षु इन्द्रिय' पर विजय विशेष, करें धर परम दिगम्बर भेष।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥१४॥

ॐ हीं चक्षु इन्द्रिय विजयी सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
साधु 'कर्णेन्द्रिय' के जयजवान, लोक में जो हैं पूज्य महान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥१५॥

ॐ हीं कर्ण इन्द्रिय विजयी सहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
साधु होते हैं 'समतावान', करें निज आत्म का नित ध्यान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥१६॥

ॐ हीं समता आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
'वन्दना आवश्यक' कर्तव्य, पालते मुनिवर हैं जो भव्य।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥१७॥

ॐ हीं वन्दना आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
साधु 'स्तुति' गुण पालें आप, नशाने वाले जग के पाप।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥१८॥

ॐ हीं स्तुति आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
करे मुनिवर नित 'प्रत्याख्यान', विशद करते निज आत्म ध्यान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥१९॥

ॐ हीं प्रत्याख्यान आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
रहा गुण 'प्रतिक्रमण' शुभकार, क्षमा के धारी मुनि अनगार।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥२०॥

ॐ हीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा।
साधु होते हैं 'समतावान', करें निज आत्म का नित ध्यान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्द्ध, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्द्ध॥२१॥

ॐ हीं समता आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
‘वन्दना आवश्यक’ कर्त्तव्य, पालते मुनिवर हैं जो भव्य ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ॥17॥

ॐ हीं वन्दना आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
साधु ‘स्तुति’ गुण पालें आप, नशाने वाले जग के पाप ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ॥18॥

ॐ हीं स्तुति आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
करे मुनिवर नित ‘प्रत्याख्यान’, विशद करते निज आत्म ध्यान ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ॥19॥

ॐ हीं प्रत्याख्यान आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
रहा गुण ‘प्रतिक्रमण’ शुभकार, क्षमा के धारी मुनि अनगार ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ॥20॥

ॐ हीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
धारते हैं मुनि ‘कायोत्सर्ग’, सहें परिषय मुनिवर उपसर्ग ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ॥21॥

ॐ हीं कायोत्सर्ग आवश्यक गुणप्राप्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मुनि ‘केशलुंच’ गुणधारी, होते पावन अविकारी ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ॥22॥

ॐ हीं केशलुंचन गुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मुनि ‘चेल रहित’ कहलाए, वस्त्रों से राग हटाए ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ॥23॥

ॐ हीं वस्त्रत्याग गुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मुनि ‘अस्नान’ गुण धारी, होते हैं करुणाकारी ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ॥24॥

ॐ हीं अस्नान गुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
‘क्षिति शयन’ मूलगुण पाते, भोगों से राग घटाते ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ॥25॥

ॐ हीं भूमिशयन गुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दातुन 'मन्जन के त्यागी', मुनि मुक्ती पद अनुरागी ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥२६॥

ॐ ह्रीं अदन्तधावन गुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनि 'एक भुक्ति' के धारी, संयम पालें अविकारी ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥२७॥

ॐ ह्रीं एक भुक्ति गुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

साधू 'स्थित आहारी', होते हैं ब्रह्म विहारी ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥२८॥

ॐ ह्रीं स्थितिभुक्ति गुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चाल छन्द)

रत्नत्रय शुभ धर्म कहाए, मोक्ष मार्ग पावन कहलाए ।
भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी, भाव सहित हम पूजें भाई ॥४४॥

ॐ ह्रीं श्री जिन धर्मामाय नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ग्यारह अंग रूप जिनवाणी, अंग प्रविष्टि कहते ज्ञानी ।
भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी, भाव सहित हम पूजें भाई ॥४५॥

ॐ ह्रीं अंग प्रविष्टि रूप जिन आगमाय नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंग बाह्य जिनवाणी गाई तत्त्व ज्ञान हो जिससे भाई ।
भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी, भाव सहित हम पूजें भाई ॥४६॥

ॐ ह्रीं अंग बाह्य रूप जिन आगमाय नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वीतराग जिनकी प्रतिमाएँ, पावन मुक्ति पथ दशाएँ ।
भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी, भाव सहित हम पूजें भाई ॥४७॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्येभ्यो नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनगृह जिन चैत्यालय जानो, जगत पूज्य होते जो मानो ।
भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी, भाव सहित हम पूजें भाई ॥४८॥

ॐ ह्रीं श्री जिन चैत्यालयेभ्यो नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- पंथी मन मन्थी मथन, कथन है अगम अपार ।
जयमाला गाते विशद, पाने भव से पार ॥

हे सिद्ध प्रभु अविकार, जगत हितकारी ।
तुम करो मेरा कल्याण, है मेरी बारी ॥

जो स्व-पर भेद विज्ञान, निरन्तर करते ।
वे काल अनादि मिथ्या, मति को हरते ॥१॥

जो शांत स्वरूपी श्री जिन, दर्शन करते ।
वे जीव स्वयं भी शुभ, भावों से भरते ॥

शुभ भाव बनाकर संयम भाव जगाते ।
हो महाद्रती निर्गन्थ अवस्था पाते ॥२॥

ऊँ चे से ऊँ चा पुण्य, भाव का होना ।
निज अनुभव बिन बीज, विभव का बोना ॥

जिनवर जिनवाणी जिनवर यह गाते ।
निज आत्म ध्यान बिन जीव न मुक्ति पाते ॥३॥

जो पुण्य भाव को छोड़, पाप उपजाते ।
वे पाप के फल से, दुर्गति में ही जाते ॥

है सत्य सनातन सिद्ध, प्रभु अविकारी ।
जिन की अर्चा कर भरो पुण्य की क्यारी ॥४॥

जो रत्नत्रय धार ज्ञान प्रगटाए ।
तप करके द्वादश सारे कर्म नशाए ।

जो सुविधि मोक्ष की चलकर स्वयं बताए ।
फिर सिद्ध शिला पे अविनाशी सुख पाए ॥५॥

दोहा- सिद्ध प्रभु जी आपको, पूजे जो मन लाय ।
शुद्धात्म को प्राप्त कर, स्वयं सिद्ध हो जाय ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन चैत्यालयेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- करें वन्दना सिद्ध की, करें भाव से ध्यान ।
मुक्ति का राही बने, करे स्व-पर कल्याण ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

सप्तम पूजा

स्थापना

अर्हदादि नव पूज्य कहे है, रहित कर्म के हेतु प्रधान ।
परम सिद्ध पद पाने वाले, उनके पथगामी गुणवान् ॥
उन सबकी पूजा करने हम, करते भाव सहित आह्वान ।
विशद भावना भाते हैं प्रभु, होय जगत जन का कल्याण ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम् सन्निहितो वषट् सन्निधिकरणं ।

चौपाई

निर्मल नीर चढ़ाने लाए, जन्मादिक रुज हरने आए ।
श्री जिन सिद्धों को हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते ॥1॥
ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः जन्म-जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा ।
सुरभित चंदन यहाँ चढ़ाए, भव रोगों से मुक्ति पाए ।
श्री जिन सिद्धों को हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते ॥2॥
ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा ।
अक्षत चरण चढ़ा हर्षाए, अक्षय पदवी को हम पाएँ ।
श्री जिन सिद्धों को हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते ॥3॥
ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा ।
सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग को हरने आए ।
श्री जिन सिद्धों को हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते ॥4॥
ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः कामबाणविद्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा ।
यह नैवेद्य चढ़ाते भाई, क्षुधा रोगनाशी शिवदायी ।
श्री जिन सिद्धों को हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते ॥5॥
ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा ।
पावन घृत का दीप जलाते, मोहनाश को यहाँ चढ़ाते ।
श्री जिन सिद्धों को हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा ।
धूप अग्नि में खेने लाए, कर्म आठ हम हरने आए ।
श्री जिन सिद्धों को हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते ॥7॥
ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
फल यह चढ़ा रहे मनहारी, पावन मोक्ष महाफलकारी ।
श्री जिन सिद्धों को हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते ॥8॥
ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
अर्घ्य चढ़ाते यह शुभकारी, विशद प्राप्त हो पद अविकारी ।
श्री जिन सिद्धों को हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते ॥9॥
.....
.....

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- सिद्ध प्रभु आराधना, के है शुभ आधार ।
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव का द्वार ॥
(पद्मांडि छन्द)

मिथ्यात्व मूल भव भ्रमण नाश, पाए प्रभुवर चेतन प्रकाश ।
जग विभव विभाव आसार मान, सब त्याग पाए हैं भेद ज्ञान ॥1॥
साधे जिनवर शुद्धोप योग, पावन संयम धारे मनोग ।
जिनराज निजातम हुए लीन, फिर हुए सहज ही स्वाधीन ॥2॥
जब स्वयं बुद्ध अविरुद्ध शुद्ध, जय उमा रमा उपमा विरुद्ध ।
जय अजय अभय अक्षय अनाथ, जय विमल निरामय निराबाध ॥3॥
जय भव्य कुमुद शशिभा अखण्ड, जय परम धरम धारा प्रचण्ड ।
जय वज्र दण्ड विधि शैल खण्ड, जय मारवार हन मारदण्ड ॥4॥

जय जन्म मर्ण मय हरण काज, तुम जन्म निवारक जगतराज ।
 जय सुखकारण टारन कलेश, तुम बिन न कोय जग में जिनेश ॥५॥

तुम इच्छा बिन इच्छा निवार, हो खेद रहित हो खेद टार ।
 प्रभु अर्ज सुनो मेरी अवार, मम चित्त चहे तव गुणन सार ॥६॥

हे भव सिन्धु के तरण हार, अब करो नाथ ! भव सिन्धु पार ।
 हम चंदन करते बार-बार, अब हो निज पद में मम विहार ॥७॥

दोहा- मृत्युंजयी पदवी मिले, है मेरा ये लक्ष्य ।
 पूजा करते हैं 'विशद' होके आत्म दक्ष ॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिनः जयमाला पूर्णार्थ्य अर्थ्य निर्व.स्वाहा ।

दोहा- करते हैं हम अर्चना, विनयभाव के साथ ।
 शिवपद पावे शीघ्र ही, झुका रहे पद माथ ॥

// इत्याशीर्वादी //

अष्टम पूजा

स्थापना

सहस्राष्ट गुण के धारी जिन, सहस्राष्ट पावे शुभनाम ।
 सर्व कर्म से रहित जिनेश्वर, सिद्ध शिला पर जिनका धाम ॥

जिनकी अर्चा करने को हम, भाव सहित करते आह्वान ।
 नवकोटि से श्री जिनेन्द्र का, करते हैं हम भी गुणगान ॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्ध परमेष्ठिनः ! अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वानन । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम् सन्निहितो वषट् सन्निधिकरण ।

(चन्द रेखता)

शुभ नीर कलश में लाए, जिन चरण में चढ़ाने आए ।
 सहस्रनाम सिद्धि प्रदायी, हम पूज रहे हैं भाई ॥१॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्ध परमेष्ठिनः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा ।
 के शर से गंध बनाए, भव ताप नशाने आए ।

सहस्रनाम सिद्धि प्रदायी, हम पूज रहे हैं भाई ॥२॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्ध परमेष्ठिनः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा ।
 अक्षत पूजा को लाए, अक्षय पद पाने आए ।

सहस्रनाम सिद्धि प्रदायी, हम पूज रहे हैं भाई ॥३॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा ।
 पावन ये पुष्प चढ़ाएँ, अब काम रोग विनसाएँ ।

सहस्रनाम सिद्धि प्रदायी, हम पूज रहे हैं भाई ॥४॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्ध परमेष्ठिनः कामबाणविद्यंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा ।
 चरू सरस चढ़ा हर्षाएँ, अब क्षुधा से मुक्ति पाएँ ।

सहस्रनाम सिद्धि प्रदायी, हम पूज रहे हैं भाई ॥५॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्ध परमेष्ठिनः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा ।
 पावन ये दीप जलाए, हम मोह नशाने आए ।

सहस्रनाम सिद्धि प्रदायी, हम पूज रहे हैं भाई ॥६॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्ध परमेष्ठिनः मोहान्धकारविनाशनाय निर्व.स्वाहा ।

यह अग्नि में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ ।
 सहस्रनाम सिद्धि प्रदायी, हम पूज रहे हैं भाई ॥7॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्धि परमेष्ठिः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 श्री फल यहाँ चढ़ाएँ, अब मोक्ष महाफल पाएँ ।
 सहस्रनाम सिद्धि प्रदायी, हम पूज रहे हैं भाई ॥8॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्धि परमेष्ठिः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 पावन ये अर्द्ध बनाए, पाने अनर्द्ध पद लाए ।
 सहस्रनाम सिद्धि प्रदायी, हम पूज रहे हैं भाई ॥9॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट गुणधारक श्री सिद्धि परमेष्ठिः अनर्द्धपदप्राप्तये अर्द्ध निवृत्त्वा स्वाहा ।

अष्टम वलय

दोहा- सहस्राष्ट शुभ नाम है, श्री जिन के शुभकार ।
 ध्याते हैं जिन नाम जो, पाते भव से पार ॥
 (अथ अष्टम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(चाल छंद)

प्रभु है 'जिन' नाम के धारी, कहलाए 'जिनेन्द्र' अविकारी ।
 'जिनपूरण' आप कहाए, 'उत्तम जिन' शिव पद पाए ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री जिन, जिनेन्द्र, पूर्ण, जिनोत्तम, जिनेन्द्रेनमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर 'प्रतिष्ठ' कहलाए, प्रभु नाम 'जिनाधिप' पाए ।
 हे 'जिनाधीश' अविकारी, 'जिन स्वामी' मंगलकारी ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्ह प्रतिष्ठ, जिनाधिप, जिनाधीश, जिनस्वामी, जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।
 हे नाम 'जिनेश्वर' भाई, 'जिननाथ' है मंगलदायी ।
 'जिनपति' है अतिशयकारी, 'जिन प्रभव' आप मनहारी ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री जिनेश्वर, जिननाथ, जिनपति, जिनप्रभव, जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'जिनधिराज' शिवकारी, जिन 'विभव' आप अनगारी ।
 जिन 'भर्ता' आप कहाए, जिन 'तत्त्व प्रकाशी' गाए ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री जिनराज, विभव, भर्ता, तत्त्व प्रकाश जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।
 कहलाए 'कर्मजित' भाई, पावन 'जिनेश' शिवदायी ।
 "जिनराज" हैं शिव गामी, "जिन नेत्र" मोक्ष के स्वामी ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री कर्मजित, जिनेश, जिननायक, जिन नेत्र, जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।
 'जिनजेत्र' नाम शुभ पाए, 'परिदृढ़' जिनवर कहलाए ।
 'जिनदेव' नाम शुभ जानो, है नाम 'जिनेश्वर' मानो ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री जिनजेत्र, परिदृढ़, जिनदेव, जिनेश्वर जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।
 'जिन पालक' आप कहाए, 'अधिराज' नाश शुभ पाए ।
 'जिनशासनेशाय' कहाए, 'देवाधिदेव' शुभ गाए ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री जिनपालक, अधिराज, जिनशासक, देवाधिदेव जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।
 शुभ 'अद्वितीय' कहाए स्वामी, 'अधिनाथ' कहाए नामी ।
 'जिनेन्द्र विबंध' को ध्याएँ, "जिनचन्द्र" का ध्यान लगाए ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री जिनअद्वितीय, अधिनाथ, विबंध, जिनचन्द्र जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।
 हे 'जिनादित्य' जगनामी, 'जिनदीप्तरूप' शिवगामी ।
 'जिन कुञ्जर' नाम के धारी, पावन 'जिनार्क' अविकारी ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री जिनादित्य, जिनदीप्तरूप, जिनकुञ्जर, जिनार्क जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।
 'जिनधौर्य' धवल यश पाए, 'जिनधूर्य' नाम शुभ पाए ।
 जो कहे 'जिनोत्तम' जानो, 'दुखलोकनिवारक' मानो ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री जिनधौरेयाय, जिनधूर्य, जिनोत्तम, त्रिलोकदुःखनिवारक जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'जिनवर' आप कहाए, 'निःसंग' पूर्ण कहलाए ।
हे "जिनोद्वाह" जगनामी, "जिनवृषभ" मोक्षपथगामी ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनवर, निःसंग, जिनोद्वाह, जिनवृषभ जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'जिनधर्म' ध्वज के धारी, 'जिन रत्न' सुमंगलकारी ।
कहलाए "जिनोरस्स" ज्ञानी, पावन "जिनेश" शिवदानी ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनधर्म, जिनरत्न, जिनोरस, जिनेश जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'जिनदेव' 'जिनाग्र' कहाए, 'जिनशार्दुल' भी कहलाए ।
'जिनपुंगव' महिमाधारी, 'जिनप्रवेकाय' मनहारी ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनाग्र, जिनशार्दुल, जिनपुंगव, जिनप्रवेकाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'जिनहंस' आपको ध्याएँ, प्रभु 'जिनोत्तमसुखधर' गाए ।
'जिननायक' आप कहाए, प्रभु नाम 'जिनाग्रिम' पाए ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनहंस, जिनोत्तमसुखधर, जिननायक, जिनाग्रिम जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'जिनग्रामण' हे जग नेता, 'जिनसत्तम' कर्म विजेता ।
'जिनप्रभव' नाम को पाए, प्रभु 'परमजिनाय' कहाए ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनग्रामण, जिनसत्तम, जिनप्रभव, परमजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'जिनचतुर्गतिदुःखान्तक', है 'जिनश्रेष्ठ' कर्म के नाशक ।
'जिनज्येष्ठ' जगत हितकारी, 'जिनसुख' के हैं भण्डारी ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनचतुर्गतिदुःखान्तक, जिनश्रेष्ठ, जिनज्येष्ठ, जिनसुख जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन है 'जिनाग्र' शिवगामी, 'श्रीजिन' है सिद्ध स्वामी ।
कहलाए 'जिनोत्तम' भाई, 'जिनवृन्दारक' शिव दायी ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनाग्र, श्रीजिन, जिनोत्तम, जिनवृन्दारक जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अरिजित' है अरि के जेता, 'निर्विघ्न' मोक्ष के नेता ।
जिनराज 'विरज' कहलाए, प्रभु 'निरस्तमत्सर' भी गाए ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरिजित, निर्विघ्न, विरजसे, निरस्तमत्सर जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है 'शुद्ध' सुगुण के धारी, 'जिननायक' है अविकारी ।
'कर्मचन' आप कहलाए, 'घातीकर्मान्तक' गाए ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुद्ध, जिननायक, कर्मचन, घातीकर्मान्तक जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'जिनदीप्त' दीप्ति को ध्याए, प्रभु 'कर्ममर्मभिद' गाए ।
'अनुदय' जिनराज कहाए, शुभ 'वीतराग' गुण पाए ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनदीप्त, कर्ममर्मभिद, अनुदय, वीतराग जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अक्षुधा' क्षुधा परिहारी, 'अद्वेश' द्वेष विनिवारी ।
'निर्मोह' आप कहलाए, 'निर्दोष' दोष बिनशाए ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षुधा, अद्वेश, निर्मोह, निर्दोष जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अगदाय' नाम के धारी, 'निर्ममत्वाय' अविकारी ।
जिन 'वीततृष्णाय' कहलाए, जिनराज 'असंग' कहाए ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अगदाय, निर्ममत्व, वीततृष्ण, असंग जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'निर्भय' है भय परिहारी, 'अस्वप्न' धर्म के धारी ।
'निःश्रम' हैं श्रम निवारी, 'वीतविस्मय' मंगलकारी ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्भय, अस्वप्न, निःश्रम, वीतविस्मय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु नाम 'अजन्मा' पाए, 'निःसंशय' आप कहाए ।
'निर्जरा' है निर्जरकारी, 'अमराय' है विस्मयकारी ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजन्मने, निःसंशय, निर्जर, अमराय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो 'अरत्यतीत' कहाए, 'निश्चिंता' को पाए ।
 'निर्विष' है विष परिहारी, 'त्रिषष्ठि' कर्म निवारी ॥25॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरत्यतीत, निश्चिंता, निर्विष, त्रिषष्ठिजिते जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्णार्थ्य

जिन आदि नाम शत् गाए, प्रभु यथा गुण पाए ।
 हम जिन पद पूज रजाते, पद सादर शीश झुकाते ॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनादि शतनाम जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई)

श्री जिनवर 'सर्वज्ञ' कहाए, नाम 'सर्वविद' भी प्रभु पाए ।
 'सर्वदर्शि' दृष्टा कहलाए, 'सर्वालोक' ज्ञान में आए ॥1॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वज्ञ, सर्वविदे, सर्वदर्शिने, सर्वालोक जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 नाम 'अनन्तविक्रम' जिन पाए, 'अनन्तवीर्य' जिनवर कहलाए ।
 प्रभु 'अनन्तसुख' पाने वाले, 'अनन्तसौख्य' कहलाये निराले ॥2॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तविक्रम, अनन्तवीर्य, अनन्तसुख, अनन्तसौख्य जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 'विश्वज्ञान' ज्ञानी अविकारी, 'विश्वदर्शि' है विस्मप्रकारी ।
 'अखिलार्थदर्शी' मंगलकारी, 'निस्पक्षदर्शन' के जोधारी ॥3॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वज्ञान, विश्वदर्शी, अखिलार्थदर्शी, न्यक्षदृशे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 'विश्वचक्षु' शुभ के त्राता, हे 'अशेषविद' जग के ज्ञाता ।
 हे 'आनन्द' नाम के धारी, 'सदानन्दमय' हे अविकारी ॥4॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वचक्षु, अशेषविद्, आनन्द, सदानन्द जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम 'सदोदय' पाए स्वामी, 'नित्यानंद' कहे जगनामी ।
 'परमानंद' नाम के धारी, 'महानन्द' पावन अविकारी ॥5॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदोदय, नित्यानंद, परमानंद, महानन्द जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'परानन्द' को पाने वाले, 'परोदय' कहलाये निराले ।

'परमौजस' पावन उपकारी, जिनवर 'परमतेज' के धारी ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परानन्द, परोदय, परमौजस, परमतेज जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'परमधाम' जिनराज कहाए, 'परमहंस' जिनवर कहाए ।

हे 'प्रत्यक्ष ज्ञात' अविकारी, हे 'विज्ञानज्योति' शिवकारी ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमधाम, परमहंस, प्रत्यक्षज्ञात, विज्ञानज्योति जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'परम ब्रह्म' जिनराज निराले, 'परम रहस' शिव देने वाले ।

'प्रत्यक्षात्मन' महिमाकारी, है 'प्रबोधात्मना' शिवकारी ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्म, परमरहस, प्रत्यक्षात्मन, प्रबोधात्मन जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे 'महात्मन' मंगलकारी, 'आत्ममहोदय' महिमाधारी ।

'परमात्मन' को प्राणी ध्याएँ, 'प्रशान्तात्मन' की महिमा गाए ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महात्मन्, आत्ममहोदय, परमात्मन्, प्रशान्तात्मन जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर 'परमपरात्मन' गाए, 'आत्मनिकेतन' शिव पद पाए ।

'परमेष्ठी पदशीश झुकाएँ, 'महितात्मन' की महिमा गाए ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम परात्मन, आत्मनिकेतन, परमेष्ठी, महितात्मन जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'श्रेष्ठात्मन' ज्ञान प्रदायी, 'स्वात्मनिष्ठित' है शिवदायी ।

'ब्रह्मनिष्ठ' ब्रह्म को ध्याएँ, 'महाज्येष्ठ' ज्येष्ठ तम पाएँ ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेष्ठात्मन, स्वात्मनिष्ठित, ब्रह्मनिष्ठ, महाज्येष्ठ जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निरुद्धात्म’ नाम के धारी, हे ‘दृढ़ात्मन’ जग हितकारी ।
‘एक विद्या’ है सद् ज्ञानी, महा विद्या जग कल्याणी ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री निरुद्धात्म, दृढ़ात्मन, एकविद्याय, महाविद्याय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘‘महापदेश्वर’’ गाए, “‘पंचब्रह्म’” आप कहलाए ।
“‘सर्वाय’” सर्व श्रुत धारी, “‘सर्वविद्येश्वर’” अनगारी ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री महापदेश्वर, पंचब्रह्म, सर्वाय, सर्वविद्येश्वर जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शुचि’ है जग शौर्य प्रदायी, हे ‘अनन्त दीप्त’ शिवदायी ।
‘अनन्तात्म’ अनन्त गुणधारी, ‘अनन्तशक्ति’ संयमधारी ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री शुचि, अनन्तदीप्त, अनन्तात्म, अनन्तशक्ति जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘अनन्त दर्श’ को पाएँ, ‘अनन्त शक्ति’ आप जगाएँ ।
हे ‘अनन्त चिदेश’ हितकारी, ‘अनन्त मुद’ है महिमाकारी ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अनन्तदर्श, अनन्तशक्ति, अनन्तचिदेश, अनन्तमुद जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘सदाप्रकाश’ कहाए, ‘सर्वार्थ सिद्धिधर’ गाए ।
‘साक्षात्कारि’ जिन स्वामी, ‘समग्रद्वय’ है शिव पथगामी ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सदाप्रकाश, सर्वार्थसिद्धेभ्यो, साक्षात्कारिणे, समग्रद्वये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘कर्मक्षीण’ कहलाए ‘जगविद्धवंसी’ शिव पाए ।
‘अलक्षात्म’ नाम के धारी, ‘अचलस्थान’ है भवहारी ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री कर्मक्षीणाय, जगद्विधवंसिने, अलक्षात्मने, अचलस्थाने जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘निराबाध’ कहलाए, ‘अप्रतकर्यात्मन’ ज्ञान जगाए ।
प्रभु ‘धर्मचक्री’ है ज्ञानी, जिन कहे ‘विदाम्बर’ ज्ञानी ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री निराबाधाय, अप्रतकर्यात्मने, धर्मचक्रिणे, विदाबंराय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘भूतात्म’ आप कहलाए, ‘सहज ज्योति’ स्वयं प्रगटाए ।
‘विश्वज्योतिष’ नाम है जानों, कहलाए ‘अतीन्द्रिय’ मानों ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री भूतात्मने, सहजज्योतिषे, विश्वज्योतिषे, अतीन्द्रियाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

है ‘केवलाय’ केवल ज्ञानी, ‘केवलावलोक’ निज ध्यानी ।
‘लोकालोकावलोक’ गाए, जिनवर ‘विवृत’ कहलाए ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री केवलाय, केवलावलोकाय, लोकालोकावलोकाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘केवलावलोक’ कहाए, ‘अव्यक्त’ ज्ञान धर गाए ।
जिन ‘सर्वशरण’ को पाए, ‘अचिन्त्यविभव’ में रम जाए ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री केवलाय, अव्यक्ताय, सर्वशरणाय, अचिन्त्यविभवाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘विश्वभूत’ है नाम निराला, ‘विश्वरूपात्म’ है जग आला ।
‘विश्वात्मन’ आप कहाते, ‘विश्वतोमुख’ पूजे जाते ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री विश्वभूते, विश्वरूपात्मने, विश्वात्मने, विश्वतोमुखाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘विश्वव्यापी’ विश्व में छाए, ‘स्वयंज्योति’ आप जगाए ।
‘अचिन्त्यात्म’ नाम धर भाई, ‘अमितप्रभाव’ कहे विश्वदायी ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री विश्वव्यापिने, स्वयंज्योतिषे, अचिन्त्यात्मने, अमितप्रभावाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘महाबोध’ आप प्रगटाए, ‘महावीर्य’ ‘स्वयं’ ही गाए ।
‘महालाभ’ आपने पाया, ‘महोदयाय’ नाम शुभ गाया ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री महाबोधाय, महावीर्याय, महालाभाय, महोदयाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘महाभोगसुगत’ जिन ज्ञानी, ‘महाभोग’ योग वरदानी ।
‘अतुलवीर्य’ स्वयं प्रभु पाए, ‘यज्ञार्हाय’ आप कहाए ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री महाभोगसुगतये, महाभोगाय, अतुलवीर्याय, यज्ञार्हाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्णार्थ

(मोतियादाम छन्द)

कहाए 'भगवत्' भगवान्, करे हम 'अहंत' का गुणगान ।
 नाम है 'महार्थ' शुभकार, पूज्य 'महावार्चित' मंगलकार ॥1॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री भगवते, अहंते, महार्थाय, महावार्चिताय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री "भूतार्थ यज्ञ पुरुष" विशेष, कहे "भूतार्थ यज्ञ" आप जिनेश ।
 'भूतार्थ कृत पुरुष' आपका नाम, 'पूज्य' तव चरणों विशद प्रणाम ॥2॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूतार्थयज्ञपुरुषाय, भूतार्थयज्ञाय, भूतार्थकृतपुरुषाय, पूज्याय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'भद्रटारक' कहलाए, जिनराज 'तत्रभव' पूजे पद आज ।
 'अत्रभव' गए जगत महान्, 'महत्' जिन का करते यशगान ॥3॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री भद्रटारकाय, तत्रभवते, अत्रभवते, महते जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'महार्हय' नाम के धारी आप, 'तत्रायुष' नाशे सारे पाप ।
 'दीर्घायुष' है अति महिमावान्, 'अर्थवाची' है महति महान् ॥4॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री महार्हय, तत्रायुषे, दीर्घायुषे, अर्थवाचे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे 'सज्जन वल्लभ' भगवान्, लोक में 'परमाध्य' महान् ।
 'पंचकल्याण' सु पूज्य विशेष, 'दर्शविशुद्धयादिसुगुण' अशेष ॥5॥
 ॐ ह्रीं अर्हं श्री सज्जनवल्लभाय, परमाध्याय, पंचकल्याणकाय, दर्शविशुद्धिगुणोदयाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'सुरार्चित' आप हुए जिनदेव, 'सुखात्मन' गए आप सदैव ।
 'दिवौजस' रहा आपका नाम, 'सचीसेवितमातृ' शिवधाम ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुराच्चिताय, सुखदात्मने, दिवोजसे, शचीसेवितमातृकाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

आप हैं 'रत्नगर्भ' तीर्थेश, प्राप्ता है 'पूतगर्भ' जिन भेष ।

'गर्भोत्सव' सहित आप भगवान्, नित्योपचारोपचारित है नाम ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रत्नगर्भाय, पूतगर्भाय, गर्भोत्सवसहिताय, नित्योपचारोपचिताय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'पदम् प्रभ' आप हैं पदम् समान, 'निखिल' जिनवर है आभावान ।

'स्वयं स्वभाव' जगाए आप, 'सर्वोयजन्मने' का करते जाप ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मप्रभे, निष्कलाय, स्वयस्वभावाय, सर्वोयजन्मने जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'पुण्यांग' कहलाए जिनराज, पूजते 'भास्वत' पद हम आज ।

प्रभू हैं 'अद्भुत' देव प्रधान, 'विश्वज्ञातृसम्भृत' भगवान् ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्यांगाय, भास्वते, अद्भुतदेवाय, विश्वज्ञातृसम्भृते जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कहाए 'विश्वदेव' जिनराज, 'सृष्टि निर्वृत्त' पद पूजे आज ।

"सहस्राक्षद्वगुत्सव" है नाम, 'सर्व शक्ति' पर विशद प्रणाम ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वदेवाय, सृष्टिनिर्वृत्याय, सहस्राक्षद्वगुत्सवाय, सर्वशक्तये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'देवऐरावतसीन' जिनाय, 'हर्षाकुलामरखगपारणाविध्याय' ।

'विष्णु' है जग जीवों के मित्र, 'स्नानपीठैतादृसराज' पवित्र ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवैरावतासीनाय, हर्षाकुलामरखगचारणार्षिमतोत्सवाय, विष्णवे, स्नानपीठयिताद्विराजे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'तीर्थ सामान्य दुधाब्ध्ये' विशेष, 'स्नानाम्बूस्वावासवाय' तीर्थेश ।

'गन्ध पवित्र त्रिलोक' महान्, 'वत्र सूची' है गुण की खान ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तीर्थशंन्यदुधाब्ध्ये, स्नानाम्बूस्नातवासनाय, गन्धपवित्रित त्रिलोकाय, वज्रसूचये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शुचिश्रव’ है अति महिमावान, ‘कृतार्थकृतहस्त’ कहे गुणखान ।
कहे ‘शुक्रेष्ट’ लोक में श्रेष्ठ, ‘इन्द्रनृत्य तृप्तिकाय’ यथेष्ट ॥13॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री शुचिश्रवसे, कृतार्थकृतहस्ताय, शक्रेष्टाय, इन्द्रनृत्यन्तपितृकाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शचीविस्मापित’ है गुणवान, ‘शक्रारब्धानंदनृत्याय’ महान ।
नाम ‘रैदपूर्ण मनोरथ’ जान, ‘आज्ञार्थीन्द्र कृतसेवाय’ है मान ॥14॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री शचीविस्मापिताम्बराय, शक्रारब्धानन्दनृत्याय, रैदपूर्णमनोरथाय,
आज्ञार्थीन्द्रकृतासेवाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

‘देवश्रेष्ट’ कहलाए भगवान, ‘शिवौद्यम’ का करते गुणगान ।
‘जगत पूज्य शिवनाथ’ पाए नाम, ‘स्वयंभू’ के पद विशद प्रणाम ॥15॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री देवश्रेष्ठाय, शिवौद्यमाय, जगत्पूज्यशिवनाथाय, स्वयंभुवे जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

कहाए ‘कुबेर रचितस्थान’, ‘अनन्तश्रीजुष’ गाये भगवान ।
‘योगीश्वरार्चित’ हैं आप महान, ‘ब्रह्मविद्’ निज का करते ध्यान ॥16॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री कुबेररचितस्थानाय, अनन्तश्रीजुषे, योगीश्वरार्चिताय, ब्रह्मविदे
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

कहाए ‘ब्रह्मतत्त्व’ गुणवान, ‘यज्ञपति’ है अति महिमावान ।
कहाते हैं प्रभु ‘शिवनाथ’ प्रभु जी है ‘कृतकृत्य’ सनाथ ॥17॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री ब्रह्मतत्त्वाय, यज्ञपतये, शिवनाथाय, कृतकृत्याय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम है प्रभु जी का ‘यज्ञांग’ इके ‘अमृत’ जिनपद उत्तमांग ।
‘यज्ञ’ है तीर्थकर भगवान, ‘वस्तुत्पादक’ आप महान ॥18॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री यज्ञांगाय, अमृताय, यज्ञाय, वस्तुत्पादकाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

‘स्तुतिश्वर’ कहलाते हैं आप, ‘भाव’ कर करें भाव से जाप ।
‘महापति’ गाए महति महान, ‘महायज्ञ’ है सद्गुण की खान ॥19॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री स्तुतीश्वराय, भावाय, महापतये, महायज्ञाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अग्रयाजक’ जग के आराध्य, ‘जगत्पूज्य’ पाने वाले साध्य ।
‘दयापर’ करते दया विशाल, ‘पूज्यार्हाय’ है पूज्य त्रिकाल ॥20॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री अग्रयाजकाय, जगत्पूज्याय, दयायागाय, पूज्यार्हाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘जगदार्चित’ अर्चावान, ‘देवाधिदेव’ कहे आप भगवान ।
‘शक्रार्चित’ की अर्चा कर प्राप्त, ‘देवदेव’ भी बनते हैं आप्त ॥21॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री जगदच्छिताय, देवाधिदेव, शक्रार्चिताय, देवदेवाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जगदगुरु’ हैं इस जग के ईश, ‘देव संघाचार्य’ आप ऋशीष ।
‘पदमनंद’ गाए पदम समान, ‘जय ज्वज’ करते धर्म ध्यान ॥22॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री जगदगुरु, संहृतदेवसंघाचार्याय, पदमनन्दाय, जयधवजाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम ‘भामण्डल’ रहा विशेष, ‘चतुष्पाठीचामर’ तीर्थेश ।
‘देवदुन्दुभि’ कहलाए आप, ‘वाक्स्पष्ट’ हरे संताप ॥23॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री भामण्डलिने, चतुष्पाठीचामराय, देवदुन्दुभये, वाक्स्पष्टाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

कहाए ‘लब्धासन’ जिनदेव, ‘छत्रत्रय’ धारी आप सदैव ।
‘पुष्पवृष्टि’ हो जिनके पास, वृक्ष ‘दिव्याशोक’ होवे खास ॥24॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री लब्धासनाय, छत्रत्रयाय, पुष्पवृष्टये, दिव्याशोकाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु के आगे है ‘मानस्तम्भ’, ‘संगीतार्ह’ हरने वाले दंभ ।
‘अष्ट मंगल’ है महति महान, ‘तीर्थ चक्रवर्ती’ हैं गुणखान ॥25॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री मानस्तम्भाय, संगीतार्हाय, अष्टमंगलाय, तीर्थचक्रवर्तिने जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ।

॥ पूर्णर्ध्य ॥

(तामरस छन्द)

श्री ‘सुदर्शन’ नाथ नमस्ते, ‘कत्रे’ श्री जिन नाथ नमस्ते ।
 ‘तीर्थ भत्र’ तीर्थेश नमस्ते, ‘धर्म तीर्थेश’ विशेष नमस्ते ॥1॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री सुदर्शनाय, कर्त्र, तीर्थभत्र, धर्मतीर्थेशाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
 निर्वपामीति स्वाहा ।

‘धर्मतीर्थकराय’ नमस्ते, जिन ‘धर्मतीर्थयुताय’ नमस्ते ।
 ‘धर्मतीर्थकर’ देव नमस्ते, ‘तीर्थ प्रवर्तक’ एव नमस्ते ॥2॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री धर्मतीर्थकराय, धर्मतीर्थयुताय, धर्मतीर्थयुताय, तीर्थप्रवर्तकाय
 जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘तीर्थवेध’ जिनराज नमस्ते, ‘तीर्थविधायक’ ताज नमस्ते ।
 ‘सत्यतीर्थकराय’ नमस्ते, ‘तीर्थसेव्य’ जिनराज नमस्ते ॥3॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री तीर्थवेधसे, तीर्थविधायकाय, सत्यतीर्थकराय, तीर्थसेव्याय
 जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘तीर्थतारक’ गुणवान नमस्ते, ‘सत्यवाक्याधिप’ ध्यान नमस्ते ।
 ‘सत्यशासनाय’ नमस्ते, ‘अप्रतिशासन’ नाथ नमस्ते ॥4॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री तीर्थतारकाय, सत्यवाक्याधिपाय, सत्यशासनाय, अप्रतिशासनाय
 जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘स्याद्वादि’ विचार नमस्ते, ‘दिव्यधनि’ दातार नमस्ते ।
 ‘अव्याहतार्थ’ ऋशीष नमस्ते, ‘पुण्यवाक’ जगदीश नमस्ते ॥5॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री स्याद्वादिने, दिव्यधनये, अव्याहतार्थयि, पुण्यवाचे जिनेन्द्रभ्यो
 नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अर्थवाक्’ संयुक्त नमस्ते, ‘अर्द्धमागधी’ युक्त नमस्ते ।
 ‘इष्टवाक्’ उपदेश नमस्ते, ‘अनेकांतदर्शि’ नमस्ते ॥6॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री अर्थवाचे, अर्द्धमागधीयोक्तये, इष्टवाचे, अनेकांतदर्शिने जिनेन्द्रभ्यो
 नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘दुर्नयांतकाय’ नमस्ते, ‘एकांतध्वांतभिदेश’ नमस्ते ।
 ‘तत्त्ववाच’ विद्वेष नमस्ते, ‘पृथक्कृत’ जिनेश नमस्ते ॥7॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री दुर्नयांतकाय, एकांतध्वांतभिदे, तत्त्ववाचे, पृथक्कृते जिनेन्द्रभ्यो
 नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘स्यात्कारध्वज’ नमस्ते, ‘वाचे’ हैं शुभकार नमस्ते ।
 ‘अपौरुषेय’ कार नमस्ते, ‘अचलोष्टवाच’ जिनेश नमस्ते ॥8॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री स्यात्कारध्वजावाचे, अर्हवाचे, अपौरुषेयवाचे, अचलोष्टवाचे
 जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शाश्वत’ श्री जिन शुद्ध नमस्ते, जिनवर श्री ‘अविरुद्ध’ नमस्ते ।
 ‘सप्तभंगीवाचेन्द्र’ नमस्ते, ‘अवर्णगिरि’ जिन देव नमस्ते ॥9॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री शाश्वताय, अविरुद्धाय, सप्तभंगीवाचे, अवर्णगिरे, जिनेन्द्रभ्यो
 नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सप्तभाषामय’ देव नमस्ते, ‘व्यक्तगिरि’ जिन देव नमस्ते ।
 ‘अमोघवाच’ पद साथ नमस्ते, ‘अवाच्यानन्त’ दो साथ नमस्ते ॥10॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री सर्वभाषामयगिरे, व्यक्तगिरे, अमोघवाचे, अवाच्यानन्तवाचे जिनेन्द्रभ्यो
 नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री ‘अवाचे’ राज नमस्ते, ‘अद्वैतगिरे’ जिनराज नमस्ते ।
 ‘सुनृतगिरि’ अविकार नमस्ते, ‘सत्यानुभयगिरि’ सार नमस्ते ॥11॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री अवाचे, अद्वैतगिरे, सुनृतगिरे, सत्यानुभयगिरे जिनेन्द्रभ्यो नमः
 अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सुगिर’ नाथ पद माथ नमस्ते, ‘योजनव्यापगिरि’ नाथ नमस्ते ।
 ‘क्षीरगौरगिरि’ वान नमस्ते, तीर्थतत्त्वगिरि ज्ञान नमस्ते ॥12॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री सुगिरे, योजनाव्यापगिरे, क्षीरगौरगिरे, तीर्थतत्त्वगिरे जिनेन्द्रभ्यो
 नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘परमार्थ गवे’ जिननाथ नमस्ते, ‘भव्यैकश्रवणगिरि’ साथ नमस्ते ।
 ‘सदगव’ कहे विशेष नमस्ते, ‘चित्रगव’ कहे जिनेश नमस्ते ॥13॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री परार्थगवे, भव्यैकश्रवणगिरे, सदगवे, चित्रगवे जिनेन्द्रभ्यो नमः
 अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘परमार्थगवे’ देव नमस्ते, ‘प्रशान्तगवे’ जी सदैव नमस्ते ।
 ‘प्राश्निक गिरि’ पद आज नमस्ते, ‘याज्याश्रुते’ जिन ताज नमस्ते ॥14॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री परमार्थगवे, प्रशान्तगवे, प्राश्निकगिरे, याज्यश्रुतये जिनेन्द्रभ्यो नमः
 अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर 'सुश्रुत' पाद नमस्ते, 'महाश्रुतये' उत्पाद नमस्ते ।
'धर्मश्रुते' देवेश नमस्ते, 'श्रुतपतये' तीर्थेश नमस्ते ॥15॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री सुश्रुतये, महाश्रुतये, धर्मश्रुतये, श्रुतपतये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

'श्रुतधृत' धर जगदीश नमस्ते, 'ध्रुवश्रुत' धार ऋशीष नमस्ते ।
'निर्वाणमार्गोपदेश' नमस्ते, 'यतिश्रावकमार्गेश' नमस्ते ॥16॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री श्रुतद्वर्ते, ध्रुवश्रुतये, निर्वाणमार्गोपदेशकाय, यतिश्रावकमार्गदेशकाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'तत्त्वमार्गदृग' दोय नमस्ते, 'सारतत्त्व' यथार्थाय नमस्ते ।
'परमोत्तम तीर्थकृताय' नमस्ते, जिनवर श्री 'दृष्टाय' नमस्ते ॥17॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री तत्त्वमार्गदर्शे, सारस्वतपथाय, परमोत्तमतीर्थकृते, दृष्टे जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर 'वाग्मीश्वराय' नमस्ते, 'धर्मशासन' जिनराय नमस्ते ।
'धर्मदेशक' जिनराज नमस्ते, 'वागीश्वर' ऋषिराज नमस्ते ॥18॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री वाग्मीश्वराय, धर्मशासकाय, धर्मदेशकाय, वागीश्वराय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'त्रयीनाथ' जिनदेव नमस्ते, 'त्रिभंगीशाय' सदैव नमस्ते ।
'गिरांपतये' जिनराज नमस्ते, 'सिद्धांगम' पद आज नमस्ते ॥19॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री त्रयीनाथाय, त्रिभंगीशाय, गिरांपतये, सिद्धाङ्गाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'सिद्धवांगमय' चंद नमस्ते, श्री 'सिद्धाय' अमन्द नमस्ते ।
'सिद्धशासन' सिद्धान्त नमस्ते, 'जगतप्रसिद्धसिद्धान्त' नमस्ते ॥20॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री सिद्धवांगमयाय, सिद्धाय, सिद्धशासनाय, जगतप्रसिद्धसिद्धान्ताय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'सिद्धमंत्र' अविकार नमस्ते, 'सिद्धवाक' मनहार नमस्ते ।
'शुचिवाक' पवित्र नमस्ते, 'शुचिश्रवसे' है मित्र नमस्ते ॥21॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री सिद्धमंत्राय, सिद्धवाचे, शुचिवाचे, शुचिश्रवसे जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'निरुक्तोक्त' जिनपाद नमस्ते, 'तन्त्रकृते' है याद नमस्ते ।
'न्यायशास्त्रकृत' अत्र नमस्ते, 'महाज्येष्ठाय' सर्वत्र नमस्ते ॥22॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री निरुक्तोक्ताय, तन्त्रकृते, न्यायशास्त्रकृते, महाज्येष्ठाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'महानन्दाय' महान नमस्ते, 'कवीन्द्राय' गुणवान नमस्ते ।
'महेष्टाय' शुभकार नमस्ते, 'महानंददात्रे' सार नमस्ते ॥23॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री महानन्दाय, कवीन्द्राय, महेष्टाय, महानंददात्रे जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'कवीश्वराय' कल्याण नमस्ते, 'दुन्दुभीश्वराय' महान नमस्ते ।
'त्रिभुवननाथ' जिनेश नमस्ते, 'महानाथ' तीर्थेश नमस्ते ॥24॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री कवीश्वराय, दुन्दुभीश्वराय, त्रिभुवननाथाय, महानाथाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'परदृष्टे' ॐकार नमस्ते, 'जगत्पतये' मनहार नमस्ते ।
'स्वामिन' आप विशेष नमस्ते, 'कत्रे' जिन तीर्थेश नमस्ते ॥25॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री परदृष्टे, जगत्पतये, स्वामिने, कत्रे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(पाइता छन्द)

हे चतुर्विधसंघाधिपतये नमस्ते, 'अद्वितीयविभवधर' यतये नमस्ते ।
'प्रभव' लोक जयकारी, 'अद्वितीयशक्तिधर' भारी ॥1॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री चतुर्विधसंघाधिपतये, अद्वितीयविभवधारकाय, प्रभवे, अद्वितीय
शक्तिधारकाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'अधीश्वर' हितकारी, 'आधीश' हे मंगलकारी ।
हे 'सर्वाधीश' निराले, 'अधीशित' जग के रखवाले ॥2॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री अधीश्वराय, अधीशाय, सर्वाधीशाय, अधीशिते जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'धर्मतीर्थ कत्र' शुभकारी, 'पद पूर्ण प्राप्त' मनहारी ।
'त्रैलोकाधिपति' ज्ञानी, 'ईश्वर' है जग कल्याणी ॥3॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री धर्मतीर्थकत्रे, पूर्णपदप्राप्ताय, त्रैलोकाधिपतये, ईश्वराय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'ईश' जगत कत्तारी, 'इन्द्राय' हे विस्मयकारी ।
‘त्रैलोकोत्तम’ जिनदेवा, ‘अधिभुव’ की करते सेवा ॥4॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री इनाय, इन्द्राय, त्रिलोकोत्तमाय, अधिभुवे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'माहेश्वर' जिनस्वामी, जिनेश्वर 'महेश' शिवगामी ।
जिन 'परमेश्वर' कहलाते, जग पूज्य 'महेश' कहाते ॥5॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री महेश्वराय, महेशाय, परमेश्वराय, महेश्वरे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

'अधिदेव' ज्ञान के धारी, 'महादेव' जगत हितकारी ।
हे 'देव' आपको ध्यायें, 'त्रिभुवनेश्वर' पूज रचाएँ ॥6॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री अधिदेवाय, महादेवाय, देवाय, त्रिभुवनेश्वराय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'विश्वेश्वर' अविकारी, 'विश्वभूतेश' मंगलकारी ।
हे 'विश्वेशाय' निराले, 'विश्वेश्वराय' जग में आले ॥7॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री विश्वेश्वराय, विश्वभूतेशाय, विश्वेशाय, विश्वनाथे जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'अधिराज' ज्ञान के धारी, 'लोकेश्वर' है अनगारी ।
हे 'लोकपति' शिवदायी, 'जिनलोकनाथ' हैं भाई ॥8॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री अधिराजे, लोकेश्वराय, लोकपतये, लोकनाथाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'जगपूज्य' आप कहलाए, 'त्रैलोक्यनाथ' शिव पाए ।
जिनवर 'लोकेश' कहाए, जिन 'जगन्नाथ' कहलाए ॥9॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री जगपूज्याय, त्रिलोकनाथाय, लोकेशाय, जगन्नाथाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'जगतप्रभु' मनहारी, जिनवर 'पवित्र' गुणधारी ।
कहलाए 'पराक्रम' स्वामी, जग में 'परत्र' जगनामी ॥10॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री जगत्प्रभवे, पवित्राय, पराक्रमाय, परतराय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

है 'जैत्र' महाव्रतधारी, 'जिष्णु' है संयमधारी ।
‘कर्त्ता’ है जग उपकारी, 'विस्मरणीय' विस्मयकारी ॥11॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री जेत्रे, जिष्णवे, कर्त्रे, अनीश्वराय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति
स्वाहा ।

हे 'प्रभाविष्णु' जिन स्वामी, जिन 'भारविष्णु' शिवकारी ।
जिनराज 'प्रभुष्णु' गाए, जिन ''स्वयंप्रभाय'' कहाए ॥12॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री प्रभविष्णवे, भ्राजिष्णवे, प्रभूष्णवे, स्वयंप्रभाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाए ''लोकजित'' भाई, जिन 'विश्वजिते' शिवदायी ।
'विश्वजेत्रे' आप कहाए, 'विश्वजिते' जिन मंगल गाए ॥13॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री लोकजिते, विश्वजिते, विश्वजेत्रे, विश्वजिते जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'विश्वजीत' नाम के धारी, 'जगजेता' जग उपकारी ।
'जगज्जिष्णु' आप कहाए, 'जगन्नेत्र' मोक्ष पद पाए ॥14॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री विश्वजित्वराय, जगज्जैत्राय, जगज्जिष्णवे, जगनेत्रे जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'जगज्जयी' जगत के जेता, 'अग्रण्य' है कर्म विजेता ।
हे 'दयामूर्ति' शिवकारी, 'दिव्यनेत्र' दिव्यताधारी ॥15॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री जगज्जयिने, अग्रण्ये, दयामूर्तये, दिव्यनेत्राय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनराज 'अधीश्वर' जानो, 'धर्मनायक' जिनको मानो ।
'ऋद्धीश' ऋद्धि के धारी, जग 'भूतनाथ' हितकारी ॥16॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री अधीश्वराय, धर्मनायकाय, ऋद्धीशाय, भूतनाथाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'भूतभर्त्र' जिन कहलाएँ, जिन 'जगत्पात्र' शिव पाएँ ।
जिन देव ''अतुल बल' धारी, जिनवर 'वृष' महिमाकारी ॥17॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री भूतभर्त्रे, जगत्पात्रे, अतुलबलाय, वृषाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाए 'परिग्रह त्यागी', 'मंत्रकृत्र' हैं जिन बड़भागी ।
'शुभ लक्षण' जिन प्रगटाएँ, जो 'लोकाध्यक्ष' कहाएँ ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परिग्रहत्यागिजिनाय, मंत्रकृत्रे, शुभलक्षणाय, लोकाध्यक्षाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'दुरोधष्ट' कर्म के जेता, 'भव बन्धू' कर्म विजेता ।
प्रभु 'निरस्त कर्म' कहलाए, 'परम ध्येय' जिनाय कहाए ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दुराधर्षय, भव्यबन्धवे, निरस्तकाय, परमध्येयजिनाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'जगत्तापहार' को ध्याएँ, 'मोहारि जिताय' कहाए ।
'त्रिजगत्परमेश्वर' स्वामी, 'विश्वासिन' अन्तर्यामी ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगतापहराय, मोहारिजियाय, त्रिजगत्परमेश्वराय, विश्वासिने
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'विश्वभूतेष' आप कहाए, जिन 'विभव' मोक्ष पद पाए ।
‘त्रिभुवनेश्वर’ मंगलकारी, 'त्रिजग दुर्लभ' मनहारी ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वभूतेशाय, विभवाय, त्रिभुवनेश्वराय, त्रिजगदुर्लभाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन 'अभ्युदय' युत जानो, 'त्रिजगमंगलोदय' मानो ।
'धर्मचक्रायुध' शिव पाए, 'सद्योजाताय' कहाए ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभ्युदयाय, त्रिजगमंगलोदयाय, धर्मचक्रायुधाय, सद्योजाताय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो 'त्रिलोकमंगल' गाए, जिन 'अवेदाय' कहलाए ।
जिन 'अप्रतिघात' निराले, 'अच्छेद्य' विघ्न सब टाले ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिलोकमंगलाय, अवेदाय, प्रतिघाताय, अछेद्याय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाए 'दृढ़ीयश स्वामी', 'अभयंकर' शिवपथ गामी ।
'महाभोग' नाम के धारी, 'निरौपम्य' कहे अविकारी ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृढ़ीयसे, अभयंकराय, महाभोगाय, निरौपम्याय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'धर्मसाम्राज्यनायक' भाई, 'निर्वेद प्रवृत्त' शिवदायी ।
'सम्पूर्णयोगी' शिव पाएँ, 'समारोहणतत्पर' को ध्याएँ ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मसाम्राज्यनायकाय, निर्वेदप्रवृत्ताय, सम्पूर्णयोगिने, समारोहणतत्पराय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(पहाड़ी छन्द)

जिन 'सहजसिद्ध' है रूपवान, 'सामायिक' धारी है महान ।
जो 'निष्प्रमाद' है कर्म हीन, 'अकृत' है निज में ध्यान लीन ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सहजसिद्धाय, सामायिकाय, निष्प्रमादाय, अकृताय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन 'परमभाव' धारी ऋशीष, जो 'प्रधान' जग जिनाधीश ।
कहलाए 'स्वभासपरभासनाय' जिन, 'प्राणायाम चरणाय' दाय ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमभावाय, प्रधानाय, स्वभासपरभासनाय, प्राणायामचरणाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन देव 'शुद्धप्रत्याहाराय' कहलाए, 'जितेन्द्रिय' श्री जिनाय ।
'धारणाधीश्वर' पाए सुनाम, 'धर्मध्यान निष्ठ' के पद प्रणाम ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुद्धप्रत्याहाराय, जितेन्द्रियाय, धारणाधीश्वराय, धर्मध्याननिष्ठाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन देव 'समाधिराज' जान, 'स्फुरित समरसीभाव' वान ।
है 'एकाकीभावनयरूप' धार, 'निर्गन्थ' कहाए निराकार ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री समाधिराजे, स्फुरितसमरसीभावाय, एकीभावनयरूपाय,
निर्गन्थनाथाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'योगीन्द्र' आप हो योगवान, 'ऋषि' ऋद्धिधारी हैं महान ।
साधू 'साधक' है गाये विशेष, 'यति' कहलाए पावन जिनेश ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री योगीन्द्राय, ऋषये, साधवे, यतये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'मुनि' नाम आपका है प्रधान, कहलाए 'महर्षि' जो महान ।
'साधुधौरेय' है श्रेष्ठनाम, 'यतीनाथ' के चरणों हैं प्रणाम ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनये, महर्षये, साधुधौरेयाय, यतिनाथाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

~~~~~  
है नाम ‘मुनिश्वर’ यथा नाम, ‘महामुनि’ कहलाए मुक्ति धाम ।  
‘महामौनी’ की महिमा महान, ‘महाध्यानी’ गाए ध्यान वान ॥7॥  
ॐ ह्रीं अर्ह श्री मुनीश्वराय, महामुनये, महामौनिने, महाध्यानिने जिनेन्द्रभ्यो नमः  
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘महाव्रती’ व्रतों को लिए धार, ‘महाक्षमा’ क्रोध पर करें वार ।  
‘महाशीतल’ गाए शीलवान, ‘महाशांत’ शांति के हैं निधान ॥8॥  
ॐ ह्रीं अर्ह श्री महाव्रतिने, महाक्षमाय, महाशीतलाय, महाशांताय जिनेन्द्रभ्यो नमः  
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाए ‘महोदय’ जग प्रधान, ‘निर्लेप’ कर्म से रहित ज्ञान ।  
‘निर्भांत’ भ्रान्ति करके निवार, जिनवर ‘प्रशान्त’ आनन्दकार ॥9॥  
ॐ ह्रीं अर्ह श्री महादमाय, निर्लेपाय, निर्भ्रांताय, प्रशान्ताय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य  
निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘धर्माध्यक्ष’ जिनेश आप, ‘दयाध्वज’ हरते हैं सर्व पाप ।  
‘ब्रह्मयोनी’ की महिमा अपार, ‘स्वयंबुद्ध’ ज्ञान का पाए सार ॥10॥  
ॐ ह्रीं अर्ह श्री धर्माध्यक्षाय, दयाध्वजाय, ब्रह्मयोनये, स्वयंबुद्धाय जिनेन्द्रभ्यो  
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पूतात्म’ रहे जग में पवित्र, ‘स्नातक’ धारे हैं चरित्र ।  
है ‘अमदभाव’ पावन ऋशीष, ‘परमेश्वर’ के पद झुके शीश ॥12॥  
ॐ ह्रीं अर्ह श्री पूतात्मने, स्नातकाय, अदमभावाय, परमैश्वर्याय जिनेन्द्रभ्यो नमः  
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

हे महा ‘वीतमत्सर’ महान, कहलाए ‘धर्मवृष’ जग प्रधान ।  
‘अक्षोभ’ आपने क्षोभ नाश, ‘महाविधिखण्डी’ करते प्रकाश ॥12॥  
ॐ ह्रीं अर्ह श्री वीतमत्सराय, धर्मवृषाय, अक्षोभ्याय, महाविधिखण्डाय जिनेन्द्रभ्यो  
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अमृतोद्भव’ का हम करें ध्यान, ‘मंत्रमूर्ति’ ज्ञान के हैं निधान ।  
‘निर्वर्सौम्यभावी’ जिनेश, ‘स्वतन्त्र’ कहे जग में विशेष ॥13॥  
ॐ ह्रीं अर्ह श्री अमृतोद्भवाय, मंत्रमूर्तये, निर्वर्सौम्यभावाय, स्वतंत्राय जिनेन्द्रभ्यो  
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

~~~~~  
है नाम ‘ब्रह्मसम्भव’ महान, जो ‘सुप्रसन्न’ है ज्ञानवान ।
कहलाए ‘गुणाम्बुध’ जगत ईश, ‘पुण्यपापनिरोधन’ जिनाधीश ॥14॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री ब्रह्मसम्भवाय, सुप्रसन्नाय, गुणाम्बुधये, पुण्यपापनिरोधकाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘महागम्यसूक्ष्मरूपी’ विशाल, कहलाए ‘सुगप्तात्मन’ त्रिकाल ।
‘सिद्धात्मन’ है जग में प्रसिद्ध, ‘निरूपल्लव’ जिनवर कहे सिद्ध ॥15॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री महागम्यसूक्ष्मरूपाय, सुगुप्तात्मने, सिद्धात्मने, निरूपल्लवाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘महोदर्क’ आप महिमा महान, ‘महोपाय’ गुणों की रहे खान ।
है नाम ‘जगत्पितामह’ महान, जो ‘महाकारुणिक’ है ज्ञानवान ॥16॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री महोदर्काय, महोपायाय, जगदेकपितामहाय, महाकारुणिकाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जो ‘शुद्ध गुणों’ को किए प्राप्त, ‘महाकलेशनिवारण’ रहे आप्त ।
‘महाशुचि’ हैं निर्मल योगवान, कहलाए ‘अरुज’ गुण के निधान ॥17॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री शुद्धशुचाय, महाकलेशनिवारणाय, महाशुचये, अरुजे जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

तीर्थेश कहाए ‘सदायोग’, शुभ पाए हैं ‘सदाभोग’ ।
‘सदाधृति’ गाए हैं धैर्यवान, ‘परमौदासीन’ है गुण निधान ॥18॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री सदायोगाय, सदाभोगाय, सदाधृतये, परमौदासित्रे जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शास्वत’ गाये गुण के निकेत, ‘सत्यशासन’ है पावन अद्वेत ।
जिनराज ‘शांतिनायक’ महान, जो पाए ‘अपूर्वविद्या’ प्रधान ॥19॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री शास्वताय, सत्यासनाय, शांतिनायकाय, अपूर्वविद्याय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘योगज्ञायक’ जिनयोगधार, प्रभु ‘धर्ममूर्ति’ पावन अपार ।
जिन ‘धर्मदेह’ गुण के निधान, ‘ब्रह्मेश’ ब्रह्म का करे ध्यान ॥20॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री योगज्ञाय, धर्ममूर्तये, धर्मदेहाय, ब्रह्मेशाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

‘कृतकृत्य’ के हैं ना कोई काम, कहलाए ‘गुणात्मक’ मोक्षधाम। है ‘निवारणगुणसुप्रकाश’, ‘जिननिर्निषेष’ जग से उदास ॥२१॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतकृतये, गुणात्मकाय, निरावरणगुणप्रकाशाय, निर्निषेषाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाए ‘निराश्रव’ देव आप, ‘महाब्रह्मपति’ नाशे सर्वं पाप । जिनराज ‘सुनयतत्त्वज्ञावान्’, कहलाए ‘सूरिसूरज’ समान ॥२२॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निराश्रवाय, महाब्रह्मपतये सुनयतत्त्वज्ञाय, सूरये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है लोकपूज्य जिन ‘तत्त्वज्ञाय’, ‘महामित्र’ पूज्य जग में जिनाय। हैं ‘साम्यभावधारक जिनाय’, ‘प्रक्षीणबन्ध’ निज का नशाय ॥२३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तत्त्वज्ञाय, महामित्राय, साम्यभावधारकजिनाय, प्रक्षीणबन्धाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निर्द्वन्द्व’ द्वन्द्व से है विहीन, ‘स्नातक’ निज में रहे लीन । जिन हैं ‘अनंग’ सब अंगवान, ‘निर्वर्ण’ पाए शिव का निधान ॥२४॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्द्वन्द्वाय, स्नातकपरमर्षये, अनंगाय, निर्वर्णाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सागर’ के गुण का नहीं पार, ‘महासाधू’ संयम लिए धार । ‘विमलाभ’ आप है विमलदेव, ‘शुद्धात्म’ शुद्ध गाये सदैव ॥२५॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सागराय, महासाधवे, विमलाभाय, शुद्धात्मने जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सुखमा छन्द)

‘श्रीधर’ नाम आपने पाया, और ‘मरणभय’ निवारण गाया । ‘अमलभाव’ जिनवर कहलाए, प्रभु ‘उद्धरण’ देव कहाए ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीधराय, मरणभयनिवारणाय (दत्तनाथाय), अमलाभावाय, उद्धराय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अग्निदेव’ जिननाम के धारी, ‘संयम’ कहलाए त्रिपुरारी । ‘शिव’ को यह सारा जग ध्याए, ‘पुष्पांजलि’ कर शीश झुकाए ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्निदेवाय, संयमाय, शिवाय, पुष्पांजलये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शिवगुण’ पाते हैं जो प्राणी, ‘परमोत्साह’ सहित हो ज्ञानी । ‘ज्ञान’ आप है मंगलकारी, ‘परमेश्वर’ पावन अविकारी ॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवगुणाय, उत्साहजिनाय, ज्ञानाय, परमेश्वराय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘विमलेश’ विमल गुणधारी, प्रभु ‘यशोधर’ है यशकारी । ‘कृष्ण’ नाम को पाने वाले, ‘ज्ञानमति’ जिन रहे निराले ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलेशाय, यशोधराय, कृष्णाय, ज्ञानमतये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शुद्धमति’ की महिमा न्यारी, ‘भद्र’ कहे जग में अविकारी । श्री ‘शांतिजिन’ शांतिप्रदायी, ‘वृषभ’ देव है मंगलदायी ॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुद्धमतये, भद्राय, शांतिजिनाय, वृषभाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अजितनाथ’ कर्मों के जेता, ‘संभव’ जिनवर कर्म विजेता । ‘अभिनन्दन’ की महिमा गाते, ‘सुमतिनाथ’ पद शीश झुकाते ॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजिताय, संभवाय, अभिनन्दनाय, सुमतये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पदमप्रभ’ है अतिशयकारी, जिन ‘सुपाश्वर्व’ विस्मय के धारी । चन्द्र समान ‘चन्द्रप्रभ’ गाए, ‘पुष्पदन्त’ जी शिवपद पाए ॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पदमप्रभाय, सुपाश्वर्य, चन्द्रप्रभाय, पुष्पदन्ताय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शीतलजिन’ शीतल गुणधारी, जिन ‘श्रेयांस’ है श्रेयसकारी । ‘वासुपूज्य’ जगपूज्य कहाए, ‘विमलनाथ’ गुण अतिशय पाए ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शीतलनाथाय, श्रेयसे, वासुपूज्याय, विमलनाथाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जिनानन्त’ की महिमा गाते, ‘धर्मनाथ’ पद शीश झुकाते । ‘शांतिनाथ’ जिन शांति प्रदायी, ‘कुन्थुनाथ’ जिन महिमा दायी ॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तनाथाय, धर्मनाथाय, शांतिनाथाय, कुन्थुनाथाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अर’ जिनको सारा जग ध्याए, ‘मल्लिनाथ’ के यश को गाए।
‘मुनिसुव्रत जी’ व्रत के धारी, ‘श्री नमिजिन’ है अतिशयकारी॥10॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अरनाथाय, मल्लिनाथाय, मुनिसुव्रताय, नमिनाथाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘नेमिनाथ’ है परम विरागी, ‘पाश्वनाथ’ जिनगुण अनुरागी।
‘वर्द्धमान’ के गुण अतिशायी, ‘महावीर’ को ध्याए भाई॥11॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री नेमिनाथाय, पाश्वनाथाय, वर्द्धमानाय, महावीराय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम ‘सुवीर’ आपने पाया, ‘सन्मति’ ने दी अतिशय छाया।
‘महापदम्’ है पूज्य निराले, श्री ‘सुरदेव’ जगत में आले॥12॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सुवीराय, सन्मतये, महापदमाय, सूरदेवाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सुप्रभ’ नाम आपने पाया, ‘स्वयंप्रभ’ भी बतलाया।
‘सर्वायुध’ आयुध के त्यागी, ‘श्री जयदेव’ है परम विरागी॥13॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सुप्रभाय, स्वयंप्रभाय, सर्वायुधाय, जयदेवाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘प्रभादेव’ की प्रभा निराली, ‘श्री उदंक’ है महिमाशाली।
‘प्रश्नकीर्ति जी’ पावन गाए, ‘श्री जयदेव’ जगत को भाए॥14॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री प्रभादेवाय, उदङ्काय, प्रश्नकीर्तये, जयाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पूर्णबुद्ध’ है बुद्धी प्रदायी, ‘निजानंद’ संतुष्टी दायी।
‘विमलप्रभ’ की प्रभा निराली, ‘महाबल’ अतिबलशाली॥15॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री पूर्णबुद्धाय, निजानंदाय, विमलप्रभाय, महाबलाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निर्मल’ जिन निर्मल गुणधारी, ‘चित्रगुप्त’ है गुप्ती कारी।
‘समाधिगुप्त’ समाधी पाए, स्वयं ‘स्वयंभू’ आप कहाए॥16॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री निर्मलाय, चित्रगुप्ताय, समाधिगुप्तये, स्वयंभुवे जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘कं दर्प’ राग परिहारी, ‘विजयनाथ’ संयम के धारी।
श्री ‘विमलेश’ आप कहलाए, ‘दिव्यवाद’ को जग यह ध्याए॥17॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री कंदर्पय, जयनाथाय, विमलेशाय, दिव्यवादाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अनन्तवीर्य’ जिन वीर कहाए, ‘महापुरुष’ पुरुषार्थ दिखाए।
‘सुविधि’ मोक्ष सुविधि बताए, ‘प्रज्ञापरिमाण’ आप कहाए॥18॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अनन्तवीर्याय, पुरुदेवाय, सुविधये, प्रज्ञापरमिताय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अव्यय’ आप न व्यय को पाते, ‘पुराणपुरुष’ जग पूजे जाते।
‘धर्म सारथी’ शिव के गाए, ‘शिवकीर्ति’ यशकीर्ति जगाए॥19॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अव्ययाय, पुराणपुरुषाय, धर्मसारथये, शिवकीर्तिजिनाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘मोहान्धकार विनाशक’ स्वामी, ‘अतीन्द्रिय ज्ञानरूप’ जगनामी।
‘केवलज्ञान’ पाए जिन भाई, ‘विश्वभूत’ है पूत प्रदायी॥20॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री मोहान्धकारविनाशकजिनाय, अतीन्द्रियज्ञानरूपाय, केवलज्ञानजिनाय,
विश्वभुवे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘विश्वनायक’ है शिव के नेता, परम ‘दिग्म्बर’ कर्म विजेता।
नाम ‘निरन्तर’ जिनने पाया, ‘मिष्ट दिव्यध्वनि’ मन को भाया॥21॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री विश्वनायकाय, दिग्म्बराय, निरन्तरजिनाय, मिष्टदिव्यध्वनि
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे ‘भवान्तक’ पावन स्वामी, ‘दृढ़व्रत’ है जिन अन्तर्यामी।
‘नयात्तुंग’ की महिमा न्यारी, ‘निष्कलंक’ गाए अविकारी॥22॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री भवान्तकाय, दृढ़व्रताय, नयोतुङ्गाय, निष्कलङ्गाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पूर्ण कलाधर’ कला बताए, ‘सर्व कलेशहर’ पावन गाए।
‘धौत्यरूप’ गाए अविनाशी, ‘अक्षयानंत’ स्वभाव प्रकाशी॥23॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री पूर्णकलाधराय, सर्वकलेशापहाय, धौत्यरूपजिनाय,
अक्षयअनंतस्वभावात्मकजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘श्री वत्सलांछन’ पाए भाई, ‘आदिब्रह्म’ है ब्रह्म प्रदायी ।
कहे ‘चतुर्मुख’ केवलज्ञानी, ‘ब्रह्म’ आप है जगकल्याणी ॥24॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीवत्सलांछनाय, आदिब्रह्मणे, चतुर्मुखाय, ब्रह्मणे जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे ‘विधाता’ पावन ज्ञानी, ‘कमलाशन’ है शिव वरदानी ।
रहे ‘अजन्म’ जन्म के नाशी, विशद् ‘आत्मभू’ ज्ञान प्रकाशी ॥25॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विधात्रे, कमलासनाय, अजन्मने, आत्मभुवे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

(त्रोटक छंद)

तुम ‘लोकशिखरवासी’ जिन हो, ‘सुरज्येष्ठ’ सर्व अघ के बिन हो ।
कहलाए ‘प्रजापति’ कर्मजयी, जिन ‘हिरण्यगर्भ’ है कर्मक्षयी ॥1॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकाग्रवासिने, सूरज्येष्ठाय, प्रजापतये, हिरण्यगर्भाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर ‘वेदांग’ है वेदमयी, जिन ‘पूर्णज्ञान’ मय कर्मजयी ।
‘भवसिंधु पारंगत’ आप रहे, जिन ‘सत्यानंद’ विशेष कहे ॥2॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वेदांगाय, पूर्णज्ञानाय, भवसिंधुपास्याय, सत्यानंदाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अजयाय’ स्वयं को ध्यायक है, जिन ‘मनवांछितफलदायक’ है ।
प्रभु ‘जीवनमुक्त’ जिनाय महा, है ‘शतानंद’ जिन नाम अहा ॥3॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजयाय, मनवांछितफलदाय, जीवन्मुक्तजिनाय, शतानंदाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘विष्णु’ कहलाए आप अरे, ‘त्रिविक्रम’ का जग ध्यान करें ।
‘मोक्षमार्गप्रकाशकादित्यरूप’, ‘श्रीपति’ पाए निज का स्वरूप ॥4॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विष्णवे, त्रिविक्रमाय, मोक्षमार्गप्रकाशकादित्यरूपजिनाय, श्रीपतये
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पुरुषोत्तम’ उत्तम है जग में, ‘वैकुण्ठाधिपति’ शिवमग में ।
‘सर्वलोकश्रेयस्कर’ श्रेय धरे, ‘हृषीकेश’ विशद् जगकलेश हरे ॥5॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरुषोत्तमाय, वैकुण्ठाधिपतये, सर्वलोकश्रेयस्कर, हृषीकेशाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘हर’ दिनकर सम है तेजवंत, जिन पाए ‘स्वयंभू’ गुणानंत ।
‘विश्वम्भर’ जग के भरण हार, ‘असुरध्वंसी’ है तरण हार ॥6॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हरये, स्वयंभुवे, विश्वभराय, असुरध्वंसिने जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

‘माधव’ कहलाए तीर्थनाथ, ‘बलिबन्धन’ पद मम झुका माथ ।
है नाम ‘अधीक्षज’ गुणोपोत, ‘हितमितप्रियवचन’ प्रदाय केत ॥7॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री माधवाय, बलिबन्धनाय, अधीक्षजाय, हितमितप्रियवचन जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘के शव’ कहलाए जग प्रसिद्ध, ‘विष्टरश्रव’ के गुण रहे सिद्ध ।
‘श्रीवत्सवांछनाय’ आप नाम, ‘श्रीमति’ जिनके पद है प्रणाम ॥8॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री केशवाय, विष्टरश्रवसे, श्रीलांछनाय, श्रीमते जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अच्युत’ की महिमा है अपार, ‘नरकान्तकाय’ के गुण अपार ।
है विश्वविजेता ‘विश्वसेन’, है ‘चक्रपाणि’ की विशद् देन ॥9॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अच्युताय, नरकान्तकाय, विश्वसेनाय, चक्रपाणये जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है ‘पदमनाभ’ जग में महान, जिनराज ‘जनार्दन’ है प्रधान ।
श्री ‘कण्ठ’ आज जग में विशेष, ‘त्रैलोकाधिपशंकर’ जिनेश ॥10॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पदमनाभाय, जनार्दनाय, श्रीकण्ठाय, त्रैलोकाधिपशङ्कराय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनराज ‘स्वयंप्रभ’ ज्ञायक है, प्रभु ‘लोकपाल’ अघ क्षायक है ।
‘जिनवृषभकेत’ वृषदायक है, ‘मृत्युञ्जय’ जीवन लायक है ॥11॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभवे, लोकपालाय, वृषकेतवे, मृत्युञ्जयाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘विरुपाक्ष’ स्वरूप प्रकाश करे, ‘जिनकामदेव’ अघ नाश करे ।
जिनराज ‘त्रिलोचन’ ज्ञायक है, जिनराज ‘उमापति’ क्षायक है ॥12॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विरुपाक्षाय, कामदेवाय, त्रिलोचनाय, उमापतये जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पशुपति’ रक्षक.. ‘शम्बसरि’ आप पावन यति है।
‘त्रिपुरान्तक’ रिपुअन के अरि है, ‘अर्द्धनारीश्वर’ जग के हरि है॥13॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पशुपतये, शम्बसरये, त्रिपुरांतकाय, अर्द्धनारीश्वराय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘रुद्र’ कर्म संहारक है, ‘भावाय’ संयम के धारक है।
जिन ‘गर्भकल्याणक’ धारक हैं, ‘सदाशिव’ जगतारण तारक है॥14॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री रुद्राय, भवाय, गर्भकल्याणकजिनाय, सदाशिवाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है ‘जगत्कर्त्र’ शिवदाय सदा, ‘अन्धकारांतक’ न रह पाय कदा।
जिनदेव ‘अनादिनिधनाय’ रहे, सर्वकर्म शत्रुं ‘हराय’ कहे॥15॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगत्कर्त्रं, अन्धकारांतकाय, अनादिनिधनाय, हराय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘महासेन’ रहे गुण देन सही, ‘महागणपति’ दायक वृत्ति रही।
‘गणनायक’ ज्ञान प्रदाय वहां, जिन ‘महाविनायक’ देव जहाँ॥16॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महासेनाय, महागणपति, गणनाथाय, महाविनायकाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘विरोधविनाशक’ देव अहा, ‘विपद्विनाशक’ ज्ञान कहा।
है ‘द्वादशात्म’ जग ज्ञान पूर, जो है ‘विभाव’ से रहित शूर॥17॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विरोधविनाशकजिनाय, विपद्विनाशकजिनाय, द्वादशात्मने,
विभावरहिताय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘दुर्जय’ को जय ना कोई करें, जिन ‘वृहदभाव’ अघ पूर्ण हरे।
‘चित्रभान’ को भान नहीं, ‘अजरामर’ का न अंत कही॥18॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दुर्जयाय, वृहदभावाय, चित्रभानवे, अजरअमर जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘द्विजाराध्याय’ द्विज दायी, जिन ‘सुधाशोचि’ है शिवदायी।
‘औषधीशीषाय’ महायति हो, ‘कमलानिधि’ आप जगतपति हो॥19॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्विजाराध्याय, सुधाशोचिये, औषधीशाय, कमलानिधये जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘नक्षत्रनाथ’ जगतार कहे, ‘शुभ्रांशव’ शुभ कत्तार रहे।
है ‘सौम्यभावरत’ भावमयी, है ‘कुमुदबांधव’ कर्मजयी॥20॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नक्षत्रनाथाय, शुभ्रांशवे, सौम्यभावरताय, कुमुदबांधवाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाए ‘धर्मरत’ ज्ञान निधी, ‘आकुलता रहित’ जिनाय सुधी।
है ‘पुण्यजिनाय’ जगतपति हो, हो ‘पुण्यजिनेश्वर’ शुभ यति हो॥21॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मरतये, आकुलतारहितजिनाय, पुण्यजिनेश्वराय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘धर्मराज’ धर्माधि निधी, हे ‘भोगराज’ तजे भोगविधि।
‘जिनदर्शनज्ञानचारित्रमती’, ‘जिनभूतानन्द’ विशेष यती॥22॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मराजाय, भोगिराजाय, दर्शनज्ञानचारित्रात्मजिनाय, भूतानन्दाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘सिद्धिकान्त’ जय सिद्ध करे, ‘अक्षयानन्दाय’ प्रसिद्ध वरे।
‘वृहतांपत्ये’ व्रत धार रहे, जिन ‘अपूर्वदेवोपद्रष्ट’ आप कहे॥23॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धिकांतजिनाय, अक्षयानन्दाय, वृहतांपत्ये, अपूर्वदेवोपदेष्टयो
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘सिद्धसमूह’ रहे सब ही, जिन ‘शुद्धबुद्ध’ है पूज्य सही।
जिनराज ‘तपोभेदन’ यति ही, ‘धर्मार्ग सुदर्शक’ जिनपति ही॥24॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धसमूहेभ्यो, शुद्धबुद्धाय, तपोभेदिने, धर्मार्गदर्शक जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सर्वशास्त्र निर्णयिक’ संत महा, ‘पंचमगति’ पावे अनन्त अहा।
जिन ‘श्रेष्ठसुमतिदात्रि’ जिन जी, प्रभुं ‘सुगति’ प्राप्त करते तिन ही॥25॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वशास्त्रनिर्णयिकजिनाय, पंचमगतिजिनाय श्रेष्ठसुमतिदातृजिनाय,
सुगताय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

‘श्रेष्ठककल्याण कारक’ जिनं, ‘परमेश्वरि सम्पन्न’।
‘परमब्रह्म’ है लोक में, ‘कर्मारिजित’ धन्य॥1॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेष्ठककल्याणकारकजिनायक, परमेश्वर्यसंपन्नाय, परब्रह्मणे,
कर्मारिजिते जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्द्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सर्वशास्त्रज्ञ’ जिन लोक में, रहे ‘सुलक्षणवान’।

‘सर्वबोधसत्त्वाय’ जिन, ‘निर्विकल्प’ भगवान्॥२॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सर्वशास्त्रजिनाय, शुभलक्षणजिनाय, सर्वबोधसत्त्वाय, निर्विकल्पाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अद्वितीयबोध’ जिनवर परम, ‘लोकपाल’ हे देव।

‘आत्मरसरत’ है परम, ‘शांतीदाय’ सदैव॥३॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अद्वितीयबोधजिनाय, लोकपालाय, आत्मरसरतजिनाय, शांतिदात्रे
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अभेद्याच्छेद्य’ जिनेश है, ‘पंचस्कंधमयात्म’।

‘भूतार्थभावनासिद्ध’ जिन, ‘चतुरानन’ हे आत्म॥४॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अभेद्याच्छेद्यजिनाय, पंचस्कंधमयात्मदृशे, भूतार्थभावनासिद्धाय,
चतुराननजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सत्यवक्त्र’ जिन पर परम, कहे ‘निराश्रव’ आप।

‘चतुर्भूमिकशासन’ कहे, ‘अन्वय’ नाशे आप॥५॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सत्यवक्त्रे, निराश्रवाय, चतुर्भूमिकशासनाय, अन्वयाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे ‘समाधिनिमग्न’ जिन, ‘लोकपालतिलकेश’।

‘तुच्छभावभिद’ है विशद, ‘षड्द्रव्यदृश’ तीर्थेश॥६॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री समाधिनिमग्नजिनाय, लोकपालतिलकजिनाय, तुच्छभावभिदे,
षट्द्रव्यदृशे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सकलवस्तुविज्ञात्रे’ जिन, ‘षोडशपदार्थवादिन’।

‘पंचास्तिकायबोधक’ विशद, ‘ज्ञानाध्यक्ष’ प्रसिद्ध॥७॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सकलवस्तुविज्ञात्रे, षोडशपदार्थवादिने, पंचास्तिकायबोधकजिनाय,
ज्ञानाध्यक्षजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘समवायसार्थक’ जिन कहे, ‘भक्तसाधन’ धर्मेश।

‘निरवशेषगुणामृत’ परम, ‘सौख्यादिपक्षविध्वंश’॥८॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री समवायसार्थकजिनाय, भक्तैकसाधकधर्माय, निरवशेषगुणामृताय,
सौख्यादिपक्षविध्वंशकजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

परम ‘समीक्षक’ आप हो, ‘आदिपुरुष’ तीर्थेश भगवान्।

‘पंचविंशतितत्त्वेदकाय’, ‘व्यक्ताव्यक्ततक’ ज्ञान॥९॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री समीक्षकाय, आदिपुरुषायजिनाय, पंचविंशतितत्त्ववेत्रे,
व्यक्ताव्यक्तज्ञानविदे जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘ज्ञानचैत्यभेददृशे’, ‘स्वयंवेदनज्ञान’।

‘समवशरण द्वादश सभा’, पित जिन ‘त्रिप्रमाण॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री ज्ञानचैत्यभेददृशे, स्वसंवेदनज्ञानवादिने, समवशरणद्वादशसभापतये,
त्रिप्रमाणाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘अध्यक्ष प्रमाण’ हैं, ‘स्याद्वादवादि’ जिनेश।

‘क्षेत्रज्ञाय’ कहाए जिन, ‘शुद्धात्म’ जिन तीर्थेश॥११॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अक्षप्रमाणाय, स्याद्वादवादिने, क्षेत्रज्ञाय, शुद्धात्मजिनाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘पुरुषात्म’ जिनाय तुम, कहे ‘नराधिप’ आप।

‘निरावरणचेतन’ मयी, ‘मोक्षरूप’ हर ताप॥१२॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री पुरुषात्मजिनाय, नराधिपाय, निरावरणचेतनाय, मोक्षरूपजिनाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अकृत्रिम’ जिनवर परम, ‘निर्गुण’ गुण के ईश।

हैं ‘अमूर्त’ जिनदेव जी, ‘उमापती’ जगदीश॥१३॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अकृत्रिमजिनाय, निर्गुणाय, अमूर्ताय, उमापतये जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम ‘सर्वगत’ आपका, ‘अक्रिय’ हे भगवान्।

हे ‘देवेष्ट’ जिनाय जी, ‘तटस्थाय’ गुणवान्॥१४॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सर्वगताय, अक्रियाय, देवेष्टजिनाय, तटस्थाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जग में जिन ‘कूटस्थ’ है, ‘ज्ञात्रे’ कहे विशेष।

‘निराबाध’ बाधा रहित, ‘निराभाव’ तीर्थेश॥१५॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री कूटस्थाय, ज्ञात्रे, निराबाधाय, निराभावाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्थ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

‘भववारिधिपारक’ आप हो, ‘बंधमोक्षरहिताय’।
रहे ‘मोक्षसाधनप्रधान’, ‘कर्मव्याधिविनशाय’॥16॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री भववारिधिपारकराय, बंधमोक्षरहिताय, मोक्षसाधनप्रधानजिनाय,
कर्मव्याधिविनाशकजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निजस्वभावस्थित जिनम्’, ‘निरावरण सूर्यदेव’।
है ‘स्वरूप रुद्रजिन’ परम, ‘प्रकृतिप्रिय’ सदैव॥17॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री निजस्वभावस्थितजिनाय, निरावरणसूर्यजिनाय, स्वरूपारुद्रजिनाय,
प्रकृतिप्रियाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम ‘विशुद्ध सन्मति’ रहा, ‘शुद्धरूप’ जिनराज।
‘आद्यवेद’ कहाए जिन, ‘निर्विकृत’ शिव ताज॥18॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री विशुद्धसन्मति, शुद्धरूपजिनाय, आद्यवेदसे, निर्विकृतये जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘मिथ्यातिमिर विनाशि’, हे ‘मीमांसक’ भगवान।
आप ‘अस्तिसर्वज्ञ’ हो, हे ‘श्रुतपूज्य’ महान॥19॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री मिथ्यातिमिरविनाशकाय, मीमांसकाय, अस्तिसर्वज्ञाय, श्रुतपूज्याय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे ‘सदोत्सव’ लोक में, हे ‘परोक्षज्ञानगम्य’।
जिनवर ‘इष्टपाठक’ रहे, ‘सिद्धकर्मक्षय’ सम॥20॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सदोत्सवाय, परोक्षज्ञानगम्याय, इष्टपाठकाय, सिद्धकर्मक्षयाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘मिथ्यामतनिवारि’ जिन, ‘प्रत्यक्षैक प्रमाण’।
‘अस्तिमुक्त’ इस लोक में ‘गुरुश्रुत’ है भगवान॥21॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री चार्वाकादिमिथ्यामतनिवारकाय, प्रत्यक्षैकप्रमाणाय, अस्तिमुक्ताय,
गुरुश्रुतये जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

आप ‘त्रिलोकीनाथ’ हो, ‘स्वस्वभाव’ विरुद्ध।
कहे ‘ब्रह्मविद्’ लोक में, ‘शब्दाद्वैत’ विशुद्ध॥22॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री त्रिलोकनाथाय, स्वस्वभावविरुद्धजिनाय, ब्रह्मविदे, शब्दाद्वैतब्रह्मणे
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सूक्ष्मतत्त्वप्रकाशी’ परम, ‘पाखण्डखण्डक’ देव।
‘नयाधीन’ जिन केवली, अन्तःकृत जिनदेव॥23॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सूक्ष्मतत्त्वप्रकाशकजिनाय, पापण्डघ्नाय, नयौघयुजे, अन्तकृते
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम ‘पराकृत’ आपका, ‘तीरप्राप्त’ जग तेत्र।
‘परहितस्थित’ जिन परम, हे ‘रत्नत्रयनेत्र’॥24॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री पारकृते, तीरप्राप्ताय, परहितस्थिताय, रत्नत्रयनेत्रजिनाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शुद्धबुद्ध’ जिनवर परम, ‘ज्ञानकर्म समुच्चयाय’।
‘नित्यतृप्त’ जिनदेव जी, ‘पापमैल विनशाय’॥25॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री शुद्धबुद्धजिनाय, ज्ञानकर्मसमुच्चयिने, नित्यतृप्तजिनाय,
पापमलनिवारकजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(रेखता छंद)

‘निरावरण ज्ञानघन’ पाए, ‘उच्छिन्नयोगी’ प्रभू गाए।
‘योगकृतनिलेप’ कहलाए, ‘स्वस्थलयोगरत’ आए॥1॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री निरावरणज्ञानघनजिनाय, उच्छिन्नयोगाय, योगकिद्विनिलेपाय,
स्वस्थलयोगरतजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
‘गिरिसयोग’ जिन ध्याएँ, ‘सूक्ष्मीकृतवपुः’ क्रियाएँ।
‘सूक्ष्मवाक्मितयोगाय’, ‘निष्कर्मशुद्धात्मता’ पाय॥2॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री गिरिसंयोगजिनाय, सूक्ष्मीकृतवपुःक्रियाय, सूक्ष्मवाङ्मितयोगाय,
निष्कर्मशुद्धात्मजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘भूताभिव्यक्तचेतन’ हे, ‘धर्मरास’ जिन सचतेन हे।
‘परमहंसा’ कहलाए, ‘परमसंवराय’ जिन गाए॥3॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री भूताभिव्यक्तचेतनाय, धर्मरासजिनाय, परमहंसाय, परमसंवराय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निरावरण’ हे स्वामी, ‘परम निर्जराय’ जगनामी।
‘प्रज्वलितप्रभाव’ हे नामी, ‘सर्वकर्मक्षय’ जिन स्वामी॥4॥
ॐ ह्रीं अर्ह श्री निरावरणाय, परमनिर्जराय, प्रज्वलतप्रभाय, सर्वकर्मक्षयजिनाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘कर्मविस्फोटक’ अविकारी, ‘अनन्तवीर्य’ जिन है अनगारी।
 ‘एकाकारशास्वत’ जिन गाए, ‘विश्वाकार रसाकुलित’ पाए॥5॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री कर्मविस्फोटकाय, अनन्तवीर्यजिनाय, एकाकाररसास्वदाय, विश्वाकार रसाकुलाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सदाजीवित’ जिन स्वामी, ‘अमृताय’ आप शिवगामी।
 ‘जाग्रते’ देव जगनामी, ‘असुप्ताय’ मोक्षपथगामी॥6॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सदाजीविते, अमृताय, जाग्रते, असुप्ताय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘स्वप्रमाणस्थिताय’ गाए, ‘निराकुलित’ जिनायक कहलाए।
 ‘अयोगिने’ योग विनशाए, ‘चतुरशीतिलक्षण’ जिन गाए॥7॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री स्वप्रमाणस्थिताय, निराकुलितजिनाय, अयोगिने, चतुरशीतिलक्षणाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अगुणाय’ गुण विशद पाई, ‘अनन्तानन्तपर्यायी’।
 ‘पूर्वसंस्कारनाशक’ हे, ‘अनन्तचतुष्टय वृद्धिदायक’ हे॥8॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अगुणाय, अनन्तानन्तपर्यायाय, पूर्वसंस्कारनाशकाय, अनन्तचतुष्टयवृद्धाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘प्रियवचनाय’ जो गाए, जो ‘निरवचनीय’ कहलाए।
 ‘अनीशाय’ ईश हे नामी, ‘अनणपर्याय’ शिवगामी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री प्रियवचनाय, निर्वचनीयाय, अणीयसे, अनणुपर्यायाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘स्थेयसे’ को सभी ध्यायें, ‘प्रेष्ठाय’ पूज्यता पाएँ।
 ‘स्थिरजिन’ के सुगुण गाए, ‘निजात्मतत्त्वनिष्ठता’ पाए॥10॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री स्थेयसे, प्रेष्ठाय, स्थिरजिनाय, निजात्मतत्त्वनिष्ठाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘श्रेष्ठभवधर’ विभव धारी, ‘ज्येष्ठ’ हे पूज्य अनगारी।
 ‘निष्कंपप्रदेश’ जिन स्वामी, ‘उत्तमक्षमादिगुणाब्धि’ जिनामी॥11॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री श्रेष्ठभावधारकजिनाय, ज्येष्ठाय, निष्कंपप्रदेशजिनाय, उत्तमक्षमादिगुणाब्धिजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पूज्यपाद’ पूज्यताधारी, ‘परमार्थगुणनिधि’ अविकारी।
 ‘व्यवहारसुप्ताय’ हे स्वामी, ‘अति जागरुक’ शिवगामी॥12॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री पूज्यपादजिनाय, परमार्थगुणनिधानाय, व्यवहारसुषुप्ताय, अतिजागरुकाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अति सुस्थिताय’ जो गाए, ‘उदितोदित माहात्म्य’ जो पाए।
 ‘तत्त्वज्ञानानुकूल’ जिन हे, ‘अकृत्रिमाय’ मूल श्री जिन हे॥13॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अतिसुस्थिताय, उदितोदितमाहात्म्याय, तत्त्वज्ञानानुकूलजिनाय, अकृत्रिमाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अमेयमहिम्न’ कहलाए, ‘अत्यन्त शुद्धाय’ जिन गाए।
 ‘सिद्ध स्वयंवर’ जी मन भाए, ‘सिद्धानुजाय’ सिद्ध शुभ पाए॥14॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अमेयमहिम्ने, अत्यन्तशुद्धाय, सिद्धस्वयंवराय, सिद्धानुजाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शिवपुरी पंथ’ को पाए, ‘अनन्तगुण समूह’ कहलाए।
 ‘परउपाधिनिग्रहकारक’ हे, ‘स्वयंसिद्ध’ विभव तारक हे॥15॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री शिवपुरीपांथाय, अनन्तगुणसमूहजिनाय, परउपाधिनिग्रहकारकजिनाय, स्वयंसिद्धाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘इन्द्रियागम्य’ जिन जानो, ‘पुष्ट’ पावन रहे मानो।
 ‘अष्टादश सहस्रशीलेश्वर’, ‘पुण्यसंकुलाय’ परमेश्वर॥16॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री इन्द्रियागम्यजिनाय, पुष्टाय, अष्टादशसहस्रशीलेश्वराय, पुण्यसंकुलाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘ब्रताग्रयुग्याय’ अविकारी, ‘परमशुक्लध्यान’ के धारी।
 ‘संसारसमुद्रतारक’ जिन गाए, ‘क्षेपिष्ठाय’ आप कहलाए॥17॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री ब्रताग्रयुग्याय, परमशुक्लध्यानिने, संसारसमुद्रतारकजिनाय, क्षेपिष्ठाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पञ्चलध्वक्षर’ स्थिति हे, ‘त्रयोदशप्रकृतिस्थिति’ नाशक हे।
 ‘त्रयोदशचारित्रपूरणायी’, ‘अच्छेद्यजिन’ मोक्षपददायी॥18॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री पञ्चलध्वक्षरस्थितये, त्रयोदशप्रकृतिस्थितिविनाशकजिनाय, त्रयोदशचारित्रपूरणाय, अच्छेद्यजिनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शिवदात्री’ सु जिन भाई, ‘अजय जिनराज’ शिवदायी।
‘याज्याय’ आप शिवकारी, ‘अनर्घपरिग्रह’ के परिहारी॥19॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री शिवदातुजिनाय, अजयजिनाय, याज्याय, अनर्घपरिग्रहाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अनर्घ्यहेतू’ हे शिवकारी, ‘परमनिष्पृह’ के जो धारी।
‘अत्यन्तनिमोह’ अविकारी, ‘अशिष्याय’ आप अनगारी॥20॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अनर्घहेतवे, परमनिष्पृहाय, अत्यन्तनिमोहाय, अशिष्याय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘परम संबंध’ के नामीश, ‘अदीक्षा’ प्राप्त शिव वासी।
‘त्रिभुवन पूज्य’ उपकारी, ‘अदीक्षकाय’ ज्ञान के धारी॥21॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री परसंबंधरहिताय, अदीक्षाय, त्रिभुवनपूज्याय, अदीक्षकाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अक्षयाय’ आप अनगारी, ‘अगम्याय’ देव त्रिपुरारी।
‘अगमकाय’ मोक्ष पथगामी, ‘अरम्याय’ सिद्ध है नामी॥22॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अक्षयाय, अगम्याय, अगमकाय, अरम्याय जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निजात्म सुस्थिर’ हे उपकारी, ‘ज्ञाननिर्भर’ हे शिवकारी।
‘महायोगीश्वराय’ हे ज्ञानी, ‘द्रव्यशुद्धाय’ शिवगामी॥23॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अरमकाय, ज्ञाननिर्भराय, महायोगीश्वराय, द्रव्यशुद्धाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अदेहाय’ संत अविकारी, ‘अपुनर्भव’ ज्ञान के धारी।
‘ज्ञानैकविद्’ संत मनहारी, ‘जीवधन’ मोक्षदातारी॥24॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अदेहाय, अपुनर्भवाय, ज्ञानैकविदे, जीवधनाय जिनेन्द्रभ्यो नमः
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘परमसिद्धाय’ शिवगामी, ‘लोकाग्रस्थिताय’ जिननामी।
‘निर्द्वन्द्वाय’ अविकारी, ‘अनंतानंत’ गुणधारी॥25॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सिद्धपरमात्मने, लोकाग्रस्थिताय, निर्द्वन्द्वाय, अनंतानंतगुणाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘आत्मरूपाय’ हे स्वामी, ‘महाक्षमा’ मोक्ष पथगामी।
‘महाशील’ शीलधर गाए, ‘महाशांत’ शांति को पाए॥26॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री आत्मरूपाय, महाक्षमाय, महाशीलाय, महाशांताय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अनंतवीर्यात्म’ कहलाए, ‘लोकज्ञाय’ लोक में छाए।
‘निरावरणाय’ जिन गाए, ‘ध्येयगुण’ आप कहलाए॥27॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अनन्तवीर्यात्मकाय, लोकालोकज्ञाय, निर्वाणाय, ध्येयगुणाय
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अशनदग्धाय’ शिव पाए, ‘त्रिलोकमणि’ मोक्ष दर्शाए।
‘अनन्तगुण’ आपके गो, प्रभु ‘परमात्म’ कहलाए॥28॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अशनदग्धाय, त्रिलोकमणये, अनन्तगुणप्राप्ताय, परमात्मने
जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘महात्रषि’ ऋद्धियां पाए, ‘अनन्तसिद्धेभ्य’ शिव ध्याए।
‘अक्षोभ्याय’ क्षोभ विनशाए, ‘स्वयंबुद्धाय’ शिव पाए॥29॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री महर्षये, अनन्तसिद्धेभ्यो, अक्षोभाय, स्वयंबुद्धाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निरावरण’ ज्ञान के धारी, ‘वीतमत्सराय’ अविकारी।
‘अनन्तानन्त ज्ञानी’ हे, ‘अनन्तानन्त दर्शी’ हे॥30॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री निरावरणज्ञानाय, वीतमत्सराय, अनन्तानन्तज्ञानाय,
अनन्तानन्तदर्शनाय, जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

‘लोकशिखरवासि’ जो गाए, ‘सुगुप्तात्मन’ जो कहलाए।
‘पूतात्मन’ शुभ जानो, ‘महोदय’ आपको मानो॥31॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री लोकशिखरवासिने, सुगुप्तात्मने, पूतात्मने, महोदयाय जिनेन्द्रभ्यो
नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- पूजा करके अब यहाँ, गाते हैं जयमाल।
निज परिणति को प्राप्त कर, होवे सहज निहाल॥

(रोला छंद)

जयवन्तों जिन सिद्ध, जगत् के जानन हारे ।
 जयवन्तों जिन सिद्ध, दोष रागादि निवारे ॥
 जयवन्तों जिन सिद्ध, मोहतम नाशन हारे ।
 जयवन्तों जिन सिद्ध, भवोदधि तारण हारे ॥1॥
 कल्याणक से भूमि जगत, की तीर्थ कहाई ।
 भाव विशुद्धी हेतु रही, सबको शिवदायी ।
 तव महिमा है भवि जीवों, को ज्ञान प्रदायी ।
 पर परिणति को त्याग, जगत में है शिवदायी ॥2॥
 भेदज्ञान की ज्योति जगी, गुण चिन्तन करके ।
 आत्म ज्ञान की कली खिली, निज चित में धरके ॥
 दिव्य ध्वनि से दिव्य तत्त्व, प्रभुवर दर्शाए ।
 सम्यक् सहज स्वरूप जगत को, आप दिखाए ॥3॥
 निर्मौही हो नाथ !, आपका मारग पाए ।
 बनो विशद आदर्श मुक्ती, का पथ अपनाए ॥
 राग-द्वेषमय वैभाविक, परिणतियाँ जावें ।
 पर से हो निर्मुक्त स्वपद, को प्रभु जी पावें ॥4॥

धत्ता छंद

जय-जय अविकारी, संयमधारी, हुए आप शिवपुर वासी ।
 भव भय परिहारी, रहे अनगारी, अष्टकर्म के हो नाशी ॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री सर्व सिद्धात्मने नमः जयमाला पूर्णचर्य निर्वपामीति स्वाहा ।
दोहा- अन्तर शत्रू हैं, विशद, इन्द्रिय विषय कषाय ।
 जीते संयम धारके, वह शिवपद को पाय ॥
 इत्याशीवदः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

समुच्चय जयमाला

दोहा- सिद्धों का दरबार शुभ, जग में रहा प्रसिद्ध ।
 रहे अनन्तानन्त जो, पूज्य रहे सब सिद्ध ॥
 (त्रोटक छंद)

हे मंगलमय हे लोकोत्तम, हे शरणभूत हे पुरुषोत्तम ।
 हे धीरवीर हे महावीर, अवबोध सिन्धु अतिशय गम्भीर ॥1॥
 जय वचन अगोचर तेजपुंज, हे स्वानुभूतिमय गुण निकुञ्ज ।
 हे प्रशममूर्ति अतिशांय रूप, प्रगटाए हैं जिन निज स्वरूप ॥2॥
 जय वचन अगोचर हे जिनेश, जय दिव्य रूप पावन महेश ।
 जय गुणानन्त से सर्व पूर्ण, जय ज्ञानमात्र परभाव शून्य ॥3॥
 जय वीत क्रोध जय वीतमान, जय माया लोभ से रहित काम ।
 जय वीत मोह जय वीत काम, निर्दोष परम प्रबुता ललाम ॥4॥
 जय दर्श ज्ञान सुख वीर्यवान, जय गुणानन्त महिमा महान ।
 जय धर्मतीर्थ दायक जिनेश, शिवसौख्य प्रदायक है विशेष ॥5॥
 प्रभु नाश किए यब पाप ताप, जग जीव करें सब आप जाप ।
 जिन धन्य अलौकिक गुणनिधान, भक्तों को करते निज समान ॥6॥
 उपसर्ग परीषह सहज जीत, अब प्राप्त करें हम परम मीत ।
 पुरुषार्थ जगाए हम स्वमेव, साम्राज्य मुक्ति पाएँ एव ॥7॥
 भव-भव का दुखमय भ्रमण नाश, सिद्धालय पर जा करें वास ।
 जब जीव प्राप्त कर तत्त्व ज्ञान, पावें रत्नत्रय निधि महान ॥8॥
 मैत्री प्रमोद कारुण्य भाव, माध्यस्थ धार पावें स्वभाव ।
 भक्ती वश जिन हित के निमित्त, पूजन विधान करके पवित्र ॥9॥

दोहा- भूल चूक सब क्षम्य हो, परिणति होय पवित्र ।
 दर्श ज्ञान निर्मल रहे, पावन होय चरित्र ॥
 ॐ ह्रीं अर्ह श्री सर्व सिद्धपरमेष्ठे नमः अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
दोहा- जिस विधि पाए परम गुरु, परम शांति अम्लान ।
 उस विधि से हे नाथ ! हम पाएँ पद निर्वाण ॥

इत्याशीवदः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आरती

तर्ज़ : भक्ति बेकरार हैं...

सिद्ध चक्र दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
पुण्य अवसर है आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है॥ टेक॥
ज्ञान दर्शनावरण आदि सब, प्रभु ने कर्म नशाए जी-2
लोकालोक प्रकाशित अनुपम, केवल ज्ञान जगाए जी-2.....
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध प्रभु अविकारी हैं-2
भव्यों को सौभाग्य प्रदायक, जग में मंगलकारी हैं-2.....
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सुख अनन्त के कोष कहे-2
नित्य निरंजन हैं अविकारी, पूर्ण रूप निर्दोष रहे-2.....
पर्व अठाई में मैना ने, सिद्धों का गुणगान किया-2
पूजा भक्ति अर्चा करके, यथा योग्य सम्मान किया-2.....
सिद्ध चक्र की पूजा करके, गंधोदक छिड़काया था-2
कोढ़ रोग से श्रीपाल ने, छुटकारा तब पाया था-2.....
जागे हैं सौभाग्य हमारे, हमको यह सौभाग्य मिला-2
देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, श्रद्धा का शुभ फूल खिला-2.....
सिद्धों के गुण गाने वाले, सिद्धों के गुण पाते हैं-2
कर्म नाशकर अपने सारे, 'विशद' सिद्ध हो जाते हैं-2.....

करने सिद्धों की भक्ति हम आये यहाँ, प्राप्त कीन्हें सुगुण आपने प्रभु महाँ।
तीन लोकों में हो प्रभु तारणतरण, हम झुकाते हैं माथा अतः तव चरण॥

प्रभु सिद्धों की भक्ति का मुझे उपहार मिल जाए।
श्रेष्ठ श्रद्धा के फूलों से मेरा जीवन ये खिल जाए॥
बुझा सद्ज्ञान का दीपक 'विशद' मेरा है सदियों से।
प्रभु विज्ञान का दीपक शुभम्, अब श्रेष्ठ जल जाए॥

प्रशस्ति

मध्य लोक के मध्य है, जम्बू द्वीप महान।
भरत क्षेत्र में श्रेष्ठतम्, भारत देश प्रधान॥
भरत क्षेत्र में श्रेष्ठ है, राजस्थान प्रदेश।
ज्ञानी ध्यानी धर्म प्रिय, रहते लोग विशेष॥
जिला भीलवाड़ा रहा, जिसमें शुभ स्थान।
है बिजौलिया श्रेष्ठतम्, तीरथ क्षेत्र महान॥
नगर बीच मंदिर बड़ा, जिसमें पारसनाथ।
उनके चरणों में विशद, झुका रहे हम माथ॥
सिद्धचक्र का श्रेष्ठतम्, जग में रहा विधान।
जिसके द्वारा सिद्ध का, किया शुभम् गुणगान॥
विक्रम संवत् बीस सौ, सड़सठ रहा महान।
पच्चीस सौ सैंतिस शुभ, कहा वीर निर्वाण॥
पौष कृष्ण द्वितीया तिथि, प्रातः दिन गुरुवार।
रचना पूरी यह हुई, पावन अपरम्पार॥
ज्ञानमति जी आर्यिका, संत लाल विद्वान।
स्वस्ति भूषण आर्यिका, के हैं पूर्व विधान॥
उन रचनाओं का विशद, लिया गया आधार।
शुभ भावों का यह मिला, हमको शुभ उपहार॥
लोक अनादि काल है, शब्द अनादि अनन्त।
शब्द भाव के योग से, बने जीव धीमंत॥
लघु धी से लघु शब्द में, किया विशद गुणगान।
विद्वत् ज्ञानी भूल को, यहाँ सुधारें आन॥

सिद्धचक्र चालीसा

दोहा- रत्नत्रय से शोभते, पश्च गुरु शिवधाम ।
करते पूजा अर्चना, करके विशद प्रणाम ॥
चालीसा जिन सिद्ध का, गाते हम शुभकार ।
वन्दन करते भाव से, पद में बारम्बार ॥

(चौपाई)

जय-जय परम सिद्ध शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी ॥1॥
सिद्ध सनातन शुभ कहलाए, अपने सारे कर्म न शाए ॥2॥
पुरुषाकार लोक है भाई, उस पर सिद्ध शिला बतलाई ॥3॥
ईशत् प्रागभार शुभ जानो, अष्टम पृथ्वी जिसको मानो ॥4॥
ज्ञान शरीरी जो कहलाए, प्रभु निकल परमात्म गाए ॥5॥
ज्योती पुञ्ज अरूपी जानो, ज्ञानादर्श स्वरूपी मानो ॥6॥
शुद्ध बुद्ध चैतन्य कहाए, चमत्कार चित् चेतन पाए ॥7॥
नित्य निरंजन गुण प्रगटाए, मुक्तिश्री के स्वामी गाए ॥8॥
ज्ञानावरणी कर्म न शाए, ज्ञान अनन्त प्रभू प्रगटाए ॥9॥
कर्म दर्शनावरणी नाशे, दर्श अनन्त प्रभू परकाशे ॥10॥
मोह कर्म को आप न शाया, गुण सम्यक्त्व श्रेष्ठ प्रगटाया ॥11॥
अन्तराय नाशे जिन स्वामी, बल अनन्त पाये शिवगामी ॥12॥
वेदनीय कर्मों के नाशी, अव्यावाध सुगुण की राशि ॥13॥
आयू कर्म न शाने वाले, अवगाहन गुण पाने वाले ॥14॥
नाम कर्म भी रह ना पाया, गुण सूक्ष्मत्व श्रेष्ठ प्रगटाया ॥15॥
गोत्र कर्म के नाशी जानो, अगुरुलघु गुण जिनका मानो ॥16॥
गुण सहस्र तुमने प्रगटाए, सहस्रनाम धारी कहलाए ॥17॥
पार नहीं महिमा का पावे, चाहे वृहस्पति भी आ जावे ॥18॥
इन्द्र नरेन्द्र सभी गुण गाते, फिर भी महिमा न कह पाते ॥19॥
भक्ति से हमने गुण गाया, पद में सादर शीश झुकाया ॥20॥

विशद भावना हमने भाई, प्राप्त हमें हो प्रभु प्रभुताई ॥21॥
सिद्ध प्रभू महिमा के धारी, जिन सर्वज्ञ कहे शुभकारी ॥22॥
महा मोहतम नाशन हारी, निर्विकल्प आनन्दाविकारी ॥23॥
कर्म त्रिविध से रहित कहाए, निजानन्द सुखकारी गाये ॥24॥
संशयादि सारे भ्रमहारी, जन्म-जरादिक रोग निवारी ॥25॥
युगपद सकल लोक के ज्ञाता, अनुपम विधि के श्रेष्ठ विधाता ॥26॥
निरावरण निर्मल अनगारी, निरूपाधि चेतन गुणधारी ॥27॥
दुर्निवार निर्द्वन्द्व स्वरूपी, निर आश्रय निरमय चिद्रूपी ॥28॥
सब विकल्प तज भेद स्वरूपी, निज अनुभूति मगन अनरूपी ॥29॥
अजर अमर अविकल अविनाशी, निराकार निज ज्ञान प्रकाशी ॥30॥
दोष अठारह रहित कहाए, ज्ञान शरीरी अविचल गाए ॥31॥
पावन वीतरागता धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ॥32॥
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय सब पाए, निज में सारे सुगुण समाए ॥33॥
गुण अनन्त के हैं जो स्वामी, आप कहाए अन्तर्यामी ॥34॥
सिद्ध सनातन तुम कहलाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥35॥
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए ॥36॥
पश्चम भाव आपने पाया, पश्चम गति में धाम बनाया ॥37॥
श्री के धारी आप कहाए, हो कृतकृत्य सत्य शिव पाए ॥38॥
कहलाए प्रभु त्रिभुवन नामी, भव्य जीव हैं तव अनुगामी ॥39॥
चरण आपके 'विशद' नमामी, ज्ञानी जन करते प्रणमामी ॥40॥

दोहा- विघ्न हरण मंगल करण, सदा रहो जयवंत ।
विघ्न रोग दुर्भाग्य का, होवे क्षण में अन्त ॥
चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ ।
वे कर्मों का नाशकर, बने श्री के नाथ ॥

जाप्य : ॐ हौं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिने नमः ।